बोरिस एल. पस्तरनाक

डाक्टर जिवागो



डा० जिवागो

बोरिस एल परत्तरनाक रूसी साहित्य के विख्यात लेखक है। डा० जिवागो उनकी बहुचर्चित विवादग्रस्त पुस्तक रही है। सन् 1958 में इस पुस्तक को नोबेल पुरस्कार भी प्रदान किया गया।
रूसी क्रांति की पृष्ठ भूमि के यथार्थ चित्रण के कारण रूसी शासन द्वारा इस पर कडी आलोचना की गयी, पर यह पुस्तक अपनी कलात्मकता और जीवन्त चित्रण के कारण विश्व प्रसिद्ध होती गयी।
संसार की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।
हिन्दी में इसका सम्पूर्ण प्रामाणिक और रोचक अनुवाद प्रकाशित है।



डा० जिवागो

'अगर कभी किसी भी तरह किसी भी स्थिति में और किसी भी कारण मैं उन्हें उनकी मेज पर पुस्तकों में तल्लीन देख सकूं तो मैं पृथ्वी के किसी भी कोने में क्यों न रहूं, नंगे पांव दौड़कर उन तक पहुंच जाऊंगी। मेरे रोयें-रोयें से उनके लिए पुकार निकलेगी। संसार की कोई भी वस्तु उन पर न्यौछावर करने के लिए तैयार हूं। यहां तक कि आपको भी, जिसके प्रेम में निश्छल आवेद है, स्वाभाविकता है और जो मेरा अपना एक अंग बना गया है, उसे भी उनके लिए छोड़ दूंगी...ओह ! माफ करना...पता नहीं, मैं क्या कह गयी...!' लारा उसकी छाती पर लुढ़क पड़ी और रोने लगी।

सिद्ध रूसी लेखक बोरिस एल. पस्तरनाक का विश्वप्रसिद्ध उपन्यास

बोरिस एल. पस्तरनाक

डाक्टर जिवागो



नोबल पुरस्कार प्राप्त

विश्व का बहुचर्चित उपन्यास

साधना पॉकेट बुक्स
दिल्ली-110007

हमारा गौरवशाली प्रकाशन

वासना का प्रतिशोध

मूल्य : 20/-

साधना पाकेट बुक्स, दिल्ली-110007

संस्करण : 1999

प्रकाशक : **साधना पॉकेट बुक्स**
39, यू० ए० बैंग्लो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007

फोन : 2516715, 2914161

मूल्य : 20/-

लेजर : **रावत कम्प्यूटर्स**, गांधी नगर, दिल्ली-110031

मुद्रक : **जी० आर० प्रिंटर्स**, गांधी नगर, दिल्ली-110031

डाक्टर जिवागो

कथानायक डाक्टर जिवागो तब महज यूरा थे। उनकी उम्र केवल दस वर्ष की थी। घोड़ों की टाप और हवा की सनसनाहट के साथ 'राम नाम सत्य' जैसा रूसी धार्मिक गान गाते हुए यूरा की मां के शव पर फूल-मालायें लादे वे लोग अन्त्येष्टि-स्थल पर पहुंचे थे। पादरी ने मंत्र पढ़कर लाश पर क्रास के आकार में मिट्टी फैलाकर मंत्रों के उच्चारण के साथ कफन को ढांप दिया। तब कीलें ठोंक दी गईं और खुदी हुई कब्र में लाश को रखकर चार फावड़ों से मिट्टी डालना शुरू हो गया। ऐसा महसूस हुआ जैसे बरसात की बूदों की आवाज हो रही है। क्षण भर में कब्र एक टीला-सा बन गई और उसके निकट जाकर खड़ा हो गया था यूरा।

शोक के कारण छोटी नाक वाले इस लड़के यूरा का चेहरा विकृत-सा हो गया था। उसने अपनी गर्दन सीधी कर ऊपर उठाई और अपने दोनों हाथों से मुंह ढंक फूट-फूटकर रोने लगा। हवा की नमी और आंसूओं ने मिलकर उसके हाथ को गीला कर दिया था। वह रोता ही रहता यदि उसका मामा उसे खींचकर श्मशान भूमि से बाहर न ले गया होता।

यूरा अपने मामा के साथ बाहर आ गया। वह रात उन्होंने पास के आश्रम में ही बिताई, जहां से श्मशन भूमि स्पष्ट दिखलाई पड़ती थी और दस साल का यूरा रह-रहकर सुबक उठता था।

सारी रात मामा यूरा को धर्मशास्त्र के उपदेश और दृष्टान्त देता रहा और यूरा अपनी मां के विषय में सोचता ही रहा।

जब तक उसकी मां जीवित थी, यूरा को मालूम नहीं था कि उसके पिता ने बहुत अर्से पहले ही उन्हें छोड़ दिया था।

वह साइबेरिया में वेश्यागमन और शराब के नशे में धुत्त पड़ा रहता था। यूरा को यह भी पता न था कि लाखों रुपये की जायदाद उसके पिता ने इन्हीं सब कामों में उड़ा दी थी।

उसे हमेशा यही कहा जाता था कि उसका पिता व्यवसाय के सिलसिले में पीटर्सवर्ग या किसी बड़े मेले में (विशेषकर इर्बिट) गया है।

उसकी मां बचपन से ही कमजोर थी। बाद में उसे दिक् हो गई। दक्षिणी फ्रांस अथवा उत्तरी इटली में वह इलाज करवाने के लिए प्रायः जाया करती थी। यूरा दो बार उसकी इन यात्राओं में उसके साथ था। अकसर उसे अपरिचित लोगों के पास छोड़ दिया जाता था। एक अजनबी से दूसरे अजनबी के पास रहने का वह आदी हो गया था। चिर रहस्य से आच्छादित इस तरह की असामान्य पृष्ठ-भूमि के कारण और हर रोज के परिवर्तनों से वह इतना अभ्यस्त हो गया था कि अपने पिता की अनुपस्थिति से उसे कोई आश्चर्य नहीं होता था।

बचपन के दिन याद आये, जब कई विभिन्न उपकरण उसके कल-नाम से पुकारे जाते थे। जिवागो फैक्टरियां थीं, जिवागो बैंक थे, जिवागो भवन थे, जिवागो टाई-पिन थीं—यहां तक कि एक विशेष प्रकार की केक का नाम भी 'जिवागो-बैन' विख्यात हो गया था।एक समय ऐसा भी था कि मास्को के किसी भी स्लेगाड़ी वाले को सिर्फ इतना ही कहते—'जिवागो के यहां' तो वह अपनी स्ले में बिठाकर इस दुनिया से परे की किसी और ही जादू भरी नगरी में आपको पहुंचा देता।

ठीक उसी तरह, जिस तरह आप उसे कहें—टिम्बकटू चलो। उस क्षेत्र में जाते ही बड़े-बड़े बाग गावों की शांति का सुखद आभास देते। फर-वृक्षों की बड़ी-बड़ी डालियों पर कौवे जब बैठते, तो हल्की-सी बर्फ जमीन पर बिखरने लगती। उनकी कांव-कांव, ईंधन की लकड़ियों के तोड़ने की आवाज की तरह सुनाई देती। दूर अंधकार में जब रोशनी चमकने लगती तो घरों के कुत्ते खुले मैदान में आ जाते थे।

अचानक सब कुछ विलीन हो गया। वह सब गरीब हो गये और फिर...मां की मृत्यु के दो साल बाद गर्मियों में एक दिन यूरा अपने मामा के

साथ सफर कर रहा था।

वे लोग डुप्ल्यांका जा रहे थे जहां यूरा को निकी से मिलने की आतुरता थी।निकी उससे दो साल बड़ा था और शायद उसकी भावनाओं का आदर भी करता था, क्योंकि जब वहां पहुंचकर यूरा ने उससे हाथ मिलाया तो उसके माथे के बाल मुंह पर आ गये और अपने अधछिपे चेहरे से हाथ मिलाते वक्त उसने यूरा का हाथ झटक दिया।

यूरा के मामा प्रसिद्ध लेखक थे और निकी हाथ मिलाकर कहीं छिप गया था। यूरा ढूंढ रहा था। मगर वह न घर में मिला न बगीचे में। वह बहुत बढ़िया जगह थी।

हर मिनट पर पीले रंग का पक्षी अपने सुरीले कंठ से तीन बार पुकारता और एक क्षण के लिए रुक जाता; ताकि उसकी मधुर, लचीली और स्पष्ट आवाज गांव के कण-कण में व्याप्त हो जाये।

गर्मी और स्थिर हवा के कारण फूलों की सुगन्ध अपने मूल स्थान डंठलों में अचंचल भाव से पड़ी थी।

यूरा को इन सबने एन्टिस और बोर्डिघेरा की याद दिला दी। वह इधर-उधर घूमता रहा। सारे बगीचे में से उसे अपनी मां की आवाज का भ्रम कानों के समीप सुनाई देने लगा। मधुमक्खियों की भिनभिनाहट में, चिड़ियों की संगीतमय चहचहाहट में भी मां का स्वर घुला था।लगा कि मानो मां उसे पुकार रही है, अपने पास बुला रही है। कभी इस ओर से पुकारने की आवाज आती, कभी उस ओर से। जैसे उसका जवाब सुनने के लिए व्याकुल हो, इस भ्रम से वह कांप-सा उठा।

नीचे से उलझी हुई और सिरे से लटकती हुई झाड़ियों को पार कर वह पानी की नाली की ओर बढ़ा। नीचे टूटी हुई शाखाओं के कचरे में सील भी थी और अंधेरा भी। यूरा अपने आपको अधिकाधिक हतोत्साहित महसूस करने लगा। उसे लगा कि जैसे वह रो देगा। वह घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

यूरा ने प्रार्थना की—'हे मेरे पवित्र प्रभु, हे देवदूतों, मुझे सत्य का साक्षी बनाकर मां से कह दो कि मैं बिल्कुल ठीक हूं। वह चिन्ता न करें। यदि

मृत्यु के बाद भी जीवन है तो हे प्रभु, उसे स्वर्ग में स्वीकार करना; जहां संतों का सुखद सत्संग सुलभ है। मेरी मां इतनी अच्छी थी कि वह पापात्मा हो ही नहीं सकती। उसे दयादान दो; और कृपया अब उसे किसी प्रकार का संताप मत दो। मां !' ऋषियों की तरह मार्मिक व्याकुलता के साथ जैसे उसने अपनी मां को धरती पर बुला लिया था। जब वह इस विचित्र कष्ट पूर्ण अवस्था को बर्दाश्त नहीं कर सका, तो मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।

अधिक देर तक अचेत नहीं रहा। जब उसे होश आया, उसने सुना कि उसके मामा उसे पुकार रहे हैं। वे उसे ऊपर से बुला रहे थे। प्रत्युत्तर देकर वह नाली से ऊपर चढ़ने लगा। अचानक उसे याद आया कि उसने अपने खोए हुए पिता के लिए तो भगवान से प्रार्थना की ही नहीं, जैसा कि उसकी मां ने उसे सिखाया था। थोड़ी देर की इस मूर्च्छा ने उसे हलका कर दिया था। होश में आने के बाद इस ताजगी को छोड़ना नहीं चाहता था। उसने सोचा—पिता के लिए यदि फिर कभी उसने प्रार्थना कर ली तो कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। वे थोड़ी देर रुक भी तो सकते हैं और फिर उसने कब याद किया है अपने पिता को...उसका पिता ! वह यात्र्द कर रहा था। उसके साथ वकील भी था; और एक लड़का मिशा भी था। तब यूरा के पिता ने मिशा के पिता को हटाकर पागल व्यक्तियों की तरह जैसे नहाने के तालाब में स्प्रिंगदार बोर्ड पर से कूदा जाता है, चलती गाड़ी से सिर के बल छलांग लगा दी थी।

गाड़ी रुक गई। काफी अर्से तक गाड़ी रुकी रही।

निश्चित रूप से कोई नहीं जानता कि क्यों इतना समय लग रहा है। कुछ लोगों का कहना था कि अचानक गाड़ी रोकने के कारण वायु-संचालित ब्रेक खराब हो गए हैं। कुछ लोगों का मत था कि चूंकि गाड़ी ऊंची चढ़ाई पर रुकी है, इसलिए इंजिन बिना अधिक जोर लगाये गाड़ी खींच नहीं सकता। तीसरा विचार था कि आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के वकील ने, जो उसके साथ ही था, आग्रह किया है कि समीपवर्ती थाने से अधिकारी बुला लिए जायें ताकि पंचनामा तैयार हो सके। सम्भवत इसीलिए ड्राइवर का साथी तार के खम्बे पर चढ़कर समाचार पहुंचाने की व्यवस्था कर रहा

था। निरीक्षण-ट्राली अधिकारियों को लिए हुए आ ही रही होगी।

डिब्बे के पेशाब घर से तेज दुर्गन्ध आ रही थी। गंदे तेल के धब्बों वाले कागज में लिपटे हुए तले हुए मुर्ग-शावकों की गंध भी वातावरण में फैल रही थी। कर्कश आवाज वाली और हवा के कारण धूल-धूसरित पीटर्सवर्ग की स्त्रियां कालिख और उबटन के संयोग से जिप्सियों के रूप में परिणित हो गई थीं। वे अपने चेहरे पर पाउडर पोतने में और अंगुलियों को रूमाल से पोंछने में इस तरह व्यस्त थीं कि मानो कहीं कुछ हुआ ही न हो। हावभाव से मटकती हुई जब वे अपने कंधे हिलाने की चेष्टा करती तो छोटा-सा डिब्बा उनसे मानो माफी मांगने लगता। वे गोर्डन के डिब्बे की ओर बढ़ी। मिशा को लगा कि उन स्त्रियों के सिकुड़े हुए होंठों में से मंद फुसफुसाहट आसपास के पौधों के बारे में चर्चा कर रही है कि हे भगवान, ये पौधे कितने नाजुक हैं। शायद ये पौधे सोच रहे होंगे कि उनकी सृष्टि विशेष रूप से की गई है। सच ये सब चतुर हैं। यह सब इनके प्रति बड़ी ज्यादती है।

आत्महत्या करने वाले व्यक्ति का शव नदी के किनारे घास पर पड़ा था। उसके माथे पर रक्त के काले दाग उभर आये थे। रक्त की जमी हुई धाराएं उसके सारे चेहरे पर फैली हुई थीं। रक्त सूखकर जम गया था। लगता था कि यह उस आदमी का खून नहीं है बल्कि भिन्न किस्म की कोई चीज है। जैसे मुलम्मे के टुकड़े अथवा मिट्टी की रेखाएं या नमबर्छ वृक्ष के पत्ते।

बहुत सारे सहानुभूति दर्शाने वाले लोगों का झुण्ड शव को घेरे हुए था। मृतक के पास, उद्विग्न और विचारशून्य दृष्टि से देखते हुए उसका वकील और हमसफर पालतू जानवर की तरह खड़ा था। वह पशमीने की कमीज पहने हुए था।

हट्टे-कट्टे बलिष्ठ देह वाले उस व्यक्ति का चेहरा अभिमान से भरपूर था।

वह गर्मी से मरा जा रहा था और अपने हैट से हवा करने में लगा था। हर सवाल का जवाब वह यही देता था कि एक शराबी से उम्मीद भी क्या

की जा सकती है। इस दुर्घटना से मिशा गम्भीर रूप से प्रभावित हुआ था। दुख और अफसोस के मारे एकबारगी वह चीख-सा उठा। मृतक व्यक्ति इस लम्बी यात्रा के दौरान में अनेक बार उसके पास उसके डिब्बे में आया था। वह घण्टों उसके पिता के साथ बातचीत करता रहा। वह कह रहा था कि शांति, अनुबोधन और चारित्रिक-शुद्धता की बातों से उसे बड़ा संतोष मिलता है।

उसने उसके पिता से कई महत्त्वपूर्ण बातों के बारे में अंतहीन सवाल पूछे थे। जैसे एक्सचेंज के बिल, समझौते की कार्यवाही, दिवालियेपन और षड्यंत्र सम्बन्धी कानून की मुख्य बातें। अंत में उसने कहा था—खैर, मैं कभी यह न जान सका कि कानून इतना दयापूर्ण हौर विस्तृत है। मेरे वकील की तो इस बारे में बहुत बुरी धारणाएं हैं। जब इस आदमी का बोलने का उत्साह समाप्त हो जाता, तब पहले दर्जे से उसका हमसफर वकील उसे ले़ने चला आता और एक तरह से जबर्दस्ती खींचकर उसे रेस्ट्रांकार में ले जाकर उसके लिए शराब की व्यवस्था कर देता।

यह जमसफर वही व्यक्ति था जो इस समय शव के पास लापरवाही के साथ खड़ा था; जैसे इस सारी दुर्घटना में उसे कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं लग रहा हो। यह बात सही थी कि उसके मुवक्किल का अथक संघर्ष कुल मिलाकर उसके लिए लाभदायक ही सिद्ध हुआ था। मिशा के पिता ने उसे बताया कि आत्महत्या करने वाला व्यक्ति सुप्रसिद्ध लक्ष्मीपति जिवागो था। स्वभाव उसका अच्छा था फिर भी था वह दुराचारी ही । उसका आधा दिमाग खराब हो चुका था।

मिशा के प्रति उसने अपना बहुत प्रेम जाहिर किया था। सम्भवतः इस प्रेम के माध्यम से वह किसी और के प्रति अपने मन का स्नेह व्यक्त कर रहा था।

बड़े स्टेशन के बुक-स्टालों पर जहां कहीं खिलौने अथवा बच्चों को पसन्द आने वाली चीजें मिलतीं; वह कूद पड़ता, खरीद लाता और मिशा को इन उपहारों से लाद देता। उसने बहुत ज्यादा शराब पी रखी थी। तीन महीनों से वह सो नहीं पाया था। वह शिकायत भरे लहजे में कहता, जब कभी वह संयम रखने की चेष्ट करता है तो उसे इतनी यंत्रणा भुगतनी

पड़ती, जिसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। अंतिम समय में वह तेजी के साथ उनके डिब्बे में आया, उसने मिशा के पिता का हाथ पकड़ लिया। वह उससे कुछ कहना चाहता था। लेकिन वह कह नहीं पाया। इसके बाद वह तेजी के साथ कारीडोर की ओर लपका और गाड़ी के नीचे कूद पड़ा। मृतक व्यक्ति की अंतिम भेंट यूराल्स के खनिज पदार्थों की छोटी-सी डिब्बी को खोलकर मिशा देखने बैठ गया।

अचानक एक हलचल-सी मच गयी। एक डाक्टर, दो पुलिस और एक मजिस्ट्रेट को लिये एक ट्राली समानान्तर पटरी पर दौड़ती हुई आकर रुक गई। वे लोग फुर्ती से कूद पड़े। साधारण रूप से औपचारिक प्रश्न पूछे गए और उनका जवाब लिख लिया गया। बालू में फिसलते-लुढ़कते पुलिस के सिपाहियों के साथ गार्ड ने मिलकर शव को खींच निकाला। एक ग्रामीण किसान स्त्री रो पड़ी। मुसाफिरों को अपने-अपने स्थान पर जाने का आदेश मिला। गार्ड ने सीटी बजाई और रेलगाड़ी चल पड़ी। यह एक संयोग रहा कि इनकी, मिशा और यूरा सदैव दोस्त रहे और यूरा को बाल्काल में ही दोनों आघात सहकर अपने मामा का संरक्षण ग्रहण करना पड़ा जो उन्हें स्वास्थ्य और जीव-विज्ञान पढ़ाकर डाक्टर बनाना चाहते थे। उस रोज निकी भी यूरा की तरह बेहद उदास था। वह अपनी सखी के साथ उद्यान के बीच स्थित जलाशय में से कमल के फूल तोड़ रहा था। अचानक उनका आपस में झगड़ा हो गया और वह ठीक उस वक्त जब यूरा उसे तलाश कर रहा था तो वह एकान्त में बैठा सोच रहा था कि यह नाद्या...छी: एक दिन इसे जरूर मजा चखाऊंगा। मैं इसे मार डालूंगा—ठीक अपने पिता की तरह।

उसका पिता एक आतंकवादी विद्रोही था।

उसे फांसी की सजा भी मिल चुकी थी मगर जार की आज्ञा से यह दंड स्थगित कर दिया गया था। अब वह जेल में कठिन सजा भुगत रहा था।

उसकी मां इरिस्टोव परिवार की ज्योर्जियन राजकुमारी थी। वह बिगड़ी हुई सुन्दर स्त्री थी। अभी भी वह युवा थी और किसी न किसी काम के उत्साह का सरदर्द पाले रहती थी। विद्रोह के कार्य में, अथवा विप्लववादी सिद्धातों की पुष्टि में, अथवा सुप्रसिद्ध अभिनेताओं के पीछे या दुखद रूप

से असफलता प्राप्त लोगों के उत्थान आदि के कार्यों में व्यस्त रहती। वह निकी को बहुत प्यार करती थी। इनोचेक और नोचंका आदि जैसे हजारों कठिन और अजीब उपनामों में वह उसे पुकारा करती थी।

एक बार वह उसे उसके ननिहाल के लोगों से मिलाने के लिए टिफलिस ले गयी थी। वहां के आंगन में छितरे हुए वृक्षों ने उसे खूब आकर्षित किया था। उस विशाल वृक्ष के पत्तों ने हाथी के कानों की तरह आंगन के दक्षिणी भाग को ढंक लिया था। निकी समझ नहीं पाया था कि दरअसल वह वृक्ष था अथवा दानव ? अपने पिता का नाम धारण करना निकी के लिए भयप्रद था। लोगों की राय थी कि वह अपनी मां के नाम का उपकरण धारण कर ले और नाम के इस परिवर्तन के लिए जार के पास दरख्वास्त कर दे। सकल संसार के प्रति क्रुद्ध निकी पलंग के नीचे छिपा हुआ चुपचाप पड़ा यही सब सोच रहा था कि आखिर लोगों को क्या अधिकार है कि उसके जीवन में दखलन्दाजी करें।

मगर वह अपने आपको यूरा से नहीं छिपा पाया। यूरा ने उसे ढूंढ लिया। उस वक्त का निकी का चेहरा यूरा कभी नहीं भूल पायेगा; कभी नहीं।

जीवन के पके वर्षों में पहुंचकर वह जिस अन्य चेहरे को नहीं भूल पाया—वह चेहरा था लारा का।

2

लारा ! मां कहती थी उसे लारिसा। लारा की मां बेल्जियम के एक इंजीनियर की पत्नी थी; जिसने रूसी नागरिकता प्राप्त कर ली थी और इस इंजीनियर की पत्नी अर्थात् लारा अयालिया गुरूकार यूराल से मास्को जा पहुंची थी। वह विधवा थी। उसने पति की सारी सम्पत्ति के शेयर खरीद लिये थे जो अधिक मंदी के कारण गड़बड़ा रहे थे और लारा की मां ने एक

सिलाई का कारखाना और एक रंगीले वकील कोमारोवस्की की दोस्ती प्राप्त कर ली थी।

स्वयं वे पैंतीस साल की महिला थीं और वे वकील के किसी भी मजाक का बुरा नहीं मानती थी। यहां तक कि लारा की तरफ उस वकील ने ऐसा खुलकर देखा था कि लारा सिटपिटा गई थी। श्रीमती लारा गरीबी से परेशान थी और अक्सर ही उनके क्षुब्ध मन पर नित्य मूर्खता के दौरे आते रहते। वह पुरुषों से बहुत डरती थीं, पुरुषों से ही क्यों, उनका स्वभाव ही बड़ा डरपोक और कायर था। इस हार्दिक-क्षोभ और भ्रम के कारण ही उन्हें किसी एक की बांहों के सहारे पर विश्वास नहीं हो पाता था और वे दूसरे व्यक्ति के आलिंगन के आश्वासन के लिए व्याकुल रहा करती थीं।

वे इस होटल के 23 नम्बर के कमरे में रहते थे। इनके पड़ोस के 24 नम्बर के कमरे में टिश्केविच नामक एक व्यक्ति रहता था। उसका स्वभाव काफी दयालु था। बाल उसके उड़ चुके थे, फिर भी वह नकली बालों की टोपी लगाये रहता। पसीना उसे बहुत आता था। किसी भी बात का जवाब देते समय उसकी मुद्रा वैसी हो जाया करती, जैसी प्रार्थना करते समय होती है। किसी बड़े संगीत-समारोह में जब भी वह शामिल होता, भावुकता के मारे वह सिर हिलाने लगता, आंखें मटकाता और अपने वाद्य-यंत्र बजाया करता।

अक्सर वह होटल से बाहर ही रहता। दिन का अधिकांश भाग का वह बोलशाह और कंजर्बेटोइर पर बिताता। एक अच्छे पड़ोसी के रूप में वे दोनों एक-दूसरे के प्रति सौहार्दपूर्ण थे। एक-दूसरे की मदद करते रहने के कारण वे घनिष्ठ भी काफी हो चुके थे। बच्चों की उपस्थिति में कोमारोवस्की के आ जाने पर श्रीमती गुइशर संकोच से घबड़ा उठती थी।

टिश्केविच अपने कमरे की चाबी उसके पास छोड़ जाया करता था ताकि उसका कमरा श्रीमती गुइशर के काम आ सके। थोड़े ही दिनों में वह उसके प्रति इतनी आश्वस्त हो गई कि रोकर जी हल्का करने के लिए और अपने संरक्षक से पिण्ड छुड़ाने की प्रार्थना करने के लिए वह उसके पास चली जाया करती थी। उनसे मिलने के लिए कोमारोवस्की अक्सर करता

था। कारखाने से श्रीमती गुइशर के रहने के स्थान की ओर जाते समय वह काम करने वाली मनचली औरतों के साथ अश्लील भद्दे मजाक करता जाता, कुछ स्त्रियां उनकी इन सारी हरकतों से शर्मिन्दा होकर, पर्दे की आड़ में छिप जाया करतीं।

उसके चले जाने के बाद कारखाने की स्त्रियां उसके मजाक का विश्लेषण करतीं—महाराजाधिराज आ रहे हैं। अमालिया की टीस ! बूढ़ी बकरी ! औरतों का हत्यारा ! आदि। उससे अधिक डरावना था उसका भयंकर कुत्ता। अपने कुत्ते जैक को वह अक्सर साथ ले आया करता था। जैक के जोरदार झटकों के मारे कोमारोवस्की एक तरह घिसटता रहता। इसी जैक ने बसंत ऋतु में एक दिन लारा के पैरों में दांत गड़ा दिये थे और उसके मोजे फाड़ डाले थे। नौकरानी ओल्या ने लारा के कान में धीरे से कहा—इस दुष्ट को मार डालना चाहिये।

'हां। कितना भयंकर है ? लेकिन तुम उसे किस तरह मार सकती हो ?'

'चुप रहो। शोर मत करो। मैं तरीका बताती हूं। तुम्हारी मां की मेज की दराज के ऊपर पत्थर के ईस्टरवाले अंडे पड़े हैं ?'

'हां हैं। वे संगमरमर पत्थर के बने हुए हैं।'

'नजदीक आकर सुनो, मैं उन्हीं के बारे में बात कह रही हूं। उन पत्थर के अंडों को सूअर की चर्बी से ढक दो और इस दुष्ट को खिला दो। वह खा जायेगा और इस तरह दम घुट जाने के कारण मर जायेगा और फिर—बस, वह मर जायेगा।'

लारा इस प्रस्ताव को सुनकर हंस पड़ी। वह सोचने लगी कि दरिद्र कामगार की लड़की में इतनी अक्ल कहां से आई ? दरिद्रता के कारण बच्चे समय से पहले ही प्रौढ़ हो जाया करते हैं—उसे मालूम था, फिर भी यह लड़की कितनी पवित्र और सरल है ?

लारा ने सोचा—ऐसा क्यों होता है ? जो कुछ मैं देखती हूं, उसे स्वीकार करने के लिए मेरा ही भाग्य बाध्य क्यों है ?

'वह मां का—है; मां उसकी—है ?' ये कितने बुरे शब्द हैं। मुझे इन्हें

जबान पर नहीं लाना चाहिये। वह मेरी ओर इस तरह से क्यों ताका करता है ? मैं तो उसकी लड़की के समान हूं।

घर के कामों में हाथ बंटाती और कारखाने के संदेश भुगताया करती थी। उसकी चाल में गंभीरता थी। उसकी भूरी आंख, सुगठित शरीर और मर्यादित भाव भंगिमा ठीक उसी के अनुरूप थी।

जुलाई के मध्य भाग के रविवार का दिन था। माथे के नीचे दोनों हाथ टिकाए लारा आलस्य से भरी लेटी हुई थी। रविवार के दिन ही अधिक देर तक सोया जा सकता है। कारखाने में कोई हलचल नहीं थी। सड़क की ओर खुलने वाली खिड़की में से ट्राम के पहियों की आवाज आ रही थी। यह आवाज उसे लोरी की तरह लगी। थोड़ी देर और सोने की लालसा के कारण उसे नींद आने लगी। ऊपर से नीचे तक उसने चद्दर तान ली। अर्द्ध-निन्द्रित अवस्था में उसने सोचा—थोड़ी देर मुझे और सो लेना चाहिये। और वह 'कीचमेकर-रो' के प्रकाशमान हिस्से की कल्पना में मंत्र-मुग्ध होकर खो-सी गयी। जहां इस समय गाड़ी बनाने वालों के ओसारों में साफ-सुथरी फर्श पर बहुत सारी गाड़ियां पड़ी होंगी। शीशे के कटे टुकड़ों की लालटेनें होंगी। जहां अमीरी जीवन है और हैं बीयर की भरी बातलें ! और सड़क के नीचे फेयनस्की की छावनी में विशाल सेना का प्रशिक्षण कार्य चल रहा था। आज्ञानुसार घेरे बनते। सिपाही उछल कर घोड़े की जीन पर चढ़ बैठते और घोड़े आगे बढ़ जाते, कुछ दुलकी चाल से, कुछ तेजी से और कुछ सरपट ! बाहर एक ओर बच्चे अपनी दाइयों के साथ खेल रहे होंगे। नर्से जम्हाइयां ले रही होंगी। पेट्रोव्का स्ट्रीट से कुछ आगे, लारा को याद आया 'हे प्रभु ! सुनो लारा, कितना बढ़िया इरादा है। वास्तव में मैं तुम्हें अपना फ्लैट दिखाना चाहता था। बस करीब ही है।'

उस दिन ओल्गा का नामकरण होने वाला था। कोचमेकर्स-रो में रहने वाले कोमारोवस्की के मित्र, उनके बच्चे इस अवसर पर नाचने और शराब की दावत में शरीक होने के लिए उपस्थित थे। मां को वहां आमन्त्रित किया गया था लेकिन वह जा नहीं सकती थी। उसकी तबीयत ठीक नहीं थी।

मां ने कहा था—लारा को ले जाओ। देखभाल के लिए तुम हमेशा मुझे

ही कहा करते हो। अच्छा, अब तुम ही यह काम करो और उसने उसकी देखभाल की ! क्या वह सिर्फ मजाक था ? जर्मनी का एक विशेष प्रकार का नृत्य हो रहा था। बहुत ही उन्मत्त कार्य-कलाप से भरा हुआ यह नृत्योत्सव ! सोचने का अवसर ही कहां था ? गोल-गोल घेरा बनाकर नाचते जाओ और उपन्यास में वर्णित अमर जीवन क्षण भर में तुम्हारे सामने से गुजर जाये। प्रत्यक्ष रूप से इन सबका ऐसा असर पड़ता मानो तुम पर घड़ों पानी गिर गया हो और तुम स्तब्ध खड़े रह गये हो अथवा मानो तुम्हें किसी ने नग्न देख लिया हो। अपने सयाने होने का असर देने के लिए ही तो किसी को इतने घनिष्ठ रूप से परिचित होने देते हो ! लारा ने सोचा भी न था कि वह इतना अच्छा नाचता है। उसके हाथ खूब सधे हुए थे। कमर में हाथ डालकर जब वह उसे अधर में पकड़ लेता तो उसके मन में कितना आत्मविश्वास था ! खैर, इस तरह वह अब किसी को चूमने नहीं देगी। उसने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि अपने होंठों पर किसी के होंठ इतनी देर तक जमे रहेंगे। खैर, इस सारी बकवास को जाने दो। अब फिर इन सारी बातों पर वह कभी विचार नहीं करेगी। लजाना, आंखें नीची कर लेना और कृत्रिम रूप से दूसरों को खुश करने के लिए हंसना उसे बंद कर देना चाहिये; अन्यथा इसका परिणाम दुखान्त होगा। एक कदम आगे ही गहरी खाई है। नाचना और उसके बारे में सोचना ही बुराई की जड़ है। अब वह स्पष्ट रूप से इन्कार कर देगी। टांग टूट जाने का बहाना किया जा सकता है अथवा कहा जा सकता है कि वह नाचना जानतीं ही नहीं।

सारे दिन व्याकुल भाव से घूमते रहने के बाद जब लारा घर पहुंची तो उसे होश आया कि क्या कुछ हो चुका है।

सब सो रहे थे। अचेतनावस्था में वह मां की श्रृंगार-टेबल के सामने धप् से बैठ गई। उसका गुलाबी चेहरा सफेद फक् पड़ गया था। सफेद फीते वाली फ्राक तथा बुर्का वह संध्या के समय कारखाने से मांग लाई थी मानो वह कोई बड़ी कीमती भड़कीली पोशाक हो। कांच में पड़ने वाले अपने प्रतिबिम्ब के सामने वह बैठी थी। लेकिन उसे दिखाई कुछ भी नहीं दे रहा

था।

थोड़ी देर बाद उसने अपना मुंह जुड़ी हुई बांहों पर टेक दिया। यदि मां यह सब सुन ले तो वह निश्चित रूप से उसे मार डालेगी। उसकी हत्या करने के बाद वह खुद आत्मघात कर लेगी। यह सब कैसे हो गया ? यह संभव किस तरह हुआ ? इस विषय पर उसे पहले सोचना चाहिये था। अब बहुत देर हो चुकी है। अब वह एक पतित स्त्री ! किसी फ्रांसिसी उपन्यास में से निकली हुई रमणी ! यद्यपि कल भी वह स्कूल जायेगी और अपनी सहपाठियों के साथ ही बैठेगी। लेकिन अपने समीप बैठी निर्दोष कन्याओं की तुलना में वह क्या होगी ? हे भगवान, हे प्रभु, यह सब हो कैसे गया।

यदि किसी दिन, बहुत वर्षों के बाद जब भी संभव होगा, वह सारी हकीकत अपनी सखी से कह देगी। तब वह उसे गले लगाकर फूट-फूटकर रो पड़ेगी। कितना मोहक घेरा है यह ! कोमारोवस्की का लारा के जीवन में यदि प्रवेश होता तो वह विद्रोह कर सकती थी और उससे सम्बन्ध तोड़ सकती थी। मगर यह सब इतना आसान नहीं था।

दरअसल मन ही मन वह इस बात से खुश थी कि एक सुन्दर व्यक्ति जिसके बाल सफेद होने लगे हैं, जिसकी उम्र लगभग उसके पिता के समान है, जिसका हर सभा-संस्था में तालियों द्वारा सम्मान किया जाता है, जिसकी चर्चा समाचार-पत्रों में सदा बनी रहती है, वह उसके साथ उसके लिए समय और धन खर्च करता है। उसके लिए इतना व्यग्र है। वह उसे नाच-गाने की महफिलों में, थियेटरों में साथ ले जाया करता। वह उसे 'देवी' कहता है। आखिर वह स्कूली लड़की ही तो थी। गाड़ी चलाने वाले के ठीक पीछे गाड़ी के पिछले हस्से में, अथवा 'आपेरा' की बाक्स में, लोगों की नजरों के ठीक सामने कोमारोवस्की का पागलपन भरा शारीरिक प्रेम उसे दुस्साहस की चुनौती से आनन्दित कर दिया करता। बचपन भरी साहसप्रिय यह मनोवृत्ति अल्पजीवी थी। स्वयं के प्रति कलहपूर्ण टूटी हुई बोझिल आत्मा का भय उसके हृदय में जड़ जमा रहा था। पाठ याद करने की उसकी अथक संघर्षभरी चेष्टाएं और नींद रहित रातें, आंसू और न खत्म होने वाला सिरदर्द।

वह उससे घृणा करती थी। वह उसके जीवन में अभिशाप था। प्रतिदिन वह इन्हीं विचारों में खोई रहती। आह, वह जीवन भर के लिए उसकी गुलाम क्यों हो गई ? उसकी आवश्यकता के अनुसार अपने आपको समर्पित कर देने के लिए राजी हुई क्यों ? आज वह अपने आप से शर्माने लगी हैं। उस पर उसका क्या अधिकार है ? उसकी उम्र ! अथवा अपनी मां का उसके धन पर अवलम्बित होना ? क्या दरअसल इसी ने उसे प्रभावित कर रखा है, अथवा डरा रखा है ? नहीं, नहीं। हजार बार नहीं। यह सब बकवास है।

फिर धोखेबाज कमजोर व्यक्तियों द्वारा सुदृढ़ लोगों पर शासन किया ही जाता है। वह तर्क-कुतर्क करती। अपने आपसे पूछती—यदि वह शादी-शुदा होती तो क्या अंतर होता ? लेकिन इस प्रश्न के उत्तर में वह आशारहित व्यथा से भायाक्रान्त-सी हो उठती।

और गुप्त रूप से वह उसे ले जाता रहा, उन भयंकर रेस्तरां के एकांत कमरों में, जहां से गुजरते वक्त दूसरे ग्राहक आंखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर इस तरह देखते मानो वह नग्न खड़ी हो। कमरे में पहुंचकर वह अपने आपसे पूछती—यदि सचमुच मुझे वह प्यार करता है, तो इस तरह सबके सामने वह मुझे जलील करने की चेष्टा क्यों करता है ? एक बार स्वप्न में उसने देखा कि मानो वह जमीन में गड़ी हुई है। उसका दाहिना भाग और बांया पांव खुला पड़ा है। उसके दाहिने स्तन के ऊपर जैसे घास का गुच्छा उग आया हो और लोग गा रहे हों—'काली आंखें, धवल सफेद उरोज'—अथवा—'मत करो रे नदिया पार।'

3

पूरे देश की फिजा बिगड़ रही थी। आन्दोलन, हड़ताल, दमन और विद्रोह उसके परिवार का फ्लैट विद्रोह-क्षेत्र में ही था। उस मकान से थोड़ी

दूर स्ट्रीट में यातायात का मार्ग. अवरुद्ध क्षेत्र करने के लिए बाड़ बनाई जा रही थी। अपने-अपने घरों में लोग पानी की बालिटियां लिए इस दीवार को मजबूत बनाने में लगे हुए थे।

रेड-क्रास पोस्ट के आसपास का स्थान विद्रोहियों के एकत्रित होने के स्थान के रूप में काम में लाया जा रहा था। लारा उनमें से दो लड़कों को जानती थी। एक था निकी डुडरोव, उसका स्वभाव लारा के समान ही था। वह स्पष्टवादी, अल्पभाषी और स्वाभिमानी था। अपनी स्कूली-सहेली नाद्या के मित्र के रूप में वह उसे जानती थी। अपने स्वभाव से मिलते जुलते इस लड़के के प्रति उसकी काफी दिलचस्पी थी। दूसरा लड़का था पाशा आन्तिपोव। वह तिमिरजिना के पास रहता था और अब पढ़ने लिए हाई स्कूल में चला गया था। श्रीमती तिमिरजिना के यहां जब उसकी पहली मुलाकात पाशा आन्तियोव से हुई थी तो उस पर पड़ने वाले अपने प्रभाव को देखे बिना वह न रह सकी। शिशु की तरह इतना सरल था कि लारा को देखकर उसने अपनी प्रसन्नता छिपाने की कोशिश नहीं की। मानो वह कोई ऐसी सुन्दर दृश्यावली हो, जिसमें वृक्ष, घास और बादल चित्रित हो; छुट्टियों में जिसे देखकर लड़के बिना इस बात की परवाह किए कि कोई उसकी ओर देखकर हंस तो नहीं रहा है, आल्हादित हो उठते हैं; उसी तरह उसे देखकर पुलकित हो उठा था।

बहुत अर्से के बाद और सम्बन्धों के अगले भाग में सरल भाव के चरित्र वाले इस लड़के को गम्भीरतापूर्वक ठोक-पीटकर ठीक बनाने लायक वह पा सकी थी। इस समय तक पाशा यही जानता था कि वह सिर से पांव तक उसके प्यार में डूबा हुआ है। लारा के प्रति जीवन भर निभाने की बात उसने स्वीकार की थी। दोनों लड़के युद्ध का बहुत ही खतरनाक खेल खेल रहे थे। इस खास किस्म के खेल में वे लड़ाई का साधारण खतरा तो उठा ही रहे थे, इसके अतिरिक्त देश निष्कासन अथवा फांसी पाने का भय भी था। जिस प्रकार वे कनटोपी पहने हुए थे उसे देखकर यही लगता था कि अभी तक इन दूध पीते बच्चों को किसी देख-रेख करने वाले व्यक्ति की जरूरत है। लारा भी इसी रूप में उनके बारे में सोचती थी।

प्रत्येक वस्तु के प्रति उनकी जो निर्दोष बुद्धि थी, वही विकसित होकर इस समय इस खेल में संलग्न थी। घोड़ों की रूखी आवाज के साथ सन्ध्या काली दिखाई देने लगी थी। सड़क के पार के उस मकान में लड़के छिपकर पिस्तौल चला रहे थे।

लड़के पिस्तौल चला रहे हैं—लारा ने सोचा, मास्को में गोलियां चलाने वाले प्रत्येक लड़के के प्रति वह यही सोच रही थी—अच्छे, भले लड़के ! वे इसीलिए तो अच्छे हैं कि वे गोलियां चला रहे हैं। विद्रोह कर रहे हैं। सुरक्षा के लिए बनाई गई बाड़ को तोप से उड़ा दी जाने की खबर सुनने पर उन्हें मालूम हो गया कि उनके मकान खतरे में हैं। सुरक्षित परिचित मित्रों के घर जाकर शरण लेने की बात सोची नहीं जा सकती। काफी देर हो चुकी थी।

मास्को के किसी दूसरे भाग में जाना संभव ही नहीं था। सारा जिला घिरा हुआ था। उन्हें अपने नजदीक के पड़ोस में ही आश्रय ढूंढना होगा। आखिर मौटिंग्री जाने का निश्चय कर लिया गया। बहुत सारे लोग इसी तरह सोच रहे थे। होटल भरा हुआ था। संकट की स्थिति के कारण कपड़े के तम्बुओं में लोगों को ठहरने की व्यवस्था किसी तरह कर ली गई थी। थोड़ा-सा सामान लेकर लोग चल पड़े ताकि तलाशी लेते समय किसी को किसी प्रकार का संदेह न हो। सिलाई का कारखाना अपने नियमानुसार आम हड़ताल के बावजूद खुला था। एक दिन ठण्डी सुस्त दुपहरी में किसी ने आकर घंटी बजाई। आगन्तुक को बहुत कुछ कहना था। बहुत सारी शिकायतें थीं और उसके पास बहस करने लायक भी शायद बहुत कुछ था। मालिक के बदले फेटिसोवा के चले आने का नतीजा यह हुआ कि आग में तेल पड़ गया। थोड़ी देर के बाद सिलाई करने वाली तमाम औरतों को हाल में बुलाया गया और आगन्तुक से उनका परिचय करा दिया गया। आखिरकार फेटिसोवा के साथ कुछ निश्चय करके, सबके साथ उज्जड़ता से हाथ मिलाकर वह व्यक्ति चला गया।

काम करने वाली औरतें अपनी-अपनी जगह वापस चली गईं और अपने शाल तथा सर्दी के फटे कपड़े समेटने लगीं। तेजी से आते हुए मैडम

गुइशर ने बेचैनी से पूछा—'क्या हुआ ?'

'हम सबको वे लोग बाहर बुला रहे हैं। मैडम, हम हड़ताल पर हैं।'

मैडम गुइशर रो पड़ी—'लेकिन मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?'

'कृपया बुरा मत मानिये मैडम, हमें आपके प्रति कोई शिकायत नहीं है। सारी दुनिया यही कह रही है। सब लोग यही कर रहे हैं। आखिर सबके विरुद्ध तो जाया नहीं जा सकता न ?'

वह सब चले गये।

मैडम गुइशर सोच रही थीं—कितनी कृतघ्नता है। इन्हीं लड़कियों पर मैं दया-दुलार करती रही।

लारा ने अपनी मां को सान्त्वना देने और समझाने के लिहाज से कहा—ये सब आखिर हमारे लिए ही तो अपवाद नहीं बन सकते। आखिर सभी लोग जो कर रहे हैं, वही वे कर रहे हैं। उनमें से किसी के मन में हमारे विरुद्ध द्वेष-भावना नहीं है। यह सब जो कुछ हो रहा है, वह हो रहा है, हमारे भले के लिए। मानवता के कल्याण के लिए। कमजोरी की सुरक्षा के लिए, औरतों और बच्चों के लिए। हां सच, सिर मत हिलाओ, मां ! एक दिन तुम ही देखोगी कि इसी कारण हम सब इससे बेहतर हालत में हैं !

रोड्या स्कूल गया था और अभी तक लौटा नहीं था। लारा और उसकी मां चिन्ता में बैठी थीं।

प्रकाशहीन गलियां कमरों की ओर शून्य दृष्टि से ताक रही थीं और कमरे गलियों की ओर उदासीन भाव से देख रहे थे।

एक चौराहे पर उन्हें रोक दिया गया। तलाशी के वक्त सम्बन्धित व्यक्ति ने उनके शरीर के प्रत्येक भाग पर अशिष्टपूर्वक हाथ फेर दिया। वे आगे बढ़े। लारा यह सोचकर खुश थी कि जब तक शहर का सम्बन्ध जिले से टूटा हुआ है, कोमारोवस्की की नजर उस पर नहीं पड़ेगी और न वही उसे देख पायेगी।

उसकी मां ने तो ऐसी कठिन परिस्थितियां पैदा कर रखी हैं कि वह चाहते हुए भी कामोरोवस्की के साथ सम्बन्ध तोड़ नहीं सकती। न वह अपनी मां से यही स्पष्ट रूप से कह सकती है कि मां उसे यहां आने से

मना कर दो। इतना-सा कहने का अर्थ था, सारा भेद खुल जाये।

'यदि ऐसा भी हो जाये तो इसमें डरने की क्या बात है ? हे प्रभु कुछ भी हो जाये, कुछ भी हो, मगर यह सारी मानसिक यंत्रणा समाप्त हो जाये।'

'हे प्रभु ! हे भगवान ! वह हतोत्साहित होकर निढाल होकर अर्द्धमूर्छित अवस्था में गिर-सी पड़ती। अभी-अभी उसने कौन-सी बात याद की थी ?'

बन्दूक की आवाज से वह चौंकी। बोली—'वाह, वे जियें। जागें। प्रभु उन्हें शक्ति दो कि वे असलमी लोगों के लिए तेजी से गोलियां चलायें।

वह ऐसे चल रही थी जैसे भाग रही हो। उसकी मां कह रही थी—अरी, भाग कहां रही है। तू क्या समझती है, मैं तुझ जितना तेज चल लूंगी।

4

यूरा इसी होटल में एक दिन आ गया। उस दिन एक भयंकर घटना हुई। लारा की मां को 23 नम्बर कमरा मिला था। यूरा; अपने मित्र मिशा के साथ घूमता-फिरता आ गया था।

23 नम्बर के कमरे में होने वाली घटना होटल कर्मचारियों के प्रतिदिन की उतावली-भरी व्याकुलता में और अधिक उद्विग्नता पैदा कर रही थी।

दीवार पर डिब्बे की लम्बी कांच की चौखट के पीछे धड़ाके शब्द के साथ प्रत्येक मिनट पर अंक दिखाई देते। जिससे मालूम होता कि किस कमरे का कौन-सा ग्राहक व्यग्र हो रहा है। डाक्टर ने वृद्धा गुइशर को वमनकारक औषधि दी और उसकी अंतड़ियां साफ हो गईं। ग्लासा ने वहां की गंदगी साफ कर दी। सर्विस रूम में इस समय भी काफी हलचल मची हुई थी। तिरस्कार को डाक्टर तथा संगीतज्ञ महोदय को बुलाने के लिए

भेजा गया था।

कोमारोवस्की के आने से पहले ही 23 नम्बर के कमरे के आगे लोगों की भीड़ एकत्रित हो गई थी। यह सारी बात उस समय शुरू हुई थी जब तीसरे पहर में भण्डारघर से आगे तक जाने वाले संकरे मार्ग में सिशोय नामक नौकर हाथ में ट्रे लिए जा रहा था।

इसी समय वहां एक व्यक्ति का धक्का उसे लगा और वह अपनी ट्रे पर झुकता हुआ दुहरा हो गया। तश्तरी फर्श पर गिर पड़ी। सूप फैल गया। कुछ बर्तन टूट गये। सिशोय का कहना था कि तश्तरियां धोने वाला नौकर ही इसके लिए जिम्मेवार है और उसी से नुकसान वसूल करना चाहिये। इस समय लगभग 11 बज रहे थे लेकिन लोगों की भीड़ अभी भी वहां जमा थी।

'वह हमेशा कांपता रहता है। अपने हाथ-पांव ठीक से संभाल नहीं पाता। जब भी बोतल लेकर बैठता है, वह सब कुछ भूल जाता है; जैसे वह अपनी प्रेयसी के पास बैठा हो। फिर वह चीखता है कि उसे धक्का किसने दे दिया ? और किसने कांच के बर्तन तोड़ डाले ? बेशर्म, दुष्ट।'

—'मेट्रयोना स्टेपानोवना, मैं पहले तुम्हें सावधान कर चुका हूं कि तुम तमीज से बात करो।'

—'यह तो कोई बहुत ही असभ्य जंगली औरत है। अपने अभिमान में वह अपने घर की बिल्ली तक को ठीक से नहीं पहचान सकती। अच्छा ही हुआ कि इसने जहर ले लिया था।

मिशा और यूरा मैडम गुइशर के कमरे के बाहर के बरामदे में इधर-उधर घूम रहे थे। लड़के बीच के रास्ते में प्रतीक्षा कर रहे थे। नौकर ने उसके पास आकर कहा—महाशय, आप अंदर देवी जी के पास चले जाइये उनकी तबियत अब ठीक है। किसी तरह का कोई डर नहीं। आप यहां मत रहिये। आज दोपहर को इसी संकरे रास्ते पर चीनी के बर्तन टूट जाने की दुर्घटना हो चुकी है। आप तो देख ही रहे हैं, रास्ता छोटा है और सामान के लिए नौकरों को इधर-उधर दौड़ना पड़ता है। लड़कों ने नौकर का तात्पर्य समझ लिया। वे वहां से हट गये।

कमरे में जलती हुई मोमबत्ती अपने स्थान से हटकर शयनकक्ष के

अंदर लकड़ी के तख्तों पर रख दी गई थी। शयनकक्ष से खटमलों की बदबू आ रही थी। शायद उसे छिपाने के लिए ही एक मैला-सा पर्दा एक ओर लटका हुआ पड़ा था। किसी ने उसे गिराने की ओर ध्यान ही नहीं दिया। मैडम गुइशर ने संखिया नहीं खाया था, आयोडीन पी ली थी। आंसू और पसीने से तर अस्त-व्यस्त वस्त्रों में वह बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसके बाल चिपक गये थे ! वह रो रही थी। नौकरानी सफाई करने में व्यस्त थी।

दोनों लड़के वहां से तुरन्त हट गये। उस दृश्य की ओर देखना उन्हें बहुत ही लज्जानक और अशिष्टतापूर्ण लगा। यूरा अच्छी तरह जानता था कि बेढंगी और तनावपूर्ण परिस्थितियों में स्त्री उस रूप में नहीं रह जाती जिसे कि मूर्तियों में अंकित किया जाता है। अंत में किसी को उन तख्तों के पीछे लटकने वाले पर्दों को खींचने का ख्याल आया। टिस्केविच महाशय, तुम्हारे हाथ कहां हैं ? लाओ मुझे तुम्हारे हाथों में अपने हाथ रखने दो। मितली और आंसुओं से अवरुद्ध वह कह रही थी—'ओह, मैं कैसी भयानक स्थिति में थी, महाशय टिस्केविच, मैंने सोचा—अच्छा हुआ कि वह सब गलत सिद्ध हो गया—मेरी अस्त—व्यस्त चिन्ताएं—आह, बड़ी राहत मिली। मैं जीवित हूं—यह रही मैं !'

'मैडम गुइशर, अब शांत हो जाइए। यह सब कितना लज्जानक और भद्दा है।'

दीवार पर तस्वीरें टंगी हुई थीं। एक ओर किताबों का रैक था। मेज पर कागजों और फैशन-पत्रिकाओं के ढेर पड़े थे। गोल टेबल के उस ओर एक लड़की आराम कुर्सी पर सोई हुई थी। सम्भवत: वह इतनी थक गई थी कि इतने शोरगुल तथा उत्तेजना के बावजूद भी वह नींद रोक न सकी।

मिशा और यूरा किसी अन्य व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे इसीलिए घूमते घामते यहां आ गये थे। मगर जो व्यक्ति लारा के कमरे से निकला वह उनका प्रतिक्षित व्यक्ति नहीं था। वह था वकील। उसे देखकर मिशा के नथुने फूल गये थे। वह चीखकर बोला—'सुनो यूरा ! जानते हो वह व्यक्ति कौन है ?'

'कौन ?'

'अरे यही तो। इसी ने तुम्हारे पिता को शराब पीने पर विवश किया था और इसी ने...यही उनकी मौत का जिम्मेवार है। यह वही वकील है।'

'हूं।' —यूरा अभी सोच भी नहीं पाया था कि सके आश्रयदाता आ गये। नाम था इलेक्जेण्ड्रो। टोन्या के पिता और यूरा के चालक इन्हीं की पत्नी थी अन्ना।

5

एक बार सर्दी के शुरू में एलेक्जेण्डर एलेक्जेण्डरोविच ने अन्ना को एक पुराने फैशन की अलमारी ला दी। काली लकड़ी की बनी हुई यह अलमारी इतनी बड़ी थी कि घर के किसी दरवाजे से उसे अंदर लाना मुश्किल था। आखिर उसके अलग-अलग हिस्से किये गये। फिर समस्या यह उपस्थित हुई कि उसे रखा कहां जाय ? इसके उपयोग को देखते हुए उसे स्वागतकक्ष में रखा नहीं जा सकता। सोने के कमरे में रखने पर उसका विशाल आकार बाधा डालता। अन्त में सोने के एक कमरे के सामने उसके लिए जगह बनाई गई। अलमारी लाने वाला मार्केल उसे रखवाने में मदद कर रहा था। कुछ देर तक सारा काम ठीक-ठाक चलता रहा। अन्ना के सामने ही अलमारी जोड़ दी गयी। बस, ऊपरी छत जोड़नी बाकी थी। मार्केल की मदद के लिए अन्ना ने छत के नीचे अपना सिर लगा दिया।

वह अलमारी के अंदरूनी भाग में खड़ी थी। उसका पांव फिसल गया और वह अलमारी की एक दीवार के सहारे लड़खड़ाती हुई गिर पड़ी। छेद में बिठाई जाने वाली चूल पर ही ये दीवारें आधारित थीं। इनके चारों ओर लपेटी हुई रस्सी किसी काम नहीं आ सकी। धड़धड़ाकर अलमारी के तख्ते अन्ना को कुचलते हुए नीचे गिर पड़े। अन्ना कुचल-सी गयी। दरअसल अन्ना को यह अलमारी पसन्द नहीं आई। किसी बड़ी शाही समाधि की तरह

वह उसे नजर आई थी। बहम और डर के मारे वह व्याकुल हो उठी।

इस दुर्घटना के बाद ही वह फेफड़े की बीमारी की शिकार हो गयी। पूरा नवम्बर महीना अन्ना ने बिस्तर पर ही बिताया। उसका फेफड़ा सूज गया था। यूरा, मिशा गोर्डन एंव तोन्या आगामी बसन्त ऋतु तक ग्रेजुएट हो जाने वाले थे। यूरा डाक्टरी में, तोन्या कानून में और मिशा दर्शनशास्त्र में।

नवम्बर के अन्तिम दिनों में एक दिन यूरा शाम को घर देर से पहुंचा। उसने दिन भर कुछ भी नहीं खाया था। वह बुरी तरह थका हुआ था। आते ही उसे मालूम हुआ कि दोपहर के समय अन्ना को कड़ी चोट लगी है। वह दर्द से चीख रही है। बहुत सारे डाक्टर जमा हो गये थे और उन्होंने अन्ना का निरीक्षण परीक्षण करके एक बार तो एलेक्जेण्ड्रोविच को यहां तक कह दिया था कि अन्तिम कर्म-काण्डों के लिए पादरी को बुला लिया जाय। बाद में उनका यह मन्तव्य बदल गया। अत: पादरी को बुलाना नहीं पड़ा। अब उसकी तबियत ठीक थी। उसने यूरा को बुलाया था। आते ही वह उसके पास पहुंच गया। जो घटना घट चुकी थी, उससे सारा कमरा दुख से परिपूरित मालूम होता था। पास में पड़ी टेबल पर एक नर्स सामान संजो रही थी।

सेक के लिए जो ट्वाल्स और रूमाल काम में लाए गये थे, वे सिकुड़े और भीगे हुए पड़े थे। इलाज के समय काम में लाई गई रुई रक्तिम कफ के कीचड़ में पड़ी थी। अन्ना के होंठ सूख गए थे और वह पसीने से लथपथ थी। सुबह से ही उसका चेहरा विवर्ण हो रहा था। यूरा ने सोचा—रोग के लक्षण और उसके निदान में कोई गलती तो नहीं हो गई है ? स्थिति नाजुक दिखाई दे रही है। अभिवादन करके यह उसके समीप ही बैठ गया।

उसने नर्स को बाहर चले जाने का इशारा किया। ऐसे अवसर पर जिस प्रकार उत्साहजनित बातचीत की जानी चाहिये—करने की चेष्टा करते हुए यूरा ने अन्ना की नब्ज देखी। स्टेथस्कोप ढूंढने के लिए उसने अपनी जेब टटोली। अन्ना ने सिर हिलाकर उसे मना कर दिया। मानो कह रही

हो—यह सब व्यर्थ है। यूरा उसका निषेध समझ गया। सम्भवत: वह कुछ और ही बात कहना चाहती थी। बोलने की अथक चेष्टा करने पर भी उससे बोला नहीं जा रहा था।

किसी तरह उसने रुक-रुककर कहा—'सभी कहते हैं कि यह मेरा अन्तिम दिन है—कहते हैं कि मैं मृत्यु से लौट आई हूं। मृत्युचक्र मेरे सिर पर घूम रहा है। किसी भी क्षण...।'

यूरा कुछ नहीं बोला। एक क्षण रुकने के पश्चात् अन्ना ने फिर कहना शुरू किया—'तुम समझदार हो, बुद्धिमान हो—यही तुम्हारी विशेषता है। तुम कुछ बोलो। कुछ कहो। मुझे इससे शांति मिलेगी।'

—'क्या कहूं ?' बेचैन-सा यूरा अपनी कुर्सी पर बैठा था। वह उठा। कमरे में चहल-कदमी करता रहा फिर वापस आकर कुर्सी पर बैठ गया।

बोला—'पहली बात तो यह है कि कल तुम अधिक स्वस्थता महसूस करने लगोगी। मुझे इसके लक्षण दिखाई दे रहे हैं। मैं झूठ नहीं बोलता। और चेतना की उपस्थिति—मृत्यु के मुख से वापस लौट आना—तुम इस बारे में मेरी राय जानना चाहती हो? एक वैज्ञानिक की राय ? फिर कभी बताऊंगा ? नहीं—अभी ही ? अच्छी बात है। जैसी तुम्हारी मर्जी। लेकिन यह तो तुम जानती ही हो कि सीधे-सादे शब्दों में इसकी मीमांसा नहीं हो सकती।'

इसके बाद वह योजनाहीन लम्बा भाषण दे बैठा।

'अब सो जाओ।' बिस्तर के समीप जाकर अन्ना के ललाट पर हाथ रखकर उसने कहा।

थोड़ी देर के बाद अन्ना को धीरे-धीरे नींद आने लगी। नर्स को अंदर भेज कर यूरा सोच रहा था—हे प्रभु, मैं नये किस्म का कौन-सा नीम-हकीम बनने जा रहा हूं ? जमाने की तरह...।

कुछ दिन बीते। अन्ना का स्वास्थ्य सुधरने लगा। दिसम्बर के मध्य भाग तक वह उठने बैठने लगी थी, यद्यपि कमजोरी अभी तक थी। डाक्टरों का कहना था कि उसे अभी कुछ दिनों तक और बिस्तर पर आराम करना चाहिये। अक्सर यूरा और टोन्या को बुलाकर वह यूराल्स में बिताये

गये बचपन से लगाकर अब तक की घटनाओं की चर्चा किया करती। अपने पिता की जागीर वेरीकिनो में पलकर ही यह बड़ी हुई थी। वेरीकिनो रेउवा नदी के किनारे बसा हुआ था।

यूरा अथवा टोन्या वहां कभी गये नहीं थे। मगर अन्ना की बातें सुनकर यूरा वहां की कल्पना आसानी से कर सकता था। वहां बारह हजार एकड़ तक उपजाऊ जमीन फैली हुई थी। अंधकारपूर्ण रात्रि की तरह काले जंगलों के साथ कूइगर की ओर चट्टानों के बीच से निकलने वाले प्रपात का स्वर उसे करीब से सुनाई दे सकता था। जीवन में पहली बार। अपने लिए विशेष तौर से बनवाये गये संध्याकालीन कपड़े यूरा और टोन्या ने पहने थे। यूरा की डिनर-जैकेट थी।

टोन्या की पोशाक में से सिर्फ उसकी गर्दन ही दिखाई दे रही थी। आगामी 22 ता० को परम्परानुगत रूप से आयोजित क्रिसमिस पार्टी में आज वे इस नई पोशाक को पहली बार धारण करने वाले थे।

दोनों उसे पहनकर खुश थे और उसे वापस खोलना नहीं चाहते थे। अन्ना ने नौकरानी के जरिये उन दोनों को बुलाया। कोहनी के बल पर बिस्तर से थोड़ी-सी उठकर, उन दोनों लाड़लों की ओर वह एकटक देखती रही।

मन ही मन प्रसन्न होती हुई अन्ना ने उन्हें पीछे की ओर घूम जाने को कहा।

बोली—'बहुत ही अच्छे लग रहे हो। अच्छा टोन्या बेटा, मुझे एक-एक बार फिर देख लेने दो। मुझे क्या मालूम कि ये कपड़े आज तैयार हो जायेंगे। मैं तो सोचती थी कि टांकों में थोड़ी सिकुड़न रह ही जायेगी। मालूम है, मैंने तुम्हें क्यों बुलाया है ? बताती हूं।'

नाम था—बच्चूस। अजीब नाम है न ? सचमुच दलदल में फंसा लेने की कला में निपुण आदमी था वह। भूत की तरह काला। उसकी दाढ़ी भौंहों तक बढ़ी हुई थी और कहने को वह अपने आप को बच्चूस कहा करता था। चेहरे पर एक घाव का निशान था। एक बार वह लड़ा था भालू के साथ—तभी उसे वह चोट आई थी। उसमें सभी कुछ ऐसी विचित्र बातें

ही थीं। नाम बड़े और दर्शन छोटे। नाम तो ऐसे, जैसे तुम्हारे दादाजी की दुनाली बंदूक से छूटने वाली गोली की आवाज; हम लोग चौंककर उत्सुकता के मारे नीचे दौड़ आते, वहां कोई तो भालू का बच्चा लिए जादूगर खड़ा मिलता अथवा कोई कोयले वाला, या खनिज पदार्थों का नमूना लिए कोई आदमी। नाम से तो आदमी को जाना नहीं जा सकता। तुम्हारे दादाजी हमेशा उन्हें आफिस के नाम एक चिट दे देते। प्रत्येक को कुछ न कुछ मिल जाता। किसी को पैसे, किसी को धान और किसी को धक्के ! खिड़कियों के पास तक जंगल फैला हुआ था और बर्फ, बर्फ...और छत से भी ऊंचे तक—' अन्ना को खांसी आने लगी।

'अब बस करो अन्ना, अधिक बोलना ठीक नहीं।' यूरा और टोन्या ने प्रार्थना की।

'ऊंह ! मैं बिल्कुल ठीक हूं। एक बात याद आ गयी। युगोरोवना कह रही थी कि कल क्रिसमिस महोत्सव की पार्टी में जाने के लिए तुम चिन्ता कर रहे हो ? मैं ऐसी बातें सुनना पसन्द नहीं करती। तुम्हें शर्म आनी चाहिये। फिर तुम अपने आपको डाक्टर कहते हो। खैर, तय यह रहा कि तुम लोग कल वहां जाओगे—हां, क्या कह रही थी...? बच्चूस ! जब वह जवान था तब लुहारी का काम किया करता था। भालू के साथ हुई एक लड़ाई में उसे सांघातिक चोट लगी थी। उसने अपने पेट के अंदर के भाग के लिए लोहे का एक सेट बनवा लिया था। इस बात का शाब्दिक अर्थ लेने की बेवकूफी मत करो, यूरा ! मेरा यह मतलब नहीं। ऐसा हो भी नहीं सकता। मुझे मालूम है।मेरा मतलब सिर्फ इतना ही है कि लोग उसके बारे में इसी तरह की बातें किया करते थे।'

खांसी के दूसरे दौरे से उसकी बातचीत में बाधा पड़ी। खांसी बढ़ती ही गई। सांस लेना मुश्किल हो रहा था।

कहते-कहते वह रोने लगी। भविष्य का पूर्वाभास, सन्निपात का प्रलाप या सब सच—कुछ सुनाई नहीं पड़ता था। मगर अन्ना थी ही ऐसी। एक तूफानी शाम को लारा ने नाद्या से नौकरी दिलाने की प्रार्थना की। नाद्या ने उसे घर ही रखवा दिया। मगर लारा के दुर्भाग्य का तो अन्त ही नहीं था।

एक दिन लारा का भाई रोड्या उससे मिलने आया। वह अब 'कैडेट' हो गया था। मगर लारा ! लारा के लिये परेशानी ही थी। किसी अधिकारी को विदा करने के लिए जो चंदा हुआ था, वह उसे जुये में हार चुका है।

डर के मारे लारा सफेद फक पड़ गयी। रोड्या सिसकते हुए कह रहा था—'कल मैं कोमारोवस्की से मिलने गया था। उसने तो बात करने से भी इंकार कर दिया।

उसने कहा था कि यदि तुम चाहो तो—उसने कहा है, कि तुम्हें हममें से किसी के प्रति जरा-सा प्यार भी नहीं है। फिर भी लारा, मैं जानता हूं कि तुम्हारा उस पर कितना बड़ा अधिकार है। तुम्हारा एक शब्द भी उसके लिए काफी होगा। सोचो, मेरे लिए इसका क्या मतलब होता है ? यह कितनी रद्दी बात है ? मेरे कैडेट् के सम्मान को इससे किनती चोट पहुंचेगी ? उसके पास जाने से तुम्हारा क्या बिगड़ जाएगा ? क्या तुम यह चाहती हो कि मेरी जिन्दगी इस तरह तबाह हो जाये ?'

'तुम्हारी जिन्दगी ! तुम्हारे कैडेट होने का सम्मान। मर्यादा शून्य-सी वह बेचैनी के साथ कमरे में चहलकदमी करते हुए चीख रही थी—'मैं कैडेट नहीं हूं। मेरा कोई सम्मान नहीं है ? तुम्हें जो करना हो, करो। तुम्हें मालूम है तुम मुझसे क्या करने को कह रहे हो ? तुम जानते हो कि वह तुम्हारे जरिये क्या करवाना चाहता है ? गुलामी और दीनता के इतने सालों के बाद आज तुम यहां इस रूप में आकर हाजिर हो गये हो; जैसे तुम्हें कोई मतलब नहीं। यदि मेरी आजादी का यह बना-बनाया घरौंदा हवा से छितरा दिया जाये। तुम जहन्नुम में जाओ। गोली खाकर मर जाओ। मुझे तुम्हारी रत्ती-भर परवाह नहीं। कितना धन चाहिये तुम्हें।'

'पांच सौ से कुछ ज्यादा, यों कहो छह सौ रूबल।' कुछ संकोच के साथ हिचकिचाते हुए उसने कहा।

'रोड्या तुम पागल हो गये हो क्या ? तुम जानते हो कि तुम क्या कह रहे हो ? जुए में तुमने सात सौ रूबल दांव पर लगा दिए ? जानते हो इतने रूबल कमाने के लिए मुझ जैसी औरत को कितने अर्से तक ईमानदारी से मेहनत करनी होगी ?'

वह टूट गयी। फिर ठंडे स्वर में बोली, मानो किसी अपरिचित से कह रही हो—'अच्छी बात है। मैं कोशिश करूंगी। कल आना। अपनी पिस्तौल लेते आना। उसे मुझे दे देना। याद रखना कारतूस काफी हों।'

आखिर उसने रुपये जुटा ही दिये। यहां रहकर उसने अपनी पढ़ाई भी जारी रखी और 1912 में वह स्नातक बन गई। फिर वह कुछ चिड़चिड़ी हो गई थी और अब वह कोरमोस्कोव से मिलने जा रही थी तो पाशा का घर निकट पड़ा। पाशा के मकान के पास आते ही वह टूट चुकी थी। एक क्षण के लिए रुकी। उसे लगा कि वह पाशा से मिले बगैर नहीं जा सकती। जैसे कोई चुम्बक उसे खींच रहा हो, वह पाशा के पास पहुंच गई।

पाशा कहीं जाने की जल्दी में था। वह इस समय इतना भोला और प्यारा लग रहा था कि लारा ने दरवाजे पर दस्तक देने की जरूरत नहीं समझी और वह जानते हुए भी पूरे कपड़े पहने हुए नहीं है, उसने पाशा को अपने बाहुपाश में आलिंगनबद्ध कर लिया। लारा के इस उद्वेग को पाशा पलक झपकते ही समझ गया।

अपने स्कार्ट का एक कोना उठाकर वह इस तरह डगमगाते हुए कदमों से आगे बढ़ी जैसे वह पानी में गुजरते हुए, नदी पार कर रही हो। पाशा उसकी ओर बढ़ा। बोला—'बात क्या है लारा ? क्या हुआ ?'

'मेरे पास बैठ जाओ। बैठो। कपड़े बाद में भी पहन लेना। मैं जल्दी में हूं। एक मिनट के बाद मुझे यहां से चल देना होगा। मेरे दस्ताने मत छुओ। ठहरो। एक मिनट के लिए मेरी ओर मत देखो।' लारा ने अपना कोट खोलकर टांग दिया और जेब में पिस्तौल रख दिया।

'मोमबत्ती जलाकर बिजली की रोशनी बंद कर दो। मेरी ओर देखो।

पाशा को मालूम था कि उसे अंधकार में मोमबत्ती की धीमी रोशनी में बातचीत करना बहुत पसन्द है। इसलिए वह हमेशा अपने पास दो-चार मोमबत्तियां रखता था। मोमबत्ती की शिखा जलने से आनकानी करती हुई चटकने लगी। छोटे-छोटे सितारे उछलकर इधर-उधर छिटक गये।

तीर की तरह स्थिर भाव से वह खड़ी हो गयी। सारा कमरा मध्यम रोशनी से भर-सा गया। खिड़की के चौखटे पर, मोमबत्ती की ज्योतिशिखा

के समीप, बर्फ पिघल रही थी। वहां एक काला झरोखा-सा बन गया था। मानो झांकने के लिए कोई छेद हो।

लारा ने कहा—'सुनो पाशा, मैं मुशीबत में हूं। तुम्हें मेदी मदद करनी होगी। डरो मत और न मुझसे सवाल-जवाब करो। हम दूसरे लोगों की तरह नहीं हो सकते। मेरी बातों को गंभीरतापूर्वक सुनो। मैं भयंकर खतरे में हूं। यदि तुम मुझे प्यार करते हो, यदि तुम चाहते हो कि मेरा सर्वनाश न हो, तो विवाह की बात को टालो मत।'

'यही तो मैं भी चाहता हूं। जिस दिन भी तुम कहो, मैं विवाह करने के लिए तैयार हूं। मगर यह बताओ कि दरअसल तुम्हें इस समय किस बात की चिन्ता है ? पहेलियां बुझाकर मुझे दुखित मत करो।'

लारा ने अपने गंभीरतम प्रश्न को टालकर विषय बदल दिया।

6

बड़े दिन का त्यौहार था। सब लोग इस त्यौहार के प्रति एकत्रित और आकर्षित थे। यूरा के ऊपर भी जैसे भाग्य देवता मेहरबान था। टोन्या उसकी सखी थी; उसकी घनिष्ठ मित्र। यूरा की हर बात वह बगैर आनाकानी के मान लेती थी।

मगर अब ! वही टोन्या अचानक उसे गहन गंभीर और अबूझ-सी दिखाई देने लगी। उसके इस रूप की तो उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। वह एक सम्पूर्ण स्त्री के रूप में सामने प्रस्तुत थी। कल्पना के बल पर वह अपने आपको शहंशाह के रूप में, एक नायक के रूप में, मसीहा के रूप में, एक विजेता के रूप में अवश्य देखा करती थी। लेकिन स्त्री के रूप में तो कभी नहीं।

उसे लगा कि टोन्या के दुर्बल कंधों पर सबसे कठिन काम का भार आ पड़ा है। उसके प्रति उसे सहानुभूति-सी होने लगी। साथ ही कुछ

संकोच-सा अनुभव होने लगा। यही तो युवावस्था की भावाभिव्यक्ति की शुरूआत है। टोन्या का यूरा के प्रति परिवर्तित व्यवहार भी उतना ही गंभीर और आश्चर्यजनक था। यूरा को अन्ना के बारे में चिन्ता हो रही थी। वह सोच रहा था कि ऐसे अवसर पर बाहर नहीं निकलना चाहिये था।

रवाना होते समय अन्ना की तबीयत कुछ खराब होने लगी थी। उनके अंदर जाने पर अन्ना ने हमेशा की तरह यही आदेश दिया कि वे तुरन्त पार्टी में चले जाएं।

अन्ना ने पूछा था कि मौसम कैसा है ? जवाब देने के लिए जब वे खिड़की के पास पहुंचे तो लौटते वक्त टोन्या के कपड़ों का पल्ला पर्दों में अटक गया था और परिणामस्वरूप ऐसा लग रहा था मानो विवाह के समय दुल्हन के पिछले हिस्से की लम्बी चादर घिसट रही है। सब हंसने लगे थे।

थोड़ी देर पहले जो कुछ लारा ने देखा था वही सब यूरा को इस समय दिखाई दे रहा था। कोहरे से ढकी हुई खिड़कियों में से रोशनी प्रकाशित हो रही थी।

प्रत्येक घर से मास्को का क्रिसमिस महोत्सव चमक रहा था। पेड़ों पर मोमबत्तियां जल रही थीं। विभिन्न प्रकार की पोशाक पहने लोग हंसी-मजाक कर रहे थे। खेल-कूद रहे थे। यूरा और टोन्या ने अपना सामान यथास्थान रख दिया। गृह-स्वामी का अभिवादन करने के लिए जाने से पहले दोनों ने बाल-रूम की ओर देखा। क्रिसमिस पेड़ों पर पवित्र सुगन्ध से पूरित रोशनी की पत्तों पर पर्तें जड़ी हुई थीं। जो लोग नाच नहीं रहे थे, वे एक-दूसरे का अनुकरण करते हुए धीरे-धीरे इधर-उधर चलते हुए बातें कर रहे थे। नाचघर के मध्यभाग में नर्तकगण फुर्ती से घूम रहे थे। चक्कर काट रहे थे।

इस नृत्य का आयोजक एक सहायक वकील के सुपुत्र कानून के एक विद्यार्थी, कोका कोर्नाकोव द्वारा किया गया था। उसी ने जोड़े साधे थे और उनका व्यूह तैयार किया था। इस नृत्य का निर्देशन भी वही कर रहा था। नृत्य निर्देशन के लिए वह जोर-जोर से आज्ञाएं देता था और लोग उसे सहर्ष मानते।गीत की धुनों के लिए वह समय-समय पर पियानो बजाने

वाले को भी इशारे करता रहता। अपने साथियों के साथ नाचते-नाचते लोग विस्तृत घेरे को तंग करते जाते।

वाद्य-संगीत के समाप्त होने से पहले ही अदृष्ट रूप से समयबद्ध ताल के साथ उनका मन नृत्य अपने सुनिश्चित स्वरूप में आ गया। सब आनन्दमग्न थे। तालियां बजा रहे थे। बीच-बीच में पेय पदार्थों का भी क्रम चालू था। उनका चिल्लाना और हंसना क्षण भर के लिए भी न रुकता। पेय पीते समय अथवा खाली गिलास रखते वक्त, शोर दस गुना अधिक बढ़ जाता। जैसे उन्होंने कोई अत्यन्त नशीली चीज पी ली थी और वे होश में न रह सके हों। यूरा और टोन्या बिना इस बाल-रूम में रुके गृहस्वामी के कमरे की ओर चल दिये।

गृहस्वामी के पिछले कमरे में बेतरतीब फर्नीचर पड़ा हुआ था। स्वेन्टिटस्की की क्रिसमिस की तैयारियों के लिए यही जगह थी। वार्निश और सरेस की गंध आ रही थी।

चारों ओर रंगीन डिब्बे तथा लपेटे हुए कागजों का ढेर के साथ अजनबी मोमबत्तियां भी हर कुर्सी पर पड़ी हुई थी। स्वेन्टिटस्की महोदय भोजन की टेबल पर प्रत्येक व्यक्ति के निश्चित स्थान के लिए चिटें तैयार कर रहे थे। लॉटरी के टिकटों के नम्बर लिख रहे थे। ज्योर्ज उनकी सहायता कर रहा था। लेकिन उसकी गिनती बारम्बार गड़बड़ा जाती और गृहस्वामी बीच-बीच में नाराज से हो उठते।

यूरा और टोन्या को देखकर वे बहुत प्रसन्न हो उठे। उनके लिए वे दोनों बच्चों के ही समान थे। इसलिए बिना किसी खास औपचारिकता के, उन्होंने दोनों को काम पर लगा दिया। लारा बाल-रूम में ही थी। उसकी पोशाक सायंकालीन तो नहीं ही थी, वह किसी को जानती भी नहीं थी। फिर वह वहां से गई नहीं। नींद में चलने वाले व्यक्ति की तरह या तो वह कोका के साथ नाचती रही अथवा निरुद्देश्य भाव में इधर-उधर भटकती रही। बीच में एकाध बार रुककर, उसने हिचकिचाते हुए खड़े रहकर कमरे के बाहर की ओर देखा। उसे आशा थी कि दूसरी ओर ताश खेलता हुआ कोमारोवस्की उसकी ओर देख लेगा।

कोमारोवस्की ताश खेलने में मशगूल था। उसके दाहिने हाथ में, ढाल की तरह पकड़े हुए ताश के पत्ते या तो सचमुच उसका चेहरा ढके हुए थे, जिससे वह लारा की तरफ देख नहीं पाता था, अथवा उसकी ओर न देखने का वह बहाना किये बैठा था। लारा इस अपमान के संताप से जल रही थी।

इसी समय एक लड़की बाल-रूम में से अंदर की ओर गयी। उसकी ओर कोमारोवस्की ने कुछ ऐसी दृष्टि से देखा, जिससे लारा अच्छी तरह से, घनिष्ठ रूप में परिचित थी। इस लड़की को लारा जानती नहीं थी। कोमारोवस्की की चापलूसी भरी निगाहों से प्रसन्न होकर, शर्माती हुई वह लड़की मुस्कुरा दी। लारा इस बेशर्मी के व्यवहार से मन ही मन शर्मिन्दा और क्षुब्ध हो उठी थी। उसने मन ही मन कहा—नया शिकार !

जैसे शीशे में अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दे, ठीक उसी तरह उस लड़की में अपने आपको प्रतिष्ठित कर लारा ने देखा। कोमारोवस्की से बातचीत का इरादा उसने छोड़ा नहीं था, बल्कि अधिक उपयुक्त अवसर की खोज में, अपने आपको शांत करती हुई वह बालरूम की ओर चली गई। लारा जिस युवक के साथ नाच रही थी, अचानक उसके प्रति घृणा से भर उठी। यही है वह व्यक्ति जो देशद्रोही है। इसी ने मुखबिरी करके आंदोलन को, उस हड़ताल को हानि पहुंचाई थी। क्या अजीब संयोग है। प्रातःकाल के करीब दो बज गये। मध्यान्तर में चाय और बिस्कुट लिया गया और फिर नाच आरंभ हुआ। क्रिसमिस-वृक्ष पर जलकर गिरी मोमबत्तियों को बदलने की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

यूरा खोया-खोया-सा बालरूम के मध्य में टोन्या को किसी अपरिचित व्यक्ति के साथ नाचते हुए देख रहा था। अपने कपड़ों को लहराती हुई, मछली की तरह, फड़कती हुई, वह उसके पास आई और तेजी के साथ गायब हो गई। टोन्या काफी उत्तेजित थी।

मध्यान्तर में उसने चाय के बजाय संतरों से अपनी प्यास बुझाई। संतरों को छीलने के बाद अपनी अंगुलियां रूमाल से पोंछती और रूमाल को आस्तीन या अपने झालरदार कपड़े की कोर में खोंस लेती।

अपने साथी के साथ नाचती हुई, घूमती हुई, आकर उसने यूरा का

हाथ पकड़ लिया, मुस्कराई। टोन्या के हाथ का रूमाल यूरा के पास आ गया। यूरा ने उसे अपने होंठों से लगाया और आंखें बंद कर लीं। टोन्या के हाथों और संतरे की सुगन्ध से रूमाल तर था।

यूरा को सब अद्‌भुत-सा, सब नया-सा लग रहा था। इसी समय अन्तर्भाग से गोली की आवाज गूंज उठी। एक क्षण के लिए सर्वत्र निस्तब्धता छा गयी। इसके बाद लोग फुर्ती से बाल-रूम और बैठक के बीच लटकने वाले पर्दे के उस ओर दौड़ पड़े। कुछ शोर मचाते रहे थे—कुछ बहस कर रहे थे—सब लोग एक साथ बात करने में लगे हुए थे।

निराशा से व्याकुल कोमारोवस्की कहता रहा—'उसने यह क्या कर डाला ?'

'बोर्या, बोर्या, बताओ तुम्हें कुछ हुआ तो नहीं ? श्रीमती कोर्नाकोव मूर्च्छितावस्था में चिल्ला रही थीं—'डॉक्टर कहां है ? अभी-अभी तो वे यहां थे। लेकिन कहां गये ? कैसे कह सकते हो कि यह जरा-सी खरोंच भर है। मैं पहले ही कहती थी, इन दुष्ट अपराधियों के गुप्त-भेदों में मत पड़ो। देख लो, वे किस तरह के लोग होते हैं। ओह, आज तुम्हें अपने दृढ़ निश्चय के लिए शहीद हो जाना पड़ा। यह रही वह दुष्ट, गंदी, नालायक लड़की। मैं तुम्हारी आंखें निकाल लूंगी। तुम किसी भी हालत में यहां से भागकर बच नहीं सकतीं। कोमारोवस्की साहब, आप क्या कह रहे थे ? उसने आप पर गोली मारी थी ? नहीं, कभी नहीं। मैं यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकती। ऐसे दुखद मौके पर मजाक मत करो। कोमारोवस्की साहब ! कोका, कोका, तुम कोमोरोवस्की की बात पर विश्वास कर सकते हो ? इसने तुम्हारे पिता की हत्या करने की चेष्टा की थी। लेकिन—सिर्फ सौभाग्य। कोका, ओ कोका।'

बैठक के इस कमरे से भीड़ बाहर निकल आई। कोर्नाकोव हंसते हुए सबको विश्वास दिलाने की चेष्टा कर रही थी कि वह बिल्कुल ठीक-ठाक है। ठीक उनके पीछे दूसरा दल लारा को खींचते हुए ला रहा था। यूरा उसे देखकर अवाक् रह गया। फिर वही लड़की, उतनी ही विचित्र परिस्थितियों में। वही भूरे बालों वाला व्यक्ति उसके पास खड़ा था। इस बार वह इस

आदमी को पहचान गया। यही सुप्रसिद्ध वकील कोमारोवस्की था।

लारा बेहोश हो रही थी। एक तरह से उसे जबरदस्ती आरामकुर्सी तक ले जाया गया। वहां पहुंचते ही बेहोश होकर वह गिर पड़ी। उसे होश में लाने में मदद करने के लिए जाने से पहले यूरा गोली का निशाना बनने वाले व्यक्ति के प्रति कुछ सहानुभति जताना चाहता था। कोर्नाकोव के पास जाकर उसने उन्हें हाथ दिखाने के लिए कहा। उनके बच जाने के सौभाग्य के लिए बधाई दी। मगर यूरा का मन जहां भटक रहा था, वह तो भटक ही रहा था। जब तक वे पहुंचे अन्ना नहीं रही थी। वह मर चुकी थी। टोन्या पछाड़ खाकर गिर पड़ी। उसकी रुलाई रोके नहीं रुकती थी।

अन्तिम संस्कारों के अनुष्ठानों के समय छोटे से मंच पर रखे हुए अन्ना के कफन के पल्ले को वह काफी देर तक पकड़े बैठी रही। फूलों से सजे हुए इस जनाजे के अलावा उसकी निगाह किसी ओर नहीं थी। पास ही खड़े लोगों से जब उसकी नजर मिलती तो वह उठकर अंदर भाग जाती। सर्दी, मोमबत्तियों का चकाचौंध पैदा करने वाला प्रकाश, गंभीर स्वर में गाये जाने वाले गीत, नींद का अभाव और चुपचाप एक कौने में खड़ा यूरा दुख और उत्तेजना की निद्राच्छन्न गंभीर व्याकुलता में डूब-सा गया। आज से दस साल पहले उसकी मां मर गयी थी। वह उस समय बिल्कुल बच्चा था। उस समय की व्याकुलता, दुख और व्यग्रता उसे याद थी।

अन्त्येष्टि क्रिया समाप्त हुई। फूल-मालाओं से लदी गाड़ी चली जा रही थी। बाहर भिखारी लोग जमा थे।

शहर के अन्तिम छोर पर अवस्थित श्मशान-भूमि की ओर वे चल पड़े। सर्दी समाप्त हो चुकी थी। आज के शांत दिन एक जीवन के साथ-साथ पाला भी मानो विदा ले चुका था। इस अन्त्येष्टि के लिए ही यह दिन इस रूप में प्रस्तुत था। इसी श्मशान में यूरा की मां दफनाई गई थी। कुछ वर्षों से वह कब्र पर गया नहीं था। उस ओर देखकर उसने मन ही मन पुकारा—मां! ठीक इस तरह, जिस तरह आज से वर्षों पहले उसने पुकारा था।

गंभीरतापूर्वक शवयात्रियों का दल चल रहा था। शोकाकुल यात्रियों की पदचाप से सारा रास्ता साफ स्वच्छ हो गया था। श्मशान-भूमि की गुलाबी दीवारों से ऊपर गुम्बदों के सूली के निशान पर तुषार जंजीरों के रूप में लिपटा हुआ था। मठ से कुछ दूर एक दीवार से दूसरी तक धुले कपड़े सूख रहे थे। यूरा चुपचाप अकेला आगे चला जा रहा था। दूसरों को अपने बराबर आने के लिए बीच-बीच में वह रुक जाता। इस छोटे से समुदाय की जिन्दगी में इस मृत्यु ने जो निर्जनता भर दी थी उसकी चुनौती के प्रत्युत्तर में यूरा को सौन्दर्य-रचना की कल्पना करने, विचार करने के लिए प्रेरित किया।

इस आशा से उसे धीरज बंधा कि एक या दो दिन वह घर अथवा विश्वविद्यालय से दूर एकान्त में बितायेगा। अन्ना की याद में एक कविता लिखेगा। इस कविता में, जीवन में प्राप्त प्रत्येक आकस्मिकता का वर्णन होगा। अन्ना की उत्तम विशेषताओं के अलंकार होंगे, टोन्या का घनीभूत संताप होगा, अन्त्येष्टि-क्रिया से वापस लौटते समय घटित घटना होगी; और होगा सूखते हुए कपड़ों वाला श्मशान-भूमि का वह स्थान; जहां एक बच्चे के रूप में वह दुख और भय से कातर हो उठा था—वही सभी कुछ वह कविता में रख देगा।

7

लारा जलते बुखार में बेहोश बिस्तर पर पड़ी थी। स्वेन्टिटस्की अपने नौकरों तथा डाक्टर के साथ पास खड़े धीमे स्वर में बातचीत कर रहे थे।

कमरे के दूसरे रास्ते पर मध्यम रोशनी फैली हुई थी। मकान का बाकी का हिस्सा खाली और अंधकारपूर्ण था। कोमारोवस्की विक्षुब्ध भाव से इधर-उधर चहलकदमी कर रहा था मानो वह यहां अतिथि नहीं है। लारा

का हाल जानने के लिए वह शयनकक्ष की ओर बीच-बीच में झांक लेता और फिर लम्बे कदम भरता हुआ चहलकदमी करने लगता। खाने की मेज पर स्पर्शरहित तश्तरियां अभी भी सजी हुई थीं। पास से ज़ब भी कोई टैक्सी गुजरती तो पीने के लिए पानी का पारदर्शक कांच का बर्तन उसके प्रकाश से चमक उठता।

कोमारोवस्की के हृदय में तूफान चल रहा था—छिः ! कितना लज्जाजनक षड्यंत्र ! इस घटना से उसके पद और मर्यादा पर बड़ा भारी आघात लग सकता था। उसकी प्रतिष्ठा खतरे में थी। किसी भी कीमत पर इस सिलेसिले में उठने वाली अफवाहों को रोकना चाहता था; और इस सम्बन्ध में समाचार फैल ही गये हों तो उन्हें पहले ही समाप्त कर देना चाहता था। उसके हृदयान्दोलन का दूसरा कारण यह भी था कि वह फिर एक बार इस ध्वस्त और असाध्य लड़की के प्रति तीव्र मोहजनित आकर्षण करने लगा था। वह जानता था कि लारा साधारण लड़कियों की तरह नहीं है। आरंभ से ही उसने इस लड़की में एक अजीब-सी असाधारणता पाई है। मन ही मन वह जानता था कि उसने उसके जीवन को कितने दुख और असाध्य दर्द से अस्त-व्यस्त कर दिया है। वह अपने नवीन भविष्यपथ को चुनने के लिए कितनी कृत-संकल्प थी ?

कितनी ही और मुसीबतें तो अभी तक बाकी ही हैं। कानून आंख बंद किये थोड़े ही रहेगा ? इस घटना को अभी तक दो घंटे भी नहीं हुए होंगे, फिर भी पुलिस दो बार चक्कर लगा चुकी है। प्रत्येक बार रसोईघर के पास सार्जेण्ट से मिलकर कोमोरोवस्की मामले को ठीक-ठाक करने में लगा हुआ था।

बात आगे चलकर वहां उलझती है, जहां उसे यह साबित करना होगा कि लारा दरअसल गोली कोमोरोवस्की पर मारना चाहती थी न कि कोर्नाकोव पर । कोलोग्रिवोव द्वारा प्रस्तावित जगह पर रहने के लिए चली गयी।

8

पाशा आन्तिपोव लारा के कारण काफी दुखित था। जब तक वह संकटापन्न अवस्था में थी उसे लारा को देखने की इज़ाजत नहीं मिल सकी। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। जहां तक उसे मालूम था, लारा की गोली का लक्ष्य था वह व्यक्ति, जिसने कि उन्हें संरक्षण दिया था और जो इस समय की संकटपूर्ण परिस्थितियों से बचाने के लिए इतनी कोशिश कर रहा था।

लारा के सिर पर लटक रही दण्डाज्ञा से वही उसे सुरक्षित रखे हुए था। लारा का उससे थोड़ा-सा परिचय मात्र ही था। मन ही मन वह कोमारोवस्की के प्रति कृतज्ञता महसूस करता। लारा स्वस्थ हो गयी।

उसने पाशा को बुलाकर कहा—'पाशा, मैं एक खराब लड़की हूं। तुम मुझे नहीं जानते। तुम्हें बिलकुल मालूम नहीं कि मैं किस प्रकार की लड़की हूं। किसी दिन तुम्हें सब कुछ बता दूंगी। इस बारे में अभी कोई बात मत करना। तुम मानते हो न, कि जब भी मैं तुमसे बात करने की कोशिश करती हूं, चीख पड़ती हूं। मुझे तुम अकेली छोड़ दो। मेरे बारे में सब कुछ भूल जाओ। मैं तुम्हारे लायक नहीं हूं।'

इसके बाद हृदय विदारक असाह्यय दुखद-दृश्य उपस्थित हो जाता। अर्बत स्ट्रीट में जब तक लारा रही, यही सब चलता रहा। आंसुओं से भीगे चेहरे से पाशा एक ओर चुपचाप खड़ा रहता। गृह-स्वामिनी पाशा को इस हालत में देखकर लारा के कमरे की ओर दौड़ पड़ती और पेट पकड़कर इतने जोर-जोर से इतनी देर तक हंसती कि लारा बर्दाश्त नहीं कर सकती। वह चीखती—मैं इतनी ज्यादती बर्दाश्त नहीं कर सकती। खामोश रहने वाला यह आदमी ! सेमसन ! पाशा को अपने अशुद्ध प्रेम से मुक्त करने के लिए अपने प्रति उसके प्यार को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए, उसके दुख को समाप्त करने के लिए लारा ने घोषित कर दिया कि वह उसके साथ सम्बन्ध तोड़ रही है। अब पाशा के साथ उसका कोई लेन-देन नहीं

है। इसलिए कि वह उसे प्यार नहीं करती। लेकिन आत्मत्याग करते समय वह इस तरह सिसकने लगती कि उसकी बातों पर विश्वास करना कठिन हो जाता।

पाशा को संदेह होता कि लारा ने बहुत पाप किया है। उसके किसी भी शब्द पर उसे विश्वास नहीं होता। उससे घृणा करने और उस पर अभिशाप बरसाने के लिए भी वह तैयार था। लेकिन वह उसे आकण्ठ प्यार करता था।

उसके प्रत्येक विचार के प्रति उसका द्वेषपूर्ण विरोध था। जिस तकिये पर उसका सिर रखा हुआ थ, जिस बर्तन से वह पानी पीती थी, उनके प्रति भी उसके मन में द्वेष था। अंत में यह तय किया गया कि जब वे एक-दूसरे को अपने दिमाग से नहीं निकाल सकते तो उन्हें अब निश्चित रूप से आवश्यक कदम उठा लेना चाहिये।

बिना इम्तिहानों की प्रतीक्षा किए दोनों ने तुरन्त शादी करने का निश्चय कर लिया। आगामी रविवार को ही ब्याह होने वाला था। मगर लारा की इच्छानुसार उसे एक बार और टाल दिया गया। सफलतापूर्वक ग्रेजुएट होने के बाद उनका ब्याह सोमवार को हुआ। उसकी सहपाठित तुस्या की मां चिपुकों द्वारा ब्याह की सारी व्यवस्था की गयी थी। उनकी आवाज मधुर थी, हृदय उदार। उनके दिमाग में कुछ तो परम्परागत और कुछ उनके प्रतिभाशाली दिमाग की अपनी उपज के अनेक वहम भरे हुए थे। विवाह वाले दिन कपड़े पहनाते हुए चिपुकों ने लारा के कान में अपने मधुर स्वर में एक खास किस्म की आवाज की। उस दिन बड़ी गर्मी थी। शहर और बगीचे के धूल से भरे रास्ते और गिरजाघरों के सुनहरे गुम्बद गुलाबी दिखाई दे रहे थे।

हवा का कही नामोनिशान नहीं था; और सूर्य की गर्मी से आंखें चौंधिया जाती थीं। 'उस दिन बहुत सारे लोगों की शादियाँ होने वाली थीं। विवाह वेदी तक जाने के रास्ते पर जो कालीन बिछा हुआ था उस पर लारा ने ज्योंही कदम रखे चिपुकों ने मुट्ठी भरकर उसके फलने-फूलने की कामना सहित कुछ सिक्के उछाल दिये।

इसी इरादे से चिपुकों ने धीरे से लारा को कहा कि जब विवाह का

सेहरा सिर पर रखा जाये तो अपनी नंगी अंगुलियों से क्राश के निशान बनाने के बजाय उन्हें घूंघट तथा आंचल से ढक ले। साथ ही उसने यह भी बताया था कि वह मोमबत्तियों को अपने पास की मोमबत्तियों से ऊंची रखे ताकि घर में उसका शासन हो। लेकिन लारा ने अपना समस्त भविष्य पाशा के लिए समर्पित करते हुए मोमबत्तियों को नीचे रखा लेकिन व्यर्थ ! पाशा ने अपनी मोमबत्तियां और नीचे झुका लीं। पाशा द्वारा सजाये गये स्टुडियो में, जहां इस समय लारा रहती थी, ब्याह के भोज में सम्मिलित होने के लिए वे सब गिरजाघर से सीधे वहीं पहुंच गये।

मेहमानों ने शोर मचाया—'यह ज्यादती है !'

दूसरों ने समर्थन में कहा—'आने दो इसमें मधुरता है।'

वर और वधू शर्म से लाल हो गये। फिर रूसी रिवाज के अनुसार उन्होंने सबके सामने एक-दूसरे को चूम लिया।

चिपुकों ने गीत आरंभ किया—भगवान तुम्हें दे प्यार और दे एक-सूत्रता ! तथा—पड़ने तो सलवट कपड़ों में; बाल बिखर जाने दो।

लारा ने अपने पति से कहा—'मैं बहुत थक गई हूं। तुम सारी व्यवस्था संभाल लोगे ?'

'संभाल लूंगा।'

'कुल मिलाकर आज मैं बहुत खुश हूं। बहुत खुशी हूं। और तुम ?'

'बहुत ज्यादा। लेकिन एक लम्बी कथा है।'

कोमारोवस्की को अपवाद रूप से नवयुवकों की इस पार्टी में सम्मिलित कर लिया गया था। वह कह रहा था कि दोनों मित्रों के चले जाने पर वह कितना वियोग दु:ख महसूस करने लगेगा। उसके लिए सारा शहर रेगिस्तान बन जायेगा। वह इतना भावुक बन गया कि उससे बोला नहीं जा रहा था।

उसने पाशा से वचन लिया कि वे उसे समय-समय पर पत्र लिखते रहें। यदि उसका मन यहां नहीं लगा और वह उनका वियोग न सह सका तो समय निकालकर उन्हें देखने के लिए वह यूराल्स अवश्य आयेगा।

लारा ने शादी के बाद के हनीमून की तैयारी शुरू कर दी थी। भोर की गाड़ी से उन्हें दूर चला जाना था। उस दिन मौसम बहुत ही खराब था।

महायुद्ध के बाद यह दूसरी पतझड़ थी। ब्रुसिल्वो की आठवीं सेना कारपेंथाइन में जमा थी। हंगरी पर आक्रमण करने के लिए तैयार यह सेना अब पीछे हट रही थी। लड़ाई से पहले गेलेसिया रूस के अधिकार में था, वहां से उन्हें खदेड़ दिया गया था। इस पलायन में बड़ी भारी क्षति हुई थी। यूरा को अब डा० जिवागो के नाम से लोग जानने लगे थे। अस्पताल के स्त्रियों वाले विभाग में वह टोन्या को ले आया था। प्रसूति विभाग के दरवाजे पर उसने पत्नी को विदा दी। बाहर बरामदे में खड़ा यूरा नर्स का इंतजार कर रहा था ताकि उसे टोन्या का समाचार मिल सके और जरूरत पड़ने पर वह स्वयं हाजिर हो सके। वह स्वयं जल्दी में था।

अधखुले रास्ते में उसने टोन्या की मार्मिक आवाज सुनी। उसकी आवाज ऐसी लग रही थी जैसे किसी रेल-दुर्घटना में घायल और अंग-भंग जीवित व्यक्ति को रेल के पहियों के बीच में होकर निकाला जा रहा हो। इतनी जोर से दबाया कि खून निकल पड़ा। वह खिड़की के पास जाकर चुपचाप खड़ा हो गया। बाहर तिरछी बरसात बरस रही थी। एक नर्स बाहर निकली। साथ ही यूरा को स्वागत शिशु के मधुर क्रन्दन की आवाज सुनाई दी।

'बधाई, डॉक्टर लड़का है।'

कुछ रुककर मधुर आवाज भर उसने कहा—अभी आप अंदर नहीं जा सकेंगे। जब सब कुछ तैयार हो जायेगा, तब हम आपको बुला लेंगे। तुम्हें इसके लिए लम्बा-चौड़ा बयान देना होगा। उसने काफी कष्ट भुगता है। पहली प्रसूति थी न इसलिए पहली बार में हर चीज में तकलीफ होती है।

यूरा एक ही बात सोच रहा था कि वह बिल्कुल सुरक्षित है। नर्स की किसी बात की ओर उसका ध्यान नहीं था। अभी-अभी जो कुछ घटित हो चुका है उसके साथ उसे शामिल करके नर्स इस तरह कह रही है कि इस सब में इसका कोई बहुत बड़ा महत्वपूर्ण हिस्सा है।

वास्तव में यह सारे गोरखधंधे में क्या करे ? पिता—पुत्र ! बिना किसी खास चेष्टा अथवा तकलीफ के प्राप्त इस पितृप्त के प्रति गौरव करने लायक उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। यह सब उसकी चेतना के बर्हिमार्ग में था। अंतर में वह भारी खतरे में टोन्या के सुरक्षित होने के

समाचार से खुश था। पाशा दम्पत्ति युर्यातिन में चार साल तक व्यवस्थित रूप से जम कर रहे। लारा के पास काफी काम था। घर-घृहस्थी देखनी थी, अपनी तीन वर्षीय कन्या कात्या की देखभाल करनी थी। अपनी समझ में उसकी नौकरानी मर्कुतका उसकी मदद में तत्पर रहती, मगर वह लारा के लिए पर्याप्त न होता।

पाशा की प्रत्येक बात ध्यान रखने से उसे छुट्टी मिल ही नहीं पाती थी। इसके अतिरिक्त कन्या-विद्यालय में उसे पढ़ाने के लिए भी जाना होता। एक क्षण का विश्राम किए बिना वह निरन्तर काम में लगी रहती। वह बहुत खुश थी। सुखी थी। इसी तरह के जीवन की उसने कल्पना की थी। उसे बेटी बेहद पसन्द थी। वह यहीं पैदा हुई थी। शिशिर ऋतु के लक्षण दिखाई देने लगे थे। लोग नदी में से वोट निकालकर, गाड़ी में लादकर शहर की ओर ला रहे थे। घर के आंगन में ये बोट पड़े रहेंगे। और उनकी छाया में बच्चे खेलते रहेंगे। लारा के किराये के मकान में ऐसा ही एक बोट पड़ा था। ग्रीष्म ऋतु की सफेद बोट की छाया में कात्या खेल रही थी। युर्यातिन के प्रान्तीय रास्ते लारा को बेहद पसन्द थे। यहां के लोग सरल थे, बुद्धिमान थे और उन पर सहज ही विश्वास किया जा सकता था। फेल्ट, जूते और भूरे रंग के फेलेनेल आस्तीन के कोट पहनने की यहां आम रिवाज थी। लारा को यह धरती और उसके सीधे-सादे लोग बहुत ही पसन्द थे। वह चाहता था कि वह विज्ञान में डिग्री हासिल कर वैज्ञानिक विभाग में तबादला करवाकर अपने परिवार के साथ पीटर्सबर्ग चला जाये। रात-रात भर पढ़ाई करते रहने के कारण उसका स्वास्थ्य खराब हो गया था और वह नींद न आने के रोग से पीड़ित हो गया। लारा के साथ उसके सम्बन्ध अच्छे होते हुए भी स्पष्ट नहीं थे। वह उसकी कृपा और मोह से त्रस्त-सा हो उठता। लेकिन वह लारा की आलोचना कभी न करता। उसे डर था कि किसी साधारण से निर्दोष से आलोचनात्मक शब्द का अर्थ वह कहीं गलत न ले बैठे।

उसे भय रहता था कि कहीं भूल से कोई ऐसी बात न हो जाये जिससे कि लारा के साथ एक दिन के सम्बन्ध की बात उसकी ओर से हाजिर हो

जाये। इस बात से वह भयभीत-सा हो उठा कि लारा कहीं उसके दिमाग में उसके प्रति उठने वाले बेतुके विचारों से परिचित तो नहीं है ? परिणामस्वरूप दोनों एक-दूसरे के प्रति सहज-स्वभाविक रूप में नहीं थे। दोनों एक-दूसरे के प्रति अधिक उदार व्यवहार करने की चेष्टा किया करते। आज रात को उनके यहां मेहमान आने वाले थे। लारा की प्रधानाध्यापिका और पाशा के कुछ साथी अध्यापकों के साथ पंचायतकोर्ट का एक सदस्य भी आने वाला था। पाशा के दृष्टिकोण के अनुसार ये सब गधे थे।

पाशा लारा की नाटकीय प्रसन्नता को देखकर खुश हो रहा था, सोच रहा था, लारा अपने चेहरे से तो ऐसा जाहिर कर रही है, मानो यह सब लोग उसे बेहद पसन्द हों। सब के चले जाने के बाद मर्फतका के साथ घर का काम-काज निपटाने में लारा को काफी समय लग गया। कपड़े बदलकर वापस आकर उसने देखा कि कात्या ठीक से ओढ़कर सो गई है और पाशा को भी नींद आ गई है। वह अपने पति के पास, ठीक शिशु के साथ मां की सरलता सहित लेट गई। लेकिन पाशा सोने का सिर्फ बहाना किये पड़ा था। नींद न आने की बीमारी के कारण उसे मालूम था कि उसे घंटों जागते रहना होगा। वह धीरे से उठा, कोट पहना और बाहर चला गया। उसे क्या करना चाहिये ? अपनी बच्चे के साथ वह अपने आपको इस गांव के घेरे से मुक्त कर दे ? अपने आपको मुक्त करने से अधिक अच्छा यही होगा। लेकिन यह हो कैसे ? तलाक ? डूब कर आत्महत्या कर ले ! कितनी लज्जाजनक ओछी बात है। जैसे मैं इसी किस्म की हरकतें करता रहता हूं। वह मन ही मन क्रोधावेश में फुसफुसाया। सोचा, फिर इस अति नाटकीय व्यपार की पुनरावृत्ति बारम्बार क्यों की जाय ? उसने सितारों की ओर देखा, मानो उनसे सलाह मांग रहा हो। छोटे-बड़े, झुण्ड में और अकेले, कुछ नीले, कुछ इन्द्र-धनुष के रंग के सितारे चमकते रहे।

अचानक वे सब लुप्त हो गये। जैसे कोई टार्च हिलाता हुआ मैदान के उस पार रास्ता बता रहा हो—पाशा घर, मकान, बोट और अपने इन विचारों से मुक्त हो गया। लेबल-क्रासिंग से, आकाश में पीले रंग का धुआं छोड़ती

हुई, घायलों से लदी एक गाड़ी पश्चिम की ओर चली गयी। मानो पिछले वर्ष के अगणित दिन और रातें एक साथ सामने से गुजर गयी हों। पाशा उठा। मुस्कराया। घर आकर बिस्तर पर लेट गया। उसे जवाब मिल गया था।

लारा ने जब पाशा का निश्चय सुना तो वह स्तब्ध-सी रह गयी। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। सोचा, यह पागलपन है, वह अपने आपे में नहीं है। वह इन सबकी ओर ध्यान नहीं देगी, और वह इन तमाम बातों को भूल जायेगा। लेकिन पिछले पखवाड़े में उसने तैयारियां शुरू कर दीं। सम्बोधित कागजात उसने भर्ती-आफिस में भिजवा दिये थे। हाई-स्कूल में उसकी एवज में नया आदमी रख लिया गया था।

ओमस्क की मिलिट्री ट्रेनिंग स्कूल से उसे नियुक्ति-पत्र भी मिल गया था। लारा रोई, चीखी, पछाड़ खाकर गिर पड़ी। पाशा के चरणों में बिखरकर व्याकुल भाव से कहती रही—पाशा, ओ पाशा, मुझे छोड़कर मत जाओ। ऐसा मत करो। मैं सब कुछ संभाल लूंगी। तुमने अभी तक अपनी डाक्टरी जांच भी नहीं करवाई है। देखो, तुम्हारी तबियत कैसी है ? अपने इन बदलते हुए विचारों को छोड़ दो पाशा। शर्म करो। अपने उन्मत्त विचारों के कारण अपने परिवार को छोड़ते तुम्हें लज्जा नहीं आती ? अब तक तुम रोड्या की ईर्ष्या-द्वेष की मजाक उड़ाते रहे हो। और अब तुम स्वयं ईर्ष्या में जले जा रहे हो ? फिर भी तुम अपने आपको स्वयं सेवक कहते हो ? आफिस की वर्दी पहनकर शेखी हांकने की, तलवार की बहादुरी दिखाने की तुम्हें अब क्या जरूरत है ? पाशा, तुम्हें हो क्या गया है ? तुम अपने आपे में नहीं हो ! मैं तुम्हें इस रूप में पहचान भी नहीं पाती। किसलिए तुम यह सब करने के लिए तैयार हो गये ? सच कहना पाशा, क्या यही सब कुछ है, जिसकी रूस को इस समय जरूरत है ?

हताश निराश लारा क्या करती।उसने नर्सिंग की ट्रेनिंग ली और मिलिट्री वार्ड में कार्य करना शुरू किया। तब युद्ध अपने यौवन पर आ गया।

और उसी में से एक समाचार आया कि पाशा इस युद्ध में काम आ गया। बड़ी परेशानी थी। सब ओर धांधली मची थी। दोपहर के खाने के

समय जब भी मीशा डाक्टर जिवागो के घर आता वह यही सवाल पूछता—आज घोड़े मिल सकेंगे ? जिवागो जवाब देता—कोई सम्भावना नहीं। खैर जाओगे कहां ? न दायें जा सकते हो न बायें। चारों ओर धांधली मची हुई है। किसी को किसी तरह का होश नहीं है। कहीं-कहीं हम लोगों ने जर्मन सीमा तोड़ दी है।

कहा जाता है कि हमारी बहुत-सी उत्साहपूर्ण टुकड़ियां गिरफ्तार हो गयीं। उत्तर में जर्मनों ने स्वेन्ता पार कर लिया है। कहा जाता था कि वह अभेद्य है। यह सब उनके थोड़े से घुड़सवारों की सेना की शक्ति है। वे रेलें उड़ा रहे हैं। रसद-संग्रह नष्ट कर रहे हैं। मेरा अनुमान है, हम चारों ओर से घेर लिए गये हैं। इस हालत में तुम कर रहे हो घोड़ों की बात। कारपेन्को, थोड़ा कष्ट करके खाने की मेज लगा दो। आज हमें खाने को क्या मिलेगा दोस्त ? नौकर की ओर मुखातिब होकर डाक्टर जिवागो कहता।

पता नहीं किस प्रकार यह गांव अभी तक क्षति-रहित था। अस्पताल, मेडिकल यूनिट और उनके आश्रम सारे गांव में फैले हुए थे। वहां की पश्चिमी पद्धति की जालीदार लम्बी खिड़कियों का एक भी कांच टूटा हुआ नहीं था। सुनहली शरद ऋतु समाप्त होकर भारतीय गर्मियों में तब्दील हो गयी। दिन में डाक्टर और उनके साथी अधिकारी खिड़की खोल देते। फाइलें तथा कागज इधर-उधर उड़ते रहते।

कपड़ों के बटन खोल दिये जाते, फिर भी सारे वस्त्र पसीने से तर हो जाते। रात में खुले स्टोव के सामने वे ताश खेलते। स्टोव के धुएं से आंखें भर आतीं और वे नौकर पर बिगड़ते कि उसे चूल्हा ठीक से जलाना नहीं आता। अभी तक रात थी। गोर्डन और जिवागो एक-दूसरे के सामने बैंच पर लेटे हुए थे। उनके बीच खाना की मेज थी। नीचे की ओर खिड़की पूरी दीवार तक फैली हुई थी। कमरा गर्म था और तम्बाकू के धुएं से भरा हुआ था।

उन्होंने जालियों के दो किनारे खोल दिये ताकि शिशिर ऋतु की रात की ताजी हवा आ सके। हमेशा की तरह वे गप-शप कर रहे थे और

हमेशा की तरह जंगल की ओर आकाश में प्रकाश की रेखाएं चमक रही थीं। बीच-बीच में बन्दूकों की आवाज सुनाई देती। जिवागो एक क्षण के लिए रुका। बोला—यह है बर्था, सोलह इंजी जर्मनी बम। इस छोटे से बम का वजन दो सौ सोलह पाउण्ड है। इसक बाद जब वे अपनी बातचीत में लगे तो भूल गये कि वे किस विषय पर बातचीत कर रहे थे।

'सारे गांव में इतनी बदबू किस चीज की आ रही है ? गांव में घुसते ही मेरा दम घुटने लगा था।'

—'मुझे मालूम है कि तुम्हारा मतलब क्या है ? यह पटसन है। यह यहां बहुतायत से होती है। इस पौधे में चिपचिपापन और सड़ांध वाली गंध होती है। इन पटसन के खेतों में लड़ाई में मारे गये लोगों की लाशों का तब तक पता नहीं चलता, जब तक कि वे बदबू मारने न लगें। चारों ओर मृतक मनुष्यों की ही यह दुर्गन्ध है।'

दूसरे दिन जब जिवागो खाना खाने घर आया तो उसने मिशा से कहा—तुम यहां से जाने के लिए बहुत उत्सुक थे न ? अब हम सब यहां से विदा हो रहे हैं। तुम्हारा सौभाग्य—यह नहीं कह पाऊंगा—क्योंकि यह सौभाग्य नहीं है। हम यहां से बुरी तरह पराजित होकर खदेड़े जा रहे हैं। पश्चिम से दबाव पड़ रहा है। सिर्फ पूर्व का रास्ता खुला है। तमाम मेडिकल-यूनिट को निकल जाने का हुक्म मिल गया है। कल अथवा परसों हम लोग यहां से चले जाएंगे। पता नहीं, कहां किस ओर ?

—'क्यों जी कारपेन्को महाशय, आपने गोर्डन साहब के कपड़े अभी तक धोये या नहीं ? हमेशा यही होता है।' कारपेन्को साहब इस सवाल के जवाब में हमेशा यही कहेंगे कि उन्होंने अपनी लड़की को कपड़े धोने के लिये दे दिये हैं और यह लड़की कौन है, कहां है, इस बारे में न वह खुद जानता है और न किसी को ही कुछ मालूम है।

मीशा ने जिवागो की कमीज उधार मांगने के लिए माफी चाही और नौकर झूठे बहाने करता रहा। जिवागो ने किसी ओर ध्यान नहीं दिया।

—'यही फौजी जिन्दगी हम लोगों के नसीब में लिखी हुई है। जैसे ही

कोई एक स्थान पर रहने का थोड़ा अभ्यस्त हो जाये, उसे दूसरी जगह के लिए रवाना हो जाना होगा। जब मैं यहां आया था, मुझे यहां का कुछ भी पसद नहीं था और अब भगवान की दया से, मुझे यहां भी मुश्किल से याद आयेगा कि यहां की कोई चीज मेरे विपरीत भी थी। अब मुझे ऐसा लगने लगा है कि मैं सारी जिन्दगी यहां गुजार सकता हूं। लगता है कि कोने में पड़े स्टोव की ओर देखते हुए, खपरैल पर पड़ने वाली सूर्य की रोशनी की ओर ताकते हुए और उसके आरपार पेड़ों की छाया को निहारते हुए, मैं सारी जिन्दगी यहां गुजार सकता हूं।'

वह तैयार हो गये।

रात के समय बंदूक की आवाज, भागते हुए लोगों की पदचाप और हो-हल्ले के कारण उनकी नींद खुल गयी। गांव में भयंकर आग लगी थी ! खिड़कियों पर आग की परछाईं पड़ रही थी। जिवागो ने नौकर को पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा। मालूम यह हुआ कि जर्मन घुस आये हैं। जिवागों फुर्ती से अस्पताल की ओर भागा। वहां जाने पर मालूम हुआ कि यही हकीकत है। गांव में आग धधक रही है। अस्पताल खाली किए जा रहे हैं। इस समय 'खाली करने का हुक्म' प्राप्त करने का भी अवकाश नहीं था।

'सुबह से पहले हम यहां से चल देंगे। पहले जत्थे के साथ तुम चले जाना। गाड़ी तैयार है। मैंने तुम्हारे लिए व्यवस्था कर दी है। अच्छा, खुदा हाफिज ! चलो, मैं तुम्हें पहुंचा आऊं, ताकि तुम्हें ठीक जगह मिल जाए।' जिवागो ने कहा।

दीवार के सहारे झुकते हुए वे गांव की गलियों की ओर दौड़ पड़े। सामने गोलियां चल रही थीं और चौराहे पर बमों का फूटना स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। मानो परिकल्पित छतें मैदानों के ऊपर उड़ रही हों।

—'और तुम ?' गोर्डन ने दौड़ते हुए पूछा।

—'मैं दूसरे जत्थे के साथ आ रहा हूं। मुझे लौटकर अपना सामान इकट्ठा करना है।'

गांव के किनारे से ही वे बिदा हो गये। गाड़ियों और यात्रियों का दल

रवाना हो गया। हाथ हिलाकर डाक्टर जिवागो ने अपने मित्र को विदा दी। जलते हुए खलिहानों के प्रकाश में थोड़ी देर और जिवागो दिखाई देता रहा।

जिवागो फुर्ती से, संरक्षण के लिए मकान की ओर भागा। कुछ ही गज दूर रहा होगा कि उसके पांव में फूटे हुए बम का एक टुकड़ा लगा, रक्त से सना हुआ वह बीच रास्ते में बेहोश होकर गिर पड़ा। अस्पताल के आफिसरों के वार्ड में जिवागो का स्वास्थ्य सुधर रहा था। यह अस्पताल एक छोटे से शहर में था। यहां एक रेलवे-लाइन थी और यह हैडक्वार्टर के बिल्कुल समीप था।

फरवरी के अंत का गर्मी से भरा हुआ दिन था। उसके बिस्तर के पास वाली खिड़की खुली पड़ी थी। खाना खाने से पहले का समय काटने में तमाम मरीज व्यस्त थे। चर्चा का विषय थी नई नर्स—जो कि अभी-अभी अस्पताल में आई थी और वहां का दौरा करने वाली थी। उसके बिस्तर के ठीक सामने के पलंग पर गल्यूलिन अखबार पढ़ते-पढ़ते गुस्से से चिल्लाने लगता था।

सेंसरशिप के कारण अखबार के कालम खाली पड़े थे, यही उसके क्रोध का मुख्य कारण था। यूरा अपनी पत्नी का पत्र पढ़ रहा था। यह चिट्ठी युद्धस्थल के डाकघर द्वारा हाल ही में दिया गया था। हवा के कारण कागज की फरफराहट सुनाई दे रही थी। किसी के हल्के पदचापों ने उसका ध्यान भंग कर दिया। उसने नजर उठाकर देखा। लारा वार्ड में आ गयी थी।

जिवागो और गल्युलिन दोनों ने उसे पहचान लिया था। कई दिनों से मौसम खराब था। रात में अशांत, गर्म धरती की सीलभरी गंध के साथ हवा चलती रही। जनरल हैडक्वार्टर से अनेक प्रकार के समाचार आ रहे थे। अन्तर्भाग से खतरे की सूनना देने वाली अफवाहें उड़ रही थीं। बीच-बीच में पीटर्सवर्ग के साथ तार का सम्बन्ध टूट जाता। यूरा, गल्युलिन तथा अन्य मरीजों के साथ दो-चार शब्दों में थोड़ी बहुत बातचीत करके लारा ने सुबह और शाम का दौरा समाप्त किया। वह सोच रही थी यूरा के बारे में। कितना विचित्र प्राणी है। नौजवान और निष्ठुर। छोटी-सी नाक के कारण उसे खूबसूरत तो नहीं कहा जा सकता; लेकिन बोलने का उसका संयत

तरीका। इस्तेमाल किये जाने वाले शब्दों का सुन्दर चुनाव। कुछ भी हो, उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। मेरा काम है, अपना कर्तव्य पूरा करना। वह कारण क्या था ? विस्फोट के ध्वंसावशेष में ही वह दफन हो गया ? मैं सब समझती हूं, कृपया मुझे सब कुछ बता दो। मेहरबानी करके घबराओ मत और संकोच मत करो।'

गल्युलिन का साहस उसका साथ नहीं दे पा रहा था। सान्त्वना देने के लिए कोई झूठी बात उसे खोजे नहीं मिल रही थी।

पाशा को बन्दी बना लिया गया। अपनी टुकड़ी से वह बहुत आगे निकल चुका था। फौज चारों ओर से घेर ली गयी; और काट डाली गयी थी। उसे आत्मसमर्पण के लिए बाध्य किया गया था।

लारा ने उस पर विश्वास नहीं किया। इस अनपेक्षित आकस्मिक मुलाकात और समाचारों से वह सिहर उठी थी और नहीं चाहती थी कि वह उपस्थित अपरिचित लोगों के सामने बेहोश होकर गिर पड़े।

वह तेजी के साथ बरामदे की ओर भाग गयी। थोड़ी देर बाद जब वह वापस लौटकर आई तो बाहर से बिल्कुल शांत दिखाई दे रही थी। उसे डर था कि गल्युलिन से उसने जरा भी बात की तो उसके मुंह से चीख निकल जायेगी।

इसलिए जान-बूझकर उसकी उपेक्षा करती हुई, जिवागो के पास आकर भावनाहीन स्थिर स्वर में उसने पूछा—'कैसे हो ? अब आपकी तबीयत कैसी है ?'

'धन्यवाद ! मैं डाक्टर हूं। अपनी देखभाल मैं खुद कर सकता हूं। मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं।'

लारा ने सोचा, उसकी आवाज में बुरा मान जाने की ध्वनि क्यों है ? उसने आश्चर्य से उस छोटी नाक वाले चेहरे की ओर देखा, उस पर किसी प्रकार का कोई भी प्रभाव नहीं दीख रहा था।

9

लारा और डा० जिवागो एक-दूसरे के सम्पर्क में आते ही रहे। यूरा स्वास्थ्य लाभ कर चुके थे। जिवागो के लड़के का नाम शाशा रखा गया था। जिवागो ने अपनी पत्नी को लिखा—मैं पड़ोस की सेना की कुछ टुकड़ियों को देखने गया। उनके आचरण को अनुशासनबद्ध करने के प्रत्येक उपाय के बावजूद हालत नाजुक है। यद्यपि मैं इसका उल्लेख पहले भी कर चुका हूं। मेरा अधिकांश कामकाज एक नर्स के साथ होता है। यह मास्को की एक नर्स है जो यूराल्स में पैदा हुई थी। तुम्हें याद होगा अन्ना की मृत्यु वाले दिन स्वेंट्टिस्की की क्रिसमिस पार्टी में एक छात्रा ने एक वकील पर गोली चलाई थी। शायद इसके बाद उस पर मुकद्दमा भी चला था। मुझे याद आता है कि मिशा और मैंने इसे एक बार और देखा था। उस समय भी वह स्कूल-छात्रा ही थी। वह किसी रद्दी से होटल में रहती थी। एक बार पिताजी हमें वहां ले गये थे। मुझे यह तो ठीक से याद नहीं है कि किस सिलसिले में हम वहां गये थे। इतना ही याद है कि वह भयंकर ठंड भरी रात थी। खैर, यही लड़की लारा आन्तिपोव है। मैंने घर जाने की बहुत कोशिश की। लेकिन यह इतना आसान नहीं है। काम अधिक नहीं है और इसे आसानी से किसी को सुपुर्द किया जा सकता है। मगर समस्या है यात्रा की। या तो कोई रेल है ही नहीं; और है तो भी इतनी भरी हुई जगह मिलनी मुश्किल है। फिर भी अनिश्चित काल तक तो यह सब चल नहीं सकता। हममें से कुछ लोगों ने त्याग-पत्र दे दिये हैं तथा कुछ लोगों को छुट्टी मिल गयी है। अगले हफ्ते तक किसी भी हालत में हम लोग यहां से रवाना हो जाएंगे। लारा और गल्युलिन भी इस योजना में शामिल हैं। हम लोगों को अलग-अलग रवाना होना होगा। इससे हमें अधिक सुविधा और मौका मिल सकेगा। सो मैं इस गोरख धंधे से निकलकर अचानक किसी समय भी आ सकता हूं। यद्यपि मैं कोशिश करूंगा कि पहुंचने से पहले तुम्हें तार दे दूं।'

रवाना होने से पहले उसे टोन्या का उत्तर मिल गया। भारी दिल से आंसुओं से भीगे हुए टूटे-फूटे वाक्यों में; आंसुओं और स्याही के धब्बों के साथ अपने पति से प्रार्थना की थी। लेकिन 'वह मास्को न आये। बल्कि उस नर्स के साथ यूराल्स चला जाये जिसके कि सारे जीवन में आकस्मिक घटनाओं तथा अच्छे लक्षणों का समावेश है।'

जिवागो ने तुरन्त उत्तर लिखा—'तुम पागल हो क्या टोन्या, ये सब तुम क्या सोच रही हो ? समझ में नहीं आता कि तुम सचमुच में कुछ समझती ही नहीं हो, अथवा चीज को गहराई से सोचना ही नहीं चाहती। यदि तुम्हारे घर और तुम पर मेरा इतना अभेद्य विश्वास न होता तो युद्धस्थल पर बिताते गये इन दो भयंकर विनाशकारी वर्षों के बाद भी मैं बाकी बचता ? शब्दों से सब कुछ कहा नहीं जा सकता। जल्द ही हम मिलने वाले हैं। हमारा जीवन नये सिरे से फिर शुरू होगा और सारी बातें साफ हो जाएंगी। तुम्हारे पत्र से मुझे जो परेशानी हो रही है, वह यह है कि यदि मेरे ही कारण तुमने इस तरह का पत्र लिखा है, तो उसका अर्थ है मेरा व्यवहार ही दोषपूर्ण है। तुम्हारे सामने ही नहीं, एक और स्त्री के सामने भी मैं अपराधी हूं कि मैंने उसे भी बहम में रखा। जब वह लौटेगी, मैं उससे सच्चे दिल से माफी मांग लूंगा। तहसील तथा जिला स्तर पर तो ग्राम पंचायतें पहले से ही मौजूद थीं, स्थानीय पंचायतें गांव-गांव में स्थापित की जा रही हैं। प्रशासन के परिवर्तनों में निर्देशक का काम करने वाले अपने एक मित्र की सहायता करने के लिए वह भी वहां गयी हुई है। तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि एक ही मकान में रहते हुए भी मुझे यह नहीं मालूम कि उसका कमरा कौन-सा है। मैंने इस ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया।'

लारा को एक लम्बी यात्रा करनी पड़ी थी और जब वह लौटी तो समाचार मिला कि लारा बहुत ही थकी हुई थी। वह खाना खाकर ऊपर के कमरे में सोने चली गई है। उसने कहा है कि उसे किसी भी तरह से परेशान न किया जाये। फिर भी मेरा ख्याल है, वह अभी तक सोई नहीं होगी।

जिवागो ने पूछा—'उसका कमरा कौन-सा है ?'

इस प्रश्न को सुनकर मेडमेजिल कुछ देर तक तो आश्चर्यचकित-सी खड़ी रही। इसके बाद उसने उसके कमरे का विस्तारपूर्वक ठिकाना बता दिया। अंधेरे के धुंध में मकान तथा उनकी बाड़ एक साथ मिल गयी थी। खिड़की में से चमक रही रोशनी के कारण, बगीचे की गहराई से वृक्ष और आगे बढ़ गये थे। मौसम गर्म था और पसीने से लथपथ। पेड़ की छाल पर बत्ती की रोशनी पसीने की तरह चू रही थी।

जिवागो सीढ़ियों के पास ही रुक गया। वह सोच रहा था कि लम्बी यात्रा से लौट आने के बाद थकी हुई लारा को जगाना अशिष्टतापूर्ण और दुखदायी होगा। वह चौक में भाषण सुनने चला गया और बड़ा खिन्न हुआ।

दूसरी सन्ध्या को जिवागो लारा से मिला। वह भण्डार में थी। कपड़ों का ढेर सामने पड़ा था। वह इस्तरी कर रही थी। ऊपर के हिस्से के पिछले कमरे में भण्डार घर था।

'अच्छा ! रात को तुम आये क्यों नहीं ? मेडमेजिल ने मुझे बताया था। यद्यपि बात आपकी ठीक है। शायद मैं आपको अंदर आने ही नहीं देती। आते ही मैं सोने चली गयी ! खैर, आप कैसे हैं ? इन कोयलों का ख्याल रखना, सूट पर न गिर जायें।'

'लगता है, सारे अस्पताल के कपड़े तुम्हीं धोती हो ?

'नहीं तो ! मेरे भी तो बहुत सारे कपड़े हैं। देख लीजिए ? आप कई बार कह चुके हैं कि मैं मेल्युजिवो से चिपक-सी गयी हूं। खैर, अब मैं जा रही हूं। सच, कपड़े धोकर सामान बांधना है। ये सब काम खत्म होते ही मैं चली जाऊंगी यूराल्स और आप मास्को। एक दिन कोई आपसे पूछेगा—मेल्युजिवो नामक छोटे से शहर को जानते हो ? तब आप जवाब देंगे—मुझे ऐसी कोई चीज याद तो नहीं आती। फिर कोई पूछेगा—लारा कौन थी ? तब आप उतनी ही सरलता से जवाब दे देंगे—इसका तो नाम ही नहीं सुना।'

'शायद ऐसी ही हो। तुम्हारी यात्रा कैसी रही ? गांवों के क्या हाल चाल हैं ?'

'यह लम्बी कथा है। हे प्रभु, ये इस्तरियां कितनी जल्दी ठंडी हो जाती

हैं ! जरा वह दूसरी इस्तरी मुझे दे दो और मेहरबानी करके इसे वहां रख दो। धन्यवाद। हर गांव अलग-अलग किस्म का है। गांव तो वहां के रहने वालों पर ही निर्भर करता है। कुछ गांवों के लोग उद्यमी हैं, मेहनती हैं। यहां तक तो ठीक है। बाकी गांवों के लोग तो मानो पियक्कड़ ही हैं। ऐसे लोगों वाले गांव निर्जन और भयंकर लगते हैं।'

'क्या बेहूदगी है। वे नशेबाज क्यों हैं ? आप क्या खाक समझ रहे हैं ? अजी, यह इसलिए कि वहां कोई है नहीं। तमाम लोग सेना में भर्ती हो गये हैं। अच्छा, नई क्रांतिकारी काउन्सिल के क्या हाल-चाल हैं ?'

'नशेबाज लोगों के बारे में तुम गलत सोचती हो। खैर इस पर हम बाद में बहस कर लेंगे। काउन्सिल में बड़ी दिक्कतें हैं। जो हिदायतें दी जाती हैं, वे उपयुक्त नहीं हैं। उन्हें लागू करना मुश्किल है। कोई उन पर ध्यान ही नहीं देता। सारे किसानों को इस समय फिक्र है, भूमिप्रश्न की। मैं रजडोलनोये गया था। बहुत बढ़िया जगह है। जाकर जरूर देखो। इसे पिछले बसन्त में लूट लिया गया था और जला डाला गया था। खलिहान जले हुए हैं, फलों के वृक्ष झुलसे हुए पेड़ हैं। वहां के मकान बर्बाद हो गये हैं। जेबुशिनो नहीं था, मैंने उसे वहां नहीं देखा। फिर भी उसके बारे में काफी दंतकथाएं प्रचलित हैं कि सचमुच ऐसा बहरा-गूंगा एक व्यक्ति है। दिखने में वह कैसा है, इस बारे में भी लोग बहुत कुछ बताते हैं। कहा जाता है कि वह नौजवान है और पढ़ा-लिखा भी है।'

'कल रात को प्लाज में उस्तिन्या उसके पक्ष में बोल रही थी।'

'जैसे ही मैं वहां से वापस आया, वहां की गंदगी का तूफान यहां भी मौजूद था। एक बार ही नहीं, मैंने पचासों बार उनसे कहा है कि इस बतंगड़ को छोड़ दो।क्या हमारे पास अपनी खुद की कोई चीज नहीं है, जिसके बारे में सोच सकें। और, आज सुबह शहर के मेजर का एक नोट लिए एक नौकर आया था। उन्हें एक चांदी का टी सेट और कांच की गलासें चाहिये थीं। उनके लिए यह जीवन-मरण का प्रश्न है। कहते थे कि कल लौटा देंगे। ये बर्तन उन्हें सिर्फ रात भर के लिए ही चाहिये।कहते हैं कि हम यह सब उधार मंगवा रहे हैं। वापस लौटा देंगे। इस तरह से उधार मंगवाने की

बात मैं अच्छी तरह जानता हूं।'

उत्तेजना के कारण उसकी आवाज कांपने लगी थी। लारा ने इस्तरी करना बंद कर दिया। जिवागो की ओर गंभीरतापूर्वक विस्मयजनक दृष्टि से देखा।

जिवागो दिग्भ्रमित-सा भूल गया, कि वह क्या कह रहा था ? एक क्षण संकोचपूर्ण स्तब्धता के बाद, उसके दिमाग में जो कुछ आया, वह कहता गया—'आजकल मेरी तीव्र लालसा हो उठती है, किसी ऐसे संसार का घनिष्ठ भाग बन जाने की, जहां सृजनशील जीवन हो। और फिर ऐसे संसार के मुक्त उल्लास के साथ तुम्हारे सामने आकर खड़ा हो जाऊं। तुम्हारे सामने, जिसका चेहरा अनेक उलझनों और परेशानियों के कारण दुख से भरा हुआ है। पता नहीं, किस दिव्य लोक के प्रति तुम्हारी दृष्टि इस तरह मुग्ध रहती है ? तुम्हारे चेहरे पर आने वाले ये दुखजनक भाव न आयें, तुम अपने जीवन से सुखी रहो, और तुम्हें किसी से किसी तरह की जरूरत न हो—तुम्हारे चेहरे पर ऐसे भाव न हों, कि उदासीनता के चिन्ह और कोई तुम्हारा बहुत ही घनिष्ठ मित्र अथवा पति,(अधिक अच्छा हो, यदि वह सैनिक हो) आकर मुझे कहे कि लारा को अकेले रहने दो। उसके बारे में किसी तरह की चिन्ता करने की अब आवश्यकता नहीं। उसके बाद ही, इस बात के जवाब में उसे मार गिराऊंगा...माफ करना, मेरा मतलब यह नहीं था।'

उसकी आवाज ने फिर उसका साथ नहीं दिया। उठकर खिड़की के पास चला गया। उसे बहुत ही संकोच महसूस हो रहा था। खिड़की के पास अंधकार से ढंके हुए बगीचे की ओर उसकी बेचैन दृष्टि थी। वास्तव में उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अपने आपको संभालने की चेष्टा में वह व्यस्त था।

इस्तरी करने की टेबल को पार करके, कुछ कदम आगे बढ़ाकर लारा कमरे के ठीक मध्य भाग में खड़ी हो गई। जैसे अपने आप से कह रही हो; बोली—'इसी का मुझे डर था, मुझे...पूरा...डाक्टर जिवागो, ऐसा मत कीजिये। आप को ऐसा नहीं करना चाहिये।ओह जरा देखो तो, यह क्या

हो गया।

इस्तरी करने की टेबल की ओर वह दौड़ पड़ी। कड़क डाले हुए ब्लाउज पर रखी हुई इस्तरी में से धुआं निकल रहा था।

'डाक्टर !' इस्तरी को एक ओर खड़ी करते हुए उसने कहा, 'पागल मत बनिये। एक मिनट के लिए मेडमेजिल के पास चले जाइये। पानी पीकर वापस लौट आइयेगा और मेरे लिए आप ठीक वैसे ही बने रहिये, जिस रूप में मैं आपसे आज तक परिचित थी, और जिस रूप में मैं आपसे सदैव परिचित रहना चाहती हूं। क्या आप सुन रहे हैं ? कृपया ऐसा ही कीजिये। मैं प्रार्थना करती हूं। मैं हाथ जोड़ती हूं।'

उनके पास इससे अधिक स्पष्टीकरण थे भी नहीं। एक सप्ताह के बाद लारा चली गई। जिस दिन जिवागो विदा हुआ उस दिन बड़ी गर्मी थी।दो दिन पहले की तरह तूफान उमड़ रहा था। मिट्टी की झोंपड़ियां, बत्तखें गर्मी के मारे सफेद दिखाई दे रही थीं। हफ्तों से रेल का इंतजार करने वाली भीड़ से स्टेशन के सम्मुख के विस्तृत मैदान की घास ढक-सी गई थी। भूरे मोटे कोट पहने वृद्ध इधर-उधर समाचार और अफवाहों की खोज में मंडरा रहे थे। किशोर लड़के पड़े-पड़े छिली हुई टहनियों को घुमाकर इस तरह खेल रहे थे मानो वे भेड़ें चरा रहे हों।

रेल में जिवागो काफी देर तक सोता रहा।

वे कलूगा प्रान्त पार कर चुके थे और मास्को की सीमा में प्रवेश कर रहे थे। बीच-बीच में आने वाले स्टेशनों के नाम से जिवागो बचपन से ही अच्छी तरह से परिचित था।

युद्ध के पूर्व की शांति का साथ उसने हजामत बनाई और हाथ-मुंह धोये। नाश्ते के लिए उसके विचित्र साथी ने उसे निमन्त्रित किया था। डिब्बे में आते ही उसने अपने इस हमसफर की ओर गौर से देखा। जिवागो को जो बात सबसे अधिक खटक रही थी, वह थी उसकी अबाध बड़बड़ाहट। थोड़ी देर के लिए चुप रहना भी उसके लिए संभव नहीं था। बोलना उसे तो पसन्द बहुत था, लेकिन जो कुछ वह बोलता, उसका अर्थ कुछ भी समझ में नहीं आता। वह सिर्फ बोलने की क्रिया मात्र थी। बोलते वक्त वह ऐसे

उछलने लगता, मानो स्प्रिंग पर बैठा हुआ हो। इतने जोर से हंसता कि सुनने वाले के कान बहरे हो जायें। इस पर भी जब उसे महसूस होता कि वह अपने विचार प्रकट नहीं कर पा रहा है, तो घुटनों पर थापी देता, हाथ मलता और हंसी के मारे झूम उठता। अन्त में उसकी यह हंसी चिल्लाहट में परिणित हो जाती। पिछली रात की तमाम विचित्रता अभी मौजूद थीं। सारी बातें बेतुकी और असम्बद्ध। बिना मांगे वह सफाई देते हुए न जाने किन अपराधों को स्वीकार करने लगा। अविश्वसनीय और असम्बद्ध विवरण देते हुए वह झूठ बोलने लगा था।

जनसाधारण द्वारा मान्य विचारों का खण्डन करते हुए वह जिवागो को प्रभावित करने की चेष्टा कर रहा था। जिवागो को याद आया कि पिछली शताब्दी के शून्यवारी दार्शनिकों की यही मौलिक अवस्था थी। परेशान होकर जिवागो बरामदे में चला गया। रेल अपनी तेज रफ्तार के साथ मास्को में प्रवेश कर रही थी। ग्रीष्मकालीन मकानों से भरे बर्च के जंगल से गुजरती हुई रेल से, बिना छत के प्लेटफार्म पर खड़े स्त्री-पुरुष धूल के बादलों में लहराते हुए दिखाई दे रहे थे।जिवागो अच्छी तरह समझ गया कि वह इस समय कहां है। और थोड़ी देर बाद क्या होने वाला है; और उसे इस समय किस की प्रतीक्षा है ! अनेक प्रकार के परिवर्तन, उद्दाम हलचलें, युद्ध, विप्लव, क्रांति, विनाश के ध्वंसावशेष—यह सब पिछले तीन वर्षों की विशाल शून्यता की निरर्थकता को प्रकट कर रहे हैं। इन सब के बावजूद जो घटना सच्ची और सार्थक है, वह इस समय, इस तरह चक्कर काटते हुए वापस घर जाने की है। यह विश्वास कितना सुखद है कि उसका घर अभी भी सुरक्षित है, विद्यमान है—जिसका चप्पा-चप्पा उसे इतना प्यारा है ! यह है जीवन का समर्थ सार्थक संकेत। प्रयाणकर्ताओं का अन्तिम अन्वेषण। कलाकार की कल्पना के अनुसार अपने ही घर में नवीन रूप में लौट आना।

पत्तों से ढके हुए वन से रेल खुले मैदान में आ गई। अकस्मात् तेज वर्षा शुरू हुई। 'क्राइस्ट द सेवियर वर्च' दिखाई देने लगा। थोड़ी देर बाद शहर के गुम्बज, चिमनियां, छतें और मकान दिखाई देने लगे। अपनी

सीट की ओर जाते हुए जिवागो ने कहा—'मास्को ! चलो तैयार हो जाओ।'

पोगोरेवशिल फुर्ती से उठ खड़ा हुआ। अपने झोले में से उसने एक बत्तख निकाली और जिवागो की ओर बढ़ाते हुए बोला—'लो, इसे रखो। यही यादगार रहेगी। आपके सत्संग का मैंने बहुत सुख पाया।'

जिवागो का विरोध व्यर्थ थे। अन्त में इस भेंट को स्वीकार करते हुए उसे कहना पड़ा—'अच्छी बात है। अपनी पत्नी के लिए मैं यह उपहार ले जाऊंगा।'

जैसे उसने यह शब्द पहली बार सुना हो, वह प्रसन्नता से खिल उठा। उसके अट्टहास की आवाज से उसके कुत्ते प्रिंस का आसन डोल गया। अपने स्थान से बाहर आकर वह भी इस प्रसन्नता में दुम हिलाता हुआ शरीक हो गया। रेल स्टेशन पर आ गई। डिब्बे में अंधेरा छा गया। मानो रात हो।

10

कई चौराहों को पार करके गली के नुक्कड़ पर जिवागो ने अपने आपको अपने मकान पर पाया पर दरवाजा बंद था। घंटी बजाई। कोई जवाब नहीं मिला। अचानक टोन्या ने आकर दरवाजा खोल दिया। टोन्या खुली बांहों से उसका स्वागत कर रही थी। आलिंगन के लिए पुकार रही थी। वे एक-दूसरे की भुजाओं में बद्ध हो गए।

'पहले यह बताओ, सब अच्छे हैं न ?'

'हां ! सब अच्छे हैं। चिन्ता की कोई बात नहीं। मैंने आपको चिट्ठी में बहुत-सी बेतुकी बातें लिखी थीं। मुझे माफ कर दो। खैर, इस बारे में फिर बात करेंगे। आपने तारं क्यों नहीं दिया ? मार्केल आपका समान ले आयेगा। युगोरोवना ने इतनी देर तक दरवाजा नहीं खोला, आपको उस

समय बड़ी चिन्ता हो रही होगी ? वह बाहर गई हुई है।'

'तुम बहुत दुबली हो गई हो टोन्या। मगर सुन्दर और ठाठदार दिखाई दे रही हो। ठहरो, मैं गाड़ी वाले से निपट आऊं।'

'युगोरोवना आटा खरीदने की कोशिश में गई है। बाकी के तमाम नौकरों को भी छुट्टी दे दी गई। अब सिर्फ एक लड़की है नूशा ! आप उसे नहीं जानते। शाशा की देखभाल वही करती है। मैंने सबको बता दिया था कि आप आ रहे हैं। सब लोग आपको देखने के लिए बहुत उत्सुक हो रहे हैं, गोर्डन, डुडरोव हर कोई।'

'शाशा कैसा है ?'

'भगवान की दया से बिल्कुल अच्छा। अभी ही सोकर उठा है। गाड़ी से आये हैं न आप, टायफुस का खतरा हो सकता है...नहीं तो पहले हम उसी के पास जाते।'

'पिता ज़ी घर में ही हैं ?'

'आजकल वे संसद में सदस्य भेजने वाली काउन्सिल के अध्यक्ष हैं। सुबह से रात तक उसी में व्यस्त रहते हैं। आपको किसी ने नहीं लिखा ? आपने किराया चुका दिया है ? मार्केल, ओ मार्केल !'

वे अभी तक दरवाजे के बीच सामान फैलाये उसी तरह खड़े थे। राह चलते लोग रुककर उनकी ओर जिज्ञासाभरी दृष्टि से ऊपर से नीचे तक देख रहे थे।

सूती कमीज पर वेस्टकोट पहने, पोर्टर की टोपी हाथ में लिए मार्केल दरवाजे की ओर दौड़ते हुए, अपने मालिक का स्वागत करते हुए शोर मचाता हुआ आ रहा—'या खुदा, यूरी एण्ड्रोविच ! मेरी आंखों के तारे। आ गये तुम ? हमें भूल तो नहीं गए ? हम तुम्हारे लिए रोज दुआएं मांगते थे। भगवान ने हमारी लाज रख ली। अच्छा हुआ, तुम घर लौट आये।'

फिर दर्शकों की ओर मुड़कर उसने उन्हें झिड़कते हुए कहा—'क्यों जी आपको क्या चाहिये ? कौन-सी ऐसी विचित्र बात है कि सब मिलकर इस तरह घूम रहे हो ? चलिये, चलिये अपना रास्ता नापिए।'

जिवागो ने आगे बढ़कर मार्केल को गोद में उठा लिया।

बोला—'कैसा है रे तू मार्केल ? गधे, टोपी तो सर पर रख ले। बता तो, क्या हालचाल हैं ? बीवी कैसी है ? बच्चियां कैसी हैं ?'

'वे हो ही कैसी सकती हैं ? दिन-रात चन्द्रमा की तरह बढ़ रही हैं। और नये हालचाल यह हैं कि जब आप बड़े-बड़े कामों में लगे हुए थे, उस समय हम भी बहुत व्यस्त थे। ये गंदी सड़कें, टपकती हुई छतें, यह पागलपन, खुदा बचाये। रमजान की तरह भूखे पेट दिन काटे हैं।'

—'मैं डाक्टर से तुम्हारी शिकायत करूंगी।यूरा, यह हमेशा ऐसे ही करता रहता है। लेकिन मैं इन बेवकूफी की बातों को अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकती और वह सोचता है कि यह सब आपको पसन्द है। उसे जैसे चढ़ा दिया जाये, बस, वैसा ही तेज हो जाता है। इसे मैं अच्छी तरह से जानती हूं। उम्र हो गयी, अब तो कुछ तमीज सीखो मार्केल।'

मार्केल ने जिवागो का सामान उठाया, दरवाजा बंद किया और बिना कुछ कहे अंदर चला गया।

जिवागो ने हंसते हुए कहा—'टोन्या तुमसे नाराज है। सुना नहीं, वह तुम्हें क्या कह रही है ? वह कह रही है कि तुम्हारा दिल स्टोव के पाइप की तरह काला है।'

—'ठीक है डाक्टर साहब ! मानो चाहे मत मानो, उन लोगों ने एक सौ चालीस वर्षों से दबी पड़ी मेसन की पुस्तकें पढ़ी हैं। मैं कहता हूं, कि अब लोगों ने अपनी अक्ल बेच खाई है। लेकिन मैं कुछ बोल थोड़े ही सकता हूं ? देख लो, टोन्याजी मेरी ओर किस तरह से सिर हिला रही हैं।' मार्केल ने कहा।

—'मेंढकी को भी जुकाम होता है। तुझे आश्चर्य हो रहा है रे मार्केल। अब काफी बकवास हो चुकी। बंद कर यह सब। डाक्टर को किसी चीज की जरूरत होगी, तो वे तुझे बुला लेंगे।'

उसकी पत्नी ने बतलाया—'मामा कोल्या वापिस आ गये हैं। मगर वे बोलकोविक हो गये_कहते हैं, बुरा समय आ रहा है_आ रहा है।'

—'मैं भी यही सोचता हूं। खैर, इससे क्या होगा ! देखा जायेगा। इसी से तो सारी बातों का अंत नहीं आ जाता। जिस तरह दूसरे लोग ऐसे वक्त

का इंतजार करेंगे, और उपाय निकालेंगे वैसे ही हम भी देखेंगे कि क्या होता है।'

—'लोग तो कहते हैं कि अब जलाने की लकड़ी, पानी और बिजली तक मयस्सर नहीं होगी। बाहर से सामान आयेगा ही नहीं। लो, हम फिर रुक गये। चलो, चलें। सुनो, अर्बिट के बाजार में छोटे-छोटे लोहे के स्टोव बिक रहे हैं। मेरे पास दुकान का पता है। खत्म होने से पहले ही मैं एक स्टोव खरीद लेना चाहती हूं।'

—'ठीक है खरीद लेना। मैं मामा कोल्या की बात नहीं भूल पाता।'

—'मैं बताऊं, हम क्या करेंगे ? हम मकान के कोने के दो-तीन कमरों वाला एक हिस्सा अलग रख देंगे जो एक-दूसरे से सम्बद्ध होंगे। ये कमरे हमारे पिताजी के लिए तथा दूसरा नूशा और शाशा के लिए रहेगा। शेष सारा मकान हम दे देंगे। फ्लैट की तरह, एक अलग दरवाजा निकलवा लेंगे। लोहे के स्टोव को बीच वाले कमरे में रख देंगे और खिड़की के पास नल लगवा लेंगे। कपड़े धोने का काम, रसोई बनाने का काम और गपशप मारने का सारा काम इन्हीं कमरों में हो जायेगा। आशा तो है कि अगले शिशिर में ईंधन मिलने लगेगा।'

—'ये दिन भी गुजर जाएंगे। एक बढ़िया विचार आया, जानती हो क्या ? गृह-प्रतिष्ठा समारोह होना चाहिये।'

'अच्छी बात है। मामा कोल्या को बुलाकर यह बत्तख पकायेंगे।'

—'बहुत बढ़िया। मैं गोर्डन से कहूंगा कि वह किसी प्रयोगशाला से थोड़ी शराब ले आये।'

'अब देखिये, यही कमरा है। सूटकेस नीचे रख दो। नीचे जाकर अपना सामान ले आओ। गृह-प्रतिष्ठा के समारोह के अवसर पर डुडरोव और शूरा स्किलसिंगर को भी बुलाना चाहिये। तुम्हें एतराज तो नहीं ? मालूम है न, शौचालय वगैरह किस ओर हैं ? जाओ, कीटाणुनाशक दवा पानी में डाल देना। मैं तब तक साशा को तैयार करने के लिए नूशा को नीचे भेजती हूं। जैसे ही आप तैयार हो जाएंगे, मैं आपको बुला लूंगी।'

11

कुछ ही दिनों में उसे महसूस होने लगा कि वह स्वयं कितना एकाकी है। उसने सोचा, इसमें गलती किसकी है ? उसने वही तो पाया है, जिसकी वह अब तक तमन्ना करता रहा। उसके तमाम मित्रों में भी बड़ा भारी परिवर्तन आ गया है।

उसकी स्मृति में उनका जो स्वरूप स्पष्ट था, वे उससे नितान्त भिन्न दिखाई देते हैं। किसी का अपना निजी दृष्टिकोण नहीं। मानो सबकी विशेषताएं धूमिल पड़ गयी हों। या हो सकता है कि अतीत में, उसने इन सबके बारे में अतिशयोक्ति से ही सोचा हो। सीधे-सादे काम पर लगे हुए दो तीन साथी, टोन्या और उसके पिता—बस, इतने लोगों के बीच ही वह अपनापन महसूस कर पाता; जो कि बिना व्यर्थ की बकवास अथवा बनावटीपन उसके साथ पेश आ सकते थे। योजनानुसार कुछ ही दिनों बाद वोदका और बतख की दावत आयोजित की गयी। इस दावत में जो लोग आये थे, वह उनसे पहले ही मिल चुका था। इसलिए इस दावत को उपस्थित लोगों से मिलने का श्रेय नहीं दिया जा सकता है। उन अभावपूर्ण दिनों में इस तरह की बत्तख बड़े ऐश्वर्य की बात मानी जाती थी। साथ में खाने के लिए रोटी नहीं थी। पकी हुई बत्तख का जायका फीका पड़ गया था। कुछ ऐसा भी लगता था कि जैसे उपस्थित लोगों की इस दावत के लिए सहमति सहज सुलभ न हो। गोर्डन दवा की एक बोतल में शराब ले आया था। यह उन दिनों चोर-बाजार की प्रचलित मुद्रा थी। टोन्या ने इस शराब में अपनी इच्छानुसार कम बेसी पानी मिलाकर उसे हलका कर दिया। इस तरह कुछ कमजोर और कुछ तेज नशे का प्रभाव सिर्फ अधिक तेज शराब के नशे से ज्यादा ही महसूस हो रहा था। इससे भी लोगों में कुछ चिढ़-सी हो रही थी। सबसे अधिक खेद की बात यह थी कि सम्प्रति स्थिति में यह दावत अनुचित थी। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि इसके अतिरिक्त किसी अन्य मकान में, उस समय, उसी तरह से खाने-पीने का

आयोजन हो रहा होगा। खिड़की के बाहर अंधकार में लिपटा हुआ था, भूखा मास्को। लोग खेल-तमाशे को भूल गये थे, खाने-पीने की इस तरह की दावत को। इसीलिए यह लगता है कि सबकी तरह रहना, यही जीवनयापन का सही तरीका है। बिना किसी प्रकार का स्मृति-चिन्ह छोड़े, दूसरों में समा जाना ही जीवन का साकार स्वरूप है। जिसे दूसरों में बांटा न जा सके, ऐसा आनन्द, आनन्द ही नहीं। इस तरह की बत्तख और वोडका, जो शहर भर में एक ही घर में हों, न बत्तख है, न वोडका, आगत अतिथियों के साथ बैठे लोग गुप्त-बेचैनी महसूस कर रहे थे। पहले जो गोर्डन काफी गंभीर स्वभाव का था, वही इस समय झिझककर-झिझकर बोल रहा था; उसके स्वर में संकोच था, वाणी बुझी हुई। लेकिन सम्भवतः उसे अब अपनी प्रतिभा पसन्द नहीं थी।

डुडरोव अभी तक आया नहीं था। अपनी गप में उसके ब्याह की बात जोड़ते हुए गोर्डन बता रहा था कि उसकी शादी हुए लगभग एक वर्ष हुआ होगा और वह अपनी बीवी से अलग है। अपनी कथा के अन्तिम आशय तक पहुंचते-पहुंचते उसने बताया कि यह विवाह डुडरोव ने गलती से कर लिया था। उन दिनों वह नौकरी कर रहा था और उनके मामले की जांच हो रही थी। अपने अधिकारियों को सलाम न करने का आरोप उस पर लगाया गया था। अपने भुलक्कड़ स्वभाव के कारण उसे बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। नौकरी से छुट्टी पाने के बाद भी अपनी आदतों के अनुसार कंधे पर लगी हुई पट्टियों की ओर देखने की उसकी आदत गयी नहीं। वह बार-बार कंधे उचकाकर उस ओर निगाह डाल लिया करता। वह बहुत विक्षिप्त हो गया था। उसका दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा था।

कहानी को आगे बढ़ाते हुए वक्ता ने कहा—एक बार वोल्गा नदी के किनारे एक वोट का इंतजार करती हुई दो लड़कियों उसे मिलीं। वह भी वोट का इंतजार कर रहा था। सेना के दिनों की खुमारी अभी भी उसमें बाकी थी। उन दोनों लड़कियों में से छोटी के प्रेमजाल में वह फंस गया और उसने तुरन्त उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। क्या यह कथा मजेदार नहीं है ? वक्ता ने पूछा। उसने अपनी कहानी को संक्षिप्त करके

जल्द ही खत्म करना पड़ा, क्योंकि कथा के नायक के अंदर आने की आवाज सुनाई दे रही थी। डुडरोव आ गया।

डुडरोव का स्वभाव बिलकुल विपरीत था। मौसम की सूचना देने वाले यंत्र के कांटे की तरह हवा के प्रतिकूल पीठ कर देने वाली अस्थिरता और अनिश्चितता उसके स्वभाव में थी। अब वह एक उद्यत विद्वान हो गया था। पढ़ते समय उसे एक राजनीतिक बंदी को बचाने के आरोप में स्कूल से निकाल दिया गया था। वह चित्रकला के अनेक स्कूलों में भटकता रहा; अन्त में उसे साहित्यिक विभाग में जगह मिल गयी। अपने सहपाठियों से बहुत बाद उसे डिग्री मिली। इसके बाद वह रूसी तथा विश्व इतिहास का अध्यापक नियुक्त हो गया। इस समय वह भयंकर इवान की भूमि नीति तथा 'सेंट जस्ट' पर एक पुस्तक लिख रहा था। बड़े प्रेम से प्रत्येक विषय पर उसने संभाषण किया। उसकी आवाज स्थिर थी। बोलते समय उसकी स्वप्निल आंखें एक स्थान पर केंद्रित रहतीं जैसे कि वह भाषण दे रहा हो।

सन्ध्या के अन्त तक एक दावत में काफी शोरगुल सुनाई देने लगा। लोग बहस करते-करते चिल्लाने लगे थे। इसी समय शूरा स्किलसिंगर अंदर आ धमकी। इस उत्तेजना भरे शोरगुल को बढ़ावा देते हुए अपने स्वभावानुसार वह लोगों की मजाक उड़ाने में व्यस्त हो गयी। डुडरोव जिवागो का बचपन का साथी हैं। वह उसे हमेशा 'तू' अथवा 'तुम' ही कहता था। बड़े हो जाने पर भी 'आप' उससे नहीं कहा जाता। उसने पूछा, तुमने मायाकोवेस्की की 'युद्ध और शांति' अथवा 'मेरी रीढ़ की बंसी' कविता पढ़ी या नहीं ? इस भयंकर शोर में उसे जिवागो का उत्तर सुनाई नहीं दिया। इसलिए उसने एक बार फिर पूछा—तुमने 'मनुष्य' अथवा 'मेरी रीढ़ की बंसी' नहीं पढ़ी ?

—'एक बार तो कहा मैंने। तुम सुनते ही नहीं। मुझे मायाकोवेस्की बहुत पसन्द है। वह तो डोस्कोवस्की का ही एक क्रम है। या यों कहो कि उसी की किताबों का ही कोई चरित्र कविता लिखने लगा है। उसकी 'युवा-विद्रोही', 'कच्ची जवानी', या 'हिप्पोलिट' या 'राशनकोलनिकोव' —सभी विषयों को समाविष्ट करने की उसकी अद्‌भुत काव्य शक्ति ! समाज के मुंह पर तमाचा मारते हुए खरे तरीके से कहने का उसका

तरीका ! वाह !

नशे के कुछ घंटों पहले तक तो इन तमाम बातों की परवाह करते रहे। इसके बाद राजनीति की बहस से परे, चिल्लाने, हंसने, एक-दूसरे की पीठ ठोकने, जोर-जोर से एक ही सांस में बोलने तथा गला घोट देने वाली उत्तेजना के मारे उन तमाम बातों को भूल गये।उनकी समानता का सबसे बड़ा कारण अथवा तथ्य था कलाकार की सृजनशील भावनाओं से भरा हुआ उनका दिल। वे रिश्तेदार थे। एक-दूसरे का इतिहास उन दोनों के बीच था। स्मृतियों की लहरें उठतीं और वे जीवन की अनेकानेक घटनाओं और परिस्थितियों की चर्चा और मीमांसा करने बैठ जाते। पहली भेंट इस प्रकार हुई थी। अन्य लोगों के लिए कोल्या मामा को पहचानना मुश्किल था। इसके बाद तो वे एक-दूसरे से कई बार मिले।

कोल्या मामा जानते थे कि वे मास्को में अतिथि हैं। अपनी यह धारणा उन्हें पसंद थी।मास्को के बारे में ही नहीं, पीटर्सवर्ग अथवा किसी भी स्थान विशेष के बारे में उनकी यही मान्यता थी। वे इसी में आनन्द लेते कि लोग उन्हें बैठकबाज राजनीतिज्ञ और वाणी-वीर समझते हैं। वे यही कल्पना किया करते थे कि पैरिस की रोलेण्ड महोदया की तरह आश्रय के अड्डे उन्हें मास्को में भी मिल जायेंगे। मास्को के पिछले भाग पर, सड़क के किनारे के फ्लैटों में गृहणियां उनका स्वागत करतीं।

अपनी स्त्री-मित्रों के यहां जाकर वे उनकी तथा उनके पतियों की हल्की चुटकी लेते, मजाक करते। उनके पिछड़े हुए दृष्टिकोण के लिए उन्हें चिढ़ाते। एक समय जिस तरह उन्हें अपनी शंकायुक्त जिज्ञासामय विद्वता पर गर्व था, उतना ही आज उन्हें समाचार-पत्रों से घनिष्ठ रूप से परिचित होने पर गौरव था। कहा जाता है कि स्विट्जरलैण्ड में वे एक अनिश्चित प्रेम-काण्ड, एक व्यवसाय और एक आधी लिखी पुस्तक छोड़ आये हैं। मास्को में सिर्फ एक डुबकी लगाने के लिए वे चले आये। यहां से सुरक्षित बचे, तो उनका इरादा था कि आल्प्स पर्वत की ओर चल पड़ेंगे। वे बोलशेविकों के समर्थक थे। अक्सर उन दो वाम-पक्षीय सामाजिक क्रांतिकारियों का उल्लेख किया करते, जो कि पत्रकार थे और मिरोश्का

पोमोर तथा सिल्विया कोटेरी के बनावटी नामों से लेख लिखा करते थे। उनके विचारों के साथ उनका मेल खाता था। वे अक्सर अपनी बातचीत के दौरान में उनका उल्लेख किया करते थे।

यूरी के ससुर महाशय गरजते—'बड़ी भयंकर बात है निकोलाय निकोलायविच ! तुमने इस सब मिरोश्काओं और कटोरियों का कैसा कीचड़ जमा कर रखा है ?'

—'कोटेरी सिल्विया !'

—'नाम से क्या फर्क पड़ जायेगा ? चाहे वह कटोरी हो अथवा कोटेरी।'

फिर भी वह है कोटेरी ही—निकोलाय आग्रह करते।

बस, इसी तरह उनका विवाद चलता। दावत की रात को शूरा स्किलसिंगर देर से पहुंची। पुरुषों की टोपी और पूरा सूट पहने, कमरे को पार करके, शिकायतों और दोषारोपणों की बौछार के साथ वह वहां उपस्थित हो गयी।

सबसे हाथ मिलाते हुए वह पूछती जाती—'डा० टोन्या कैसी हो ? कैसे हो एलेक्जेण्डर ? मानोगे, यह ठीक नहीं हुआ है। सारे मास्को को मालूम हो गया है कि यूरा वापस लौट आया और टोन्या, तुमने मुझे बताया तक नहीं ? शायद मैं इस लायक हूं नहीं। कहां है यूरा ? अच्छा, आप कैसे हैं जी ? मैंने यह पढ़ लिया है। विचित्र है। इस लेख की कोई बात समझ में नहीं आती। फिर भी आसानी से कहा जा सकता है कि इसमें असीम प्रतिभा समाई हुई है। कैसे हो निकोलाय ? ठीक हो न ! यूरा, मुझे तुमसे कुछ खास बात करनी है। फिर मिलूंगी। अरे बच्चों, तुम यहां भी हो। बहुत अच्छे। गोगोचका, गूसी-गूसी-गेण्डर ! खाना-पीना चल रहा है ? चलने दो। मैं भी तुम लोगों के साथ ही आने वाली हूं ? अब तक तुम लोगों को मालूम ही नहीं हुआ होगा कि इस दावत में किस चीज की कमी है ? तुम नहीं जानते कि संसार में क्या कुछ हो रहा है ? किताबों में नहीं, असली मजदूरों को, असली सिपाहियों की सामूहिक सभा को देखो। उनसे लड़ाई में विजय पाने के लिए कहो और वे विजय प्राप्त कर लेंगे।

यूरा, तुम देखते तो पागल हो गये होते।'

कोलाहल के कारण शूरा की बातचीत में व्यवधान पड़ने लगा था। वह जिवागो के पास आई, उसके पास अपना मुंह ले जाकर उसने उसका हाथ अपने दोनों हाथों में थाम लिया—'मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगी। असली लोगों को मैं तुम्हें दिखाऊंगी। ऐन्थ्यूस की तरह मिट्टी का सान्निध्य प्राप्त करना चाहिये। तुम मेरी ओर इस तरह घूर-घूरकर क्यों देख रहे हो ? मैं वही पुरानी बूढ़ी शूरा हूं। तुम्हें मालूम है यूरा, पुराने वेस्टजेब विद्यालय में मैंने पूरा जेल देखा है। मैंने कई बाधाओं का सामना किया है। तुम्हारा क्या ख्याल है ? सच बताना, तुम क्या सोचते हो ? सचमुच हम इन लोगों को जानते ही नहीं। मैं अभी-अभी वहीं से आ रही हूं। मैं उनकी भीड़-भाड़ में बिल्कुल ठीक थी। उन लोगों के लिए मैं एक पुस्तकालय की स्थापना कर रही हूं।'

वह शराब के नशे में धुत्त थी। यूरा का सिर भी चक्कर खा रहा था। उसकी समझ में नहीं आया कि शूरा कब कमरे के एक कोने में, और वह दूसरे कोने में चला गया। वह एक टेबल के किनारे खड़ा अप्रत्याशित रूप से भाषण देने लगा।

सब लोगों ने तालियां बजाईं। सबने इसे विनोदमय चुस्त संभाषण माना था।

जिवागो खुद नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है और उसने कितनी आसानी से कितने भीषण अभाग्य की भविष्यवाणी कर दी है। भविष्य चाहे कितना ही सुनहला और गौरवमय क्यों न हो, चाहे उसमें अच्छाई की अगाध तृष्णा को तृप्त करने की कितनी ही क्षमता क्यों न हो, वह शक्तिहीनता की भावना से आच्छादित था। अतिथि विदा हो गये। उनके जाते ही पर्दे गिरा दिए गये। खिड़कियां खोल दी गयीं। उषाकाल के बादल पीले पड़ने लगे थे।

किसी की आवाज सुनाई दी—'हम यहां मजाक करते रहे और उधर तूफान के आसार नजर आ रहे हैं।'

शूरा ने भी कहा—'हां मैं भी तूफान में फंस गई हूं।'

वक्त गुजरता गया। अस्पताल में डाक्टर जिवागो की गाड़ी घिसटती गई और सर्द ऋतु का आगमन हो गया। इन्हीं सर्दियों में साशा को ठंड लग गई।

जिवागो ने कहा—'मैंने एक बार नहीं, बीस दफे कहा है कि उसे स्टोव के पास मत जाने दो। सर्दी के बजाय गर्मी उसके लिए अधिक घातक है। उसके गले में पीड़ा थी, शरीर तप रहा था, कहीं अधिक बीमार न हो जाये।'

डॉक्टर ने उसका परीक्षण करना चाहा तो बालक विरोध करता रहा, उसने दांत भींच लिये, चिल्लाया। समझाने, बहलाने और धमकाने का उस पर कोई असर नहीं हुआ। एक बार भूल से उसका मुंह खुल गया और डाक्टर ने इस मौके से लाभ उठाकर चाय का चम्मच उसके मुंह में रख दिया। हलक में सूजे हुए टान्सिल के सफेद धब्बे साफ दिखाई दे रहे थे। इन धब्बों को देखकर एकबारगी वह चिन्तित हो उठा। उसने अच्छी तरह से परीक्षण किया। सौभाग्य से यह डिप्थेरिया नहीं था। लेकिन तीसरी रात को साशा तीव्र कंठ पीड़ा से व्याकुल हो उठा। वह सांस नहीं ले पा रहा था, न ही उसके पास इसके निवारण का ही कोई उपाय था। दूध की सख्त जरूरत थी। लेकिन सड़क पर जोरदार लड़ाई चल रही थी। बन्दूक तथा तोपों की गड़गड़ाहट एक मिनट के लिए भी थम नहीं पाती थी। जान की बाजी लगाकर, यदि वह किसी तरह सड़क पार कर भी लेता, तो भी उसे कहीं दूध नहीं मिल पाता। जब तक स्थिति काबू में नहीं आ जाती, जब तक उसका कोई निश्चित परिणाम सामने नहीं आ जाता, शहर का जीवन मृतप्राय: था। फिर भी परिणाम स्पष्ट था। अफवाह यह थी कि मजदूर बाजी जीत रहे हैं। यद्यपि नौसिखिए सैनिक लड़ाई लड़ रहे थे; मगर तितर-बितर हो चुके थे।

स्विटसेव जिले पर सेना की टुकड़ी का अधिकार हो गया था और केन्द्र की ओर उनका जोर बढ़ता जा रहा था। जर्मन-सीमा वाली टुकड़ी तथा काम करने वाले जवानों का दल, सड़क पर खुदी हुई खाइयों के मोर्चे पर डटे हुए थे।वे सड़क के किनारे रहने वाले उन लोगों को ताक रहे थे जो

कि अपने घर के सामने, उनके खड़े होने पर, उनकी मजाक उड़ाया करते थे। शहर के इस भाग में कुछ हलचल आरम्भ हो रही थी। तीन दिन तक जिवागो के घर में एक तरह से बंदी रहने के बाद गोर्डन और निकोलाय निकोलायविच को मुक्ति मिली थी। साशा की बीमारी के समय उनकी उपस्थिति से जिवागो को काफी तसल्ली मिली। यद्यपि टोन्या का काम उनके कारण बहुत अधिक बढ़ गया था, फिर भी उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया। शीत ऋतु अपने विकराल रूप में आकर उपस्थित हो गयी। पिछली शीत-ऋतुओं जितनी तो यह भयंकर नहीं थी, फिर भी उसी प्रकार काली भूखी और सर्द ! जो कुछ परिचित था वह निराशा के अतल अंधकार में समा गया था और जीवन की आधारशिलायें बदल गयीं थीं।

अमानवीय रूप से जीवन को पकड़े रखने के बावजूद भी वह मानो हाथ से फिसलता जा रहा था। एक के बाद एक—तीन भयंकर शीत ऋतुएं क्रमश: आ गयीं। मानो अब ये इस बार एक-दूसरे से मिल गयी हों, उन्हें विभक्त किया नहीं जा सकता। पुराने जीवन के ढर्रों के साथ, ये नए तरीके अभी तक जड़ नहीं जमा पाये थे। गृहयुद्ध छिड़ने के एक साल बाद भी जीवन के इन दो विभन्नि प्रकारों में अब अधिक विरोध नहीं था। फिर भी वे पहेली के दो हिस्सों की तरह अलग-अलग पड़े थे और आपस में मिल नहीं पा रहे थे।

जगह-जगह नये चुनाव हो रहे थे। नगरपालिकाओं की व्यवस्था स्थापित करने को कोशिश जारी थी। गृह निर्माण, व्यापार और कारखानों का सिलसिला जमाया जा रहा था। काले चमड़े की पोशाक पहने प्रत्येक विभाग का अधिकारी दृढ़ इच्छाशक्ति, असीम अधिकार, डांट-डपट और पिस्तौल के बल पर बिना सोये अथवा हजामत किये, दिन-रात काम में लगे हुए थे। जैसे चोरों के साथ दयाहीन व्यवहार किया जाता है, ठीक इसी तरह अजीब मुस्कान के साथ, वे बुर्जुवा परम्परा के औसतन सरकारी सामान रखने वाले लोगों के साथ बात करते! योजनानुसार सभी कुछ नये सिरे से संगठित किया जा रहा था।

कम्पनी के बाद कम्पनी, सहकारी उद्योगों के साथ सहकारी उद्योग !

सभी कुछ बोल्शेविकों से प्रभावित हो गया था। 'हॉली-क्रास' अस्पताल अब दूसरे परिष्कार के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। वहां भी बहुत-सा रद्दोबदल हुआ। कुछ लोगों ने त्यागपत्र दे दिये। कुछ लोगों को उनके काम के पर्याप्त न होने के कारण निकाल दिया गया। कुछ डाक्टर ऐसे थे जो फैशन के रूप में प्रैक्टिस किया करते थे। बहुत अधिक बोलते, अधिक फीस लेते, समाज में अधिक प्रतिष्ठा पाते। उन्होंने अपने स्वार्थ के कारण ही त्यागपत्र दिये थे; मगर फिर भी उनका दावा था कि उन्होंने विरोध-स्वरूप ऐसा किया है। जो लोग वहां काम कर रहे थे, उनके प्रति इन लोगों का हेय दृष्टिकोण था। जिवागो अभी वहीं काम कर रहा था। बहुत दिनों तक यूरा पर टायफुस का आक्रमण नहीं हुआ। फिर जिवागो परिवार की बर्दास्त करने की अच्छी-खासी अग्निपरीक्षा हो गयी। उनके पास कुछ भी नहीं था। वे भूखों मर रहे थे। जिवागो उस पार्टी-सदस्य के पास भी आया था जिसे उसने एक बार डकैतों द्वारा किए गए हमले से बचाया था। उसने यथासंभव उसकी मदद की। लेकिन अब तक गृह-युद्ध छिड़ गया था। वह मुश्किल से मास्को में रह पाता। साथ ही सुखों के अभाव को भुगतने की बात को वह स्वाभाविक मानता था। वह स्वयं भूखा है, इस बात को उसने प्रकट नहीं होने दिया।

ब्रेस्ट-स्ट्रीट के अपने पुराने मरीज के यहां भी वह गया। लेकिन पिछले महीनों में वह युवक गायब हो गया था और उस स्त्री-मरीज के बारे में कुछ भी मालूम नहीं हो सका। गेल्युलिन की मां फातिमा चाची के यहां जाने पर वे भी उसे मिली नहीं। अधिकांश किरायेदार नये थे। देमिना युद्ध स्थल पर थी। एक दिन सरकार द्वारा नियंत्रित कीमत पर उसे ईंधन का भाग मिला। उसे लाने के लिए उसे विन्दवा स्टेशन तक जाना था। अन्तहीन में शेचस्काय गली को पार करके वह घर लौट रहा था। उसकी निगाह गाड़ीवान पर लगी हुई थी, जो कि उस अप्रत्याशित बहुमूल्य खजाने को लिये चल रहा था।

अचानक महसूस हुआ कि गली उसे बिल्कुल भिन्न रूप में दिखाई देने लगी। उसके कदम लड़खड़ा रहे हैं। आगे चला नहीं जाता। 'यह है, यही ! हो

गया। यह टायफुस है !' उसके नीचे गिरने पर ड्राइवर ने उसे उठाकर लकड़ियों के ढेर पर रख दिया। पता नहीं वह कैसे और कब घर लौटा। पन्द्रह दिन तह वह बारम्बार बेहोश होता रहा। स्वप्न में उसने देखा कि टोन्या ने उसके लिखने की टेबल पर दो गलियों की लकीरें खींच दी हैं—एक गार्डन्-कोच-स्ट्रीट और दूसरी गार्डन-ट्रायम्फ स्ट्रीट। पास में टेबल-लैम्प जला दिया गया है। उसकी गर्म नारंगी चमक से सारी सड़क प्रकाशमान हो गयी है—ताकि अब वह लिख सके; सो वह लिख रहा था। वह उस बात को लिख रहा था, जिसे बड़े अर्से से लिखना चाहता था; लेकिन लिख नहीं पाया था। अब जैसे सब कुछ सरल हो गया हो। उसने उत्सुकता के साथ वही बात लिखी, जो कि वह कई बरसों से लिखना चाहता था; केवल बीच-बीच में किरगिज आंखों वाला एक लड़का बिना बटन का रेन्डियर-कोट पहने हुए, रास्ते में जा खड़ा होता। उसे निश्चय हो गया कि यह मृत्यु-दूत है। अथवा सीधे तरीके से कहा जाय तो—यही मृत्यु है। लेकिन यह मृत्यु नहीं हो सकती, जो कि उसे लिखने के लिए प्रेरित कर रही है, मदद कर रही है।

मृत्यु उपयोगी नहीं हो सकती, उसके लिए सहायक होना सम्भव नहीं। उसकी कविता का शीर्षक न तो श्मशान भूमि ही था, न मृत्यु के बाद का पुनर्जन्म ही। उसकी कविता का विषय था इन दोनों के बीच के दिन—शीर्षक था अशान्ति।

धीरे-धीरे अच्छा होने लगा। पागल व्यक्ति की तरह पहले तो वह प्रत्येक वस्तु की ओर निहारता रहा। उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। उसे किसी एक चीज का दूसरी वस्तु के साथ सम्बन्ध दिखाई नहीं देता। किसी वस्तु के प्रति कोई कौतूहल नहीं होता।

बिस्तर पर उसके खाने की व्यवस्था टोन्या कर रही थी। वह भूल गया कि ऐसी चीजें अब भी कायम हैं। उसे उसमें परियों की कहानियों अथवा कविता जैसा स्वाद आता। मानो यही रोग मुक्ति का उपयुक्त इलाज हो। फिर भी, जल्द ही वह सोचने लायक हो गया।

उसने टोन्या से पूछा—'यह सब तुम्हें कहां से मिल गया ?'

'आपका ग्रोन्या हमारे लिये यह सब कुछ ले आया था।'

'ग्रोन्या कौन ?'

'ग्रोन्या जिवागो।'

'ग्रोन्या जिवागो ?'

'हां। ग्रोन्या जिवागो। आपका सौतेला भाई युवग्राफ। टोमस्क का आपका सौतेला भाई। जब तक आप बीमार थे, वहं यहां रोज आया करता था।

'रेण्डियर की टोपी पहनता है ?'

'अरे ! तो आपने उसे देखा है ? आप तो लगभग अचेत ही थे। वह कह रहा था कि वह आपको अच्छी तरह से जानता था। किसी एक मकान के पास उसने आपको देखा भी था। वह आपसे बात करना चाहता था, लेकिन उसे बहुत डर लग रहा था। आपके प्रति उसकी बड़ी श्रद्धा है। जो कुछ भी आप लिखते हैं, वह अवश्य पढ़ता है। ये तमाम चीजें वही हमारे लिए ले आया है। चावल, मुनक्का, चीनी ! अभी वह चला गया है। वह चाहता है कि हम भी उनके यहां चलें। अजीब लड़का है। मेरा ख्याल है, वह सरकार से किसी न किसी रूप में सम्बन्धित है। वह कहता था कि एक-दो साल के लिए हमें शहर से बाहर चले जाना चाहिये। गांवों की ओर चल दो।'

तब जिवागो ने एक गहरी सांस ली। और अन्तत: उनकी यात्रा शुरू हो गई।

12

मार्च के अन्तिम दिनों की गर्मी बनी थी। यह क्षणिक गर्मी असल में भयंकर सर्दी का प्रकोप का संकेत थे और जिवागो परिवार सफर पर रवाना हुआ था। यह सफर परेशानी से भरा था। तीन दिनों तक यात्रा करने के बावजूद वे मास्को से अधिक दूर नहीं जा सके। ठंड काफी थी। खिड़की

से बाहर के रास्ते, मैदान, जंगल और ग्रामीण घरों की, बर्फ में गहराई से डूबी हुई छतें दिखाई दे रही थीं। जिवागो परिवार को खिड़की की एक ओर, छत के नीचे, सोने की पटरी की ऊपरी पंक्ति का एक कोना मिल गया था। यही सबसे बड़ा सौभाग्य था।

टोन्या ने पहले कभी सरकने वाले भारी दरवाजों वाली और जमीन से काफी ऊंची मालगाड़ी में यात्रा नहीं की थी। पहले तो औरतों को उन डिब्बों में चढ़ना-उतरना मुश्किल-सा लगा। यूरा ने उन्हें हाथ पकड़कर ऊपर चढ़ाया। लेकिन बाद में अभ्यस्त हो गयीं। टोन्या के ख्याल में यह पहियों वाला एक अस्तबल था; और उसे पक्का विश्वास था कि पहले ही झटके में उसके अंजर-पंजर बिखर जाएंगे। लेकिन लगातार तीन दिन तक गाड़ी की परिवर्तित दिशा और गति की ओर वे धक्के खाते रहे, टोन्या की धारणा निराधार साबित हुई। तेइस डिब्बों की यह गाड़ी जब भी किसी ग्रामीण प्लेटफार्म पर रुकती, तो उसका अगला अथवा पिछला भाग प्लेटफार्म से काफी दूर खड़ा हो पाता। अगले डिब्बे में नौसेना के सैनिक, बीच के डिब्बे में यात्री और अन्त के आठ डिब्बों में बेगार लोग थे।

प्रत्येक उम्र, दशा और व्यवसाय के लगभग पांच सौ यात्रियों से गाड़ी लदी हुई थी। इन सबने मिलकर बड़ा विचित्र दृश्य उपस्थित कर दिया था। पीटर्सवर्ग के अमीर, चुस्त वकील, शेयर बाजार के दलाल, टैक्सी-चालक, फर्श साफ करने वाले, स्नानगार-सेवक, तातारी व्यापारी, भागे हुए पागल, दुकानदार और संन्यासी सभी वहां उपस्थित थे। तप्त-सिगड़ियों के सामने बैठे शेयर बाजार के दलाल और वकील अन्तहीन गप्पें हांक रहे थे।

दूसरी ओर नंगे पैर, पैन्टों के बाहर तक निकली हुई कमीजें पहने, दाढ़ी और बिना दाढ़ी वाले लोग दरवाजे के पास खड़े, उदास और मूक भाव से रास्ते के ग्रामीणों और किसानों को देख रहे थे। चूंकि बेगार सैनिकों के लिए जितने डिब्बे निश्चित किये गये थे; उनमें भीड़ बहुत थी और वे उनमें समा नहीं पा रहे थे, इसलिए उनमें से कुछ लोगों को यात्रियों के डिब्बे में भर दिया गया था। मध्य रूस से आगे बढ़ते समय अनेक विचित्र घटनाएं घटित हुईं। वे देश के उस अशांत भाग से गुजर रहे थे, जहां सशस्त्र

सैनिकों की गारद पड़ी थी। जहां गांवों की क्रांतियों को दबा दिया गया था।

बीच में कहीं भी गाड़ी खड़ी हो सकती थी; और सुरक्षा के लिए तैनात सैनिक आकर यात्रियों के कागजातों का निरीक्षण कर लिया करते।

इसी तरह एक दिन गाड़ी के रुक जाने पर, न तो वहां कोई आदमी ही आया, न किसी ने किसी को जगाया ही। यूरी को डर लगा कि कोई दुर्घटना तो नहीं हो गयी है। वह बाहर निकल आया। चारों ओर सूचीभेद अंधकार था। लगा कि देवदार वृक्ष के बीच गाड़ी को बिना विशेष कारण के रोक दिया गया है। दूसरे यात्रियों से यूरी को मालूम हुआ कि दरअसल दुर्घटना तो कोई नहीं हुई। मगर ड्राइवर ने गाड़ी आगे बढ़ाने से इसलिए इंकार कर दिया है, क्योंकि उसे संदेह है कि इस अशांत क्षेत्र में गाड़ी आगे ले जाना खतरे से खाली नहीं है।

पहले ट्राली द्वारा लाइन का परीक्षण हो जाना चाहिये। यात्रियों के कुछ प्रतिनिधि तथा नौसैनिक उससे बातचीत कर रहे थे; और आवश्यकता पड़ने पर उसकी मदद अथवा मरम्मत करने के लिए तैयार थे।

ड्राइवर चिल्ला रहा था—'वाह ! कितना बढ़िया दृश्य है। नौ-सैनिक अपने साथी कर्मचारी का बंदूक लिये पीछा कर रहे हैं। यह सिर्फ इसलिए कि मैंने गाड़ी खड़ी कर दी। आप सब लोग मेरे गवाह हैं। देख लीजिये यह कैसी जगह है ? थोड़ी दूर पर निश्चय ही कोई चुपचाप रेल की पटरियों के नटबोल्ट खोल रहा होगा। तुम नालायक कहीं के ! तुम अपनी मां, दानी और सात पीढ़ियों सहित जहन्नुम में जाओ। मुझे किसी की परवाह नहीं। मैं यह फिक्र कर रहा था, तुम्हारे भले के लिए। नतीजा यह है कि मैं तुम लोगों की कृपा से इस हालत में यहां पड़ा हूं। आगे बढ़ो, मार दो गोली मुझे ! मैं यहां खड़ा हूं, आप सब लोग देख लीजिये, आप सब लोग गवाह बने रहिये, मैं भाग नहीं रहा हूं। मार दो मुझे गोली।'

भीड़ में से आवाजें आने लगीं—'चुप भी रहो दादा ! उनका यह मतलब नहीं है। कोई उन्हें ऐसा करने थोड़े ही देगा ? वे सिर्फ तुम्हें धमकाने के लिए ऐसा कर रहे थे !'

एक नौसैनिक बर्फ से बाहर निकल आया। उसके बाल लाल रंग के

थे, शरीर विशालकाय। माथा इतना बड़ा कि चेहरा कफी चौड़ा दिखाई देने लगता।

यात्रियों की ओर मुड़कर उसने शांत, व्यवस्थित और गंभीर उक्रेनियन लहजे में कहा—माफ कीजिएगा। यह भीड़ किसलिए लगी हुई है ? आप ही बताइये, इस जगह आपको सर्दी नहीं लग जाएगी ? कितनी तेज हवा चल रही है ! आप अपनी जगह पर सीढ़ियों के पास जाकर क्यों नहीं बैठ जाते ?

भीड़ छंट गयी। वह विशालकाय आदमी ड्राइवर के पास जाकर बोला—'हमने तुम्हारी काफी सनक देख ली हैं। बर्फ से बाहर निकल आओ और ध्यानूपर्वक तेजी के साथ आगे बढ़ो।'

पटरी से नीचे उतर जाने के डर के कारण, गाड़ी धीमी गति से आगे बढ़ रही थी। पटरियों पर हवा ने बर्फ बिखेर दी थी जिसे किसी ने साफ नहीं किया था। एक निर्जन जले हुए खंडहर के पास जाकर गाड़ी खड़ी हो गई। यह लोवर केल्मिस स्टेशन का भग्नावेश था जिसका नाम अभी भी धुंधले काले बोर्ड पर पढ़ा जा सकता था। कुछ दूरी पर बर्फ की चादर ओढ़े एक खण्डहरप्राय गांव था। आग से उसका अन्तिम घर नष्ट हो चुका था; दूसरे मकान की लटकती हुई अधजली लकड़ियां दिखाई दे रही थीं। टूटी-फूटी गाड़ियां, बाड़े और ध्वस्त प्रायः फर्नीचर गली में चारों ओर इधर-उधर पड़े थे। बर्फ में अधजली लकड़ियों के टुकड़े, राख के कारण अजीब से लग रहे थे। स्टेशन इतना निर्जन नहीं था, जितना कि एक नजर में लगता था। वहां अब भी कुछ लोग रहते थे। उन खण्डहरों में से स्टेशन-मास्टर निकलकर बाहर आ गया। गार्ड गाड़ी से कूद पड़ा।

दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया। गार्ड ने सहानुभूतिपूर्ण लहजे में कहा—मेरा ख्याल है कि जब इस गांव में आग लगी, तब यह स्टेशन भी बच नहीं पाया होगा ?

'आइये। स्वागत। हां, एक बार यहां आग लगी थी लेकिन बहुत बुरी नहीं।'

'क्या मतलब ? समझा नहीं।'

'अच्छा ही है। समझने की कोशिश भी मत करो।'

'आपका मतलब स्ट्रालिनिकोव से तो नहीं है ?'

'हां, उसी से।'

'क्यों ? आपने क्या किया था ?'

'हमने कुछ भी नहीं किया। अपराध था पड़ोसियों का, लेकिन हमें उसकी काफी अच्छी सजा मिल गयी। उस ओर वह गांव है न...वही लोवर केल्मिस है। उस्त-नेमडिंस्क जिले में है वह। यह सब उसी के कारण हुआ है !'

'और उन्होंने क्या अपराध किया था ?'

'दुनिया भर के तमाम अपराध उन्होंने कर डाले। पहला अपराध था, गरीब किसानों की कमेटी को भंग करना, दूसरा अपराध था, लालसेना को घोड़े न देना, और वे थे तातारी घुड़सवार, इस बात को ख्याल में रखियेगा। संगठन की राजाज्ञा का विरोध—यह था तीसरा अपराध। कुछ मिलाकर इस तरह तो अपराधों की संख्या तीन ही होती है।'

'बहुत बुरी बात है। लेकिन फिर भी हमारा इससे कोई लेना-देना नहीं।'

'कुछ भी हो। यह सब खत्म हो गया। लेकिन एक बुरी खबर आपको और सुनानी बाकी रह गयी। मुझे डर है कि आप लोगों को यहां कुछ दिनों ठहरना पड़ेगा।'

'क्यों मजाक कर रहे हो ? मैं इस गाड़ी से सैनिकों को युद्ध स्थल पर ले जा रहा हूं।'

'मैं मजाक नहीं कर रहा हूं जी। पिछले पूरे हफ्ते तक तूफान का उपद्रव था। तमाम रेल की पटरियां बर्फ में डूबी हुई हैं और उन्हें साफ करने वाला कोई नहीं है। आधा गांव खाली हो चुका है। लोग भाग गये हैं। आधे लोगों को इस काम में लगाया जा सकता है। लेकिन उससे काम चलेगा नहीं।'

'कितनी नारकीय अभिशापपूर्ण स्थिति है ! आखिर मैं कर ही क्या सकता हूं ?'

'लाइन को साफ करना होगा।'

'बर्फ कितनी गहरी है ?'

'बहुत अधिक नहीं। थोड़ी भिन्नता है। बीच के भाग में सबसे अधिक बुरी हालत है। बीच में दो मील लम्बा एक टुकड़ा है, वहां जरूर दिक्कत होगी। आगे के जंगल के घने भाग में बर्फ अधिक नहीं है। और इस तरफ के खुले प्रदेश में बर्फ के कुछ भाग को हवा ने दूर तक फेंक दिया है।'

'कमबख्त कितनी गन्दगी है ! मैं यात्रियों को इस काम में लगाता हूं।'

'नौसैनिकों को छेड़ना नहीं चाहिये। लेकिन बेगार सैनिकों की संख्या भी काफी है। यात्रियों के साथ लगभग 7 सौ मुसाफिर हैं। काफी हैं। वैसे फावड़ों की कमी है। ज्यों ही इसका इंतजाम हो जायेगा हम काम शुरू कर देंगे। पास के गांव में फावड़े लाने के लिए आदमी गए हुए हैं। वे आते ही होंगे।'

'हे प्रभु, क्या दुर्भाग्य है। तुम्हारा क्या ख्याल है, हम स्थिति संभाल लेंगे ?'

'हां क्यों नहीं। निश्चित रूप से। चिन्ता मत करो, कहावत है कि बड़े-बड़े शहर लोगों की संख्या के बल पर ही जीते गये हैं।'

एक तरह से इस खंडहर प्रायः स्टेशन से अभ्यस्त हो गये और यह जगह उन्हें पसंद आ गयी। जैसे कि छुट्टियों के दिनों में पहाड़ पर चढ़ते वक्त, थोड़ी देर के लिए विश्राम करने को अच्छी जगह मिल गयी हो। इस मकान के पिछले भाग का प्रतीक्षालय बर्बाद हो चुका था। दरवाजे पर अभी भी ताला लगा हुआ था। वहां एक नोटिस लटक रहा था, जिसमें लिखा हुआ था—जिन यात्रियों को दवा-दारू अथवा मरहम-पट्टी की आवश्यकता हो, उनसे प्रार्थना की जाती है कि वे चिन्ता न करें। कुछ विशेष कारणों से मैं यह दरवाजा बंद कर रहा हूं। यह नोटिस उसी सिलसिले में दिया जा रहा है। हस्ताक्षर—मेडिकल अटेन्डेंट, आदि-आदि।

लाइन के बीच की बर्फ जब हटा दी गयी तो सामने फैली हुई लाइन

तीर की तरह लम्बी और स्पष्ट दिखाई देने लगी। जंगल की काली छाया के बीच हटाई गयी बर्फ की छोटी-छोटी पहड़ियां चमक उठीं।

मौसम बदल गया। दृश्य बदल गये। मैदान समाप्त हो गया। रेल का मार्ग पहाड़ियों में से होता हुआ घरों के बीच से गुजर रहा था। उत्तर की सर्द हवा के बदले दक्षिण से मिट्टी में तपी हुई गर्म हवा की लहरें आ रही थीं। उतार-चढ़ाव से भरे इस जंगली रास्ते को गाड़ी बमुश्किल पार कर रही थी। देखने लायक कोई खास बात नहीं थी। सारा जंगल अभी भी सर्दी और तन्द्रा में डूबा हुआ था। बीच-बीच में कोई टहनी आपस में टकराती हुई बर्फ का बोझा झाड़ लेती। यूरी आलस से भरा हुआ था। वह अपनी सीट पर सोता रहता और सुनता रहता। लेकिन सुनने लायक कोई खास बात थी ही नहीं। गाड़ी के इस दम घोंटू गर्म वातावरण में सोना मुश्किल था। यूरी का तकिया पसीने से लथपथ हो गया था। सोने की पटरी से वह इस तरह सावधानी से उतरा कि दूसरों की नींद न उचट जाये, उसने दरवाजा खोला।

सीलन भरी गर्म हवा से उसका चेहरा भीग-सा गया; मानो वह मकड़ी के जालों से भरे किसी तहखाने में चला आया हो। कुहरे को देखकर उसने अनुमान लगाया कि कल भीषण गर्मी पड़ेगी। इसीलिए हवा में इतनी उमस है। यह एक बड़ा स्टेशन था; सम्भवत: जंकशन हो। चारों ओर निर्जनता, उदासीनता और उपेक्षा का वातावरण व्याप्त था। किसी को गाड़ी की फिकर नहीं थी, वह मानो खो गई है अथवा भुला दी गई है। मार्शलिंगयार्ड से गाड़ी इतनी दूर खड़ी थी कि यदि रेल की पटरियों के अगले भाग पर अवस्थित स्टेशन को यदि धरती निगल जाती तो भी गाड़ी के किसी यात्री को कोई खबर नहीं होती। दो आवाजें सुनाई दे रही थीं। युद्ध के वातावरण से अभ्यस्त यूरी के कान चौकन्ने हो गये। प्रतिध्वनित होने वाली आवाज से उसे मालूम हो गया कि यह तोपखाना है। उसने सोचा—यही है वह। हम मोर्चे पर पहुंच गये हैं। गाड़ी से कूदकर वह कुछ कदम आगे चला आया। आगे दो ही डिब्बे थे। बाकी के डिब्बे गाड़ी से असम्बद्ध होकर इंजिन के साथ चले गये थे। इसलिए उन पर कल इतना नियंत्रण था। उन्हें मालूम था कि वे तुरन्त मोर्चे पर भेजे जाने वाले हैं। रेल की पटरियों को पार कर,

अंतिम डिब्बे के चक्कर काटते हुए वह स्टेशन को खोज निकालना चाहता था। इसी समय बन्दूकधारी एक संतरी ने रास्ता रोककर कहा—कहां जा रहे हैं आप ? अनुमति-पत्र है ?

—'यह कौन-सा स्टेशन है ?'

—'चाहे जो हो। आप कौन हैं ?'

—'मैं मास्को का एक डाक्टर हूं। मैं सपरिवार इसी गाड़ी से यात्रा कर रहा हूं। ये रहे मेरे कागजात।'

—'इन्हें अपने पास ही रखिए। मैं इस अंधेरे में पढ़ने की मूर्खता करने वाला नहीं हूं। देख नहीं रहे हो, यहां कितना दूहरा है ? यह जानने के लिए कि आप किस किस्म के डाक्टर हैं, मुझे किसी प्रमाण-पत्र की जरूरत नहीं। आप जैसे ही अनेक डाक्टर बारह इंच वाली तोपें चला रहे हैं। अपना दिमाग ठिकाने से रखो। मैं तुम्हें...खैर, जब तक आप जिन्दा हैं, यहां से रफू हो जाइये।'

यूरा ने निश्चय कर लिया था कि अब वह किसी से किसी किस्म का सवाल नहीं पूछेगा।

मगर उसके मुंह से निकल गया—यह कौन-सी नदी है ? जवाब देने के बजाय संतरी ने सीटी होंठों पर रखी ही थी कि एक एूसरा संतरी, जो यूरा का चुपचाप पीछा कर रहा था, आ उपस्थित हुआ। अपने साथी के पास खड़े होकर वह बातचीत करने लगा—'इस बारे में कोई शक नहीं। एक बार देख कर ही इस चिड़िया को अच्छी तरह से पहचाना जा सकता है। पूछता है, कौन-सा स्टेशन है ? यह कौन-सी नदी है ? आंखों में धूल झोंक रहा है। इसे सीधे घाट पर ले जायें अथवा पहले गाड़ी में ? तुम क्या कहते हो ?'

'मेरे ख्याल से पहले इसे गाड़ी में ही ले चलें। देखें, प्रधान महोदय क्या कहते हैं ? आपके कागजात कहां हैं ?'

यूरा की ओर देखकर वह गुर्राया।

कागजात अपनी मुट्ठी में बंद करके किसी की ओर मुखातिब होकर उसने पुकारा—'इसका ध्यान रखना।' इसके बाद पहले पहरेदार के साथ

वह चल दिया। तीसरी आकृति को अब तक यूरा पहचान नहीं पाया था। वह एक मछुआ था।

अब तक वह नाव पर लेटा हुआ था। लेकिन जिम्मेवारी में अपना महत्व बताने के लिए जोर-जोर से बोलते हुए वह उठ बैठा। उसने कहा—आप भाग्यशाली हैं महाशय, कि ये लोग आपको प्रधान के पास लिये जा रहे हैं। शायद आपको शक्ति मिल जाये। इन्हें भी तो दोष नहीं दिया जा सकता ? वे तो कर्तव्य के मारे लाचार हैं। आजकल लोग कुछ ज्यादा चतुर हो गये हैं। हो सकता है भविष्य के लिए यह बहुत ही लाभदायक हो। लेकिन अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। उनसे एक गलती हो गई है। दरअसल वे एक निश्चित आदमी की फिराक में हैं ? उन्होंने शायद यही समझा है कि काममार राज्य के दुश्मन को उन्होंने गिरफ्तार कर लिया है। यह उनकी भूल है। कुछ भी हो, आपको प्रधान से मिलने के लिए जोर देना चाहिये। इन्हें अपने आप कुछ मत करने दीजिएगा। ईश्वर ही मालिक है। दुख की बात यह है कि ये सब राजनीतिक रूप से जागरूक हैं। आपके साथ कुछ भी कर गुजरने से ये लोग बाज नहीं आवेंगे। इसलिए यदि वे कहें कि मेरे साथ चलो; तो चुपचाप चले मत जाना। प्रधान से मिलने की बात पर जोर देना।'

जुड़े हुए दो डिब्बों में से एक में हंसी और वहां की चहल-पहल की आवाज आ रही थी।

यूरा को लेकर उसका रक्षक संकेत करके अंदर चला गया। एक संकरे मार्ग से बीच के चौड़े डिब्बे में उसे ले जाया गया। यह डिब्बा काफी साथ सुथरा और आरामदायक था। चुस्त और सुसज्जित व्यक्ति चुपचाप काम में लगे हुए थे। दलबंदी से परे रहने वाले स्ट्रेलिनिकोव को, उसने यहां भिन्न रूप में देखा—उस स्ट्रेलिनिकोव को, जो इस क्षेत्र में भय और गौरव का कारण बना हुआ था।

सम्भवत: उसकी कार्यवाहियों का वास्तविक केन्द्र कहीं और था। यह तो उसका व्यक्तिगत स्थान, अथवा निजी कार्यालय, किंवा सोने का कमरा था। यहां की शून्यता ठीक वैसी ही थी जैसे कार्क के फर्श पर हलके

चप्पलों की आवाज। यह कार्यालय किसी पुराने डाइनिंग कार में अवस्थित था। गलीचे बिछे हुए थे। चारों ओर टेबलें सजी हुई थीं। भुलक्कड़ व्यक्ति की तरह दरवाजे के पास वाली टेबल पर बैठे एक नवयुवक आफिसर ने कहा—एक मिनट ! यूरी का रक्षक बन्दूक झुकाकर, उसे अंगुलियों से बजाता हुआ बाहर चला गया। इसके बाद वह नवयुवक अधिकारी मानो जिम्मेदारी से मुक्त, स्वतंत्र हो गया।

यूरी की उपस्थिति भुला दी गई। किसी ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। प्रवेश द्वार के पास खड़ा यूरा कमरे के अन्तिम कोने पर एक डेस्क पर पड़े हुए अपने कागजातों को आसानी से देख संकता था। पुराने जमाने के कर्नल एक वृद्ध महाशय बैठे हुए थे। लाइन का कनेक्शन जोड़ने के लिए एक बिजली वाला व्यक्ति कमरे में इधर-उधर घूमते हुए अपना काम कर रहा था। दरवाजे के पास वाले नौजवान आफिसर ने उसे खड़े होकर जगह दे दी। चमड़े की फौजी जर्सी पहने कोने में एक टाइपिस्ट अपने टाइप राइटर के साथ मगचपच्ची कर रही थी।

टाइपराइटर का कैरीज एक ओर खिसक कर अटक गया था। युवक आफिसर उसके पास जाकर खड़ा हो गया और इस काण्ड की जांच करने लगा। बिजली वाले महाशय मेज के नीचे झुककर टाइपराइटर की समस्या हल करने की कोशिश करने लगे। पराुने कर्नल साहब भी बाकी नहीं बचे। वे भी उठकर वहां चले गये। इस तरह ये तमाम लोग टाइपराइटर के रुके हुए कैरीज की समस्या सुलझाने में गंभीर रूप से व्यस्त हो गये।

यूरी ने घूमकर देखा, लम्बे और भारी डग भरता हुआ स्ट्रेलिनिकोव कमरे में आकर ठीक बीचोंबीच खड़ा हो गया। डाक्टर आज तक हजारों व्यक्तियों के सम्पर्क में आया था, हजारों लोगों को वह जानता-पहचानता था, लेकिन उसने आज तक कभी ऐसे विराट व्यक्तित्व सम्पन्न आदमी को नहीं देखा था। एक ही नजर में बिना कार्य कारण के यह स्पष्ट हो गया कि इस व्यक्ति में अपराजेय इच्छाशक्ति है। अपने आप में उसका व्यक्तित्व इतना प्रबल था कि उसके आस-पास की तमाम चीजें उसी की प्रतीक हो उठी थीं। उसका सुगठित शरीर, उन्नत ललाट, नपे-तुले कदम,

लम्बे पैर, कीचड़ से सने हुए मगर फिर भी साफ, घुटनों तक के जूते—और भूरे रंग का कोट, जिस पर अभी-अभी इस्तरी की गई थी, बहुत आकर्षक लग रहे थे।

उसे याद आया कि सामने खड़े व्यक्ति से सम्बन्धित किसी गड़बड़ी का फैसला करने के लिए ही उसे जगाया गया था। उसने मुड़कर डाक्टर की ओर देखा—'यह आदमी ! नहीं ! बकवास। यह उसके समान बिल्कुल नहीं है। गधे कहीं के !'

हंसते हुए उसने कहा—'कामरेड, मैं माफी चाहता हूं। इन लोगों ने किसी आदमी की खोज में आपको गलती से पकड़ लिया। मेरे सैनिकों की गलती है। मैं क्षमा चाहता हूं। आप स्वतंत्र हैं। जा सकते हैं। आपकी श्रम-पुस्तिका कहां है ? अच्छा, ये ही आपके कागजात हैं ? जरा इसे देख सकता हूं ? जिवागो...जिवागो...डाक्टर जिवागो...मास्को ! आइये, एक मिनट के लिए मेरे कमरे में चले आइए। यह सचिवालय है। मेरा कमरा पास में है। इस ओर आ जाइए। मैं आपका अधिक समय नहीं लूंगा।'

वास्तव में अस्ट्रेलिनिकोव कौन है ?

वह अपने पद का महत्व जानता था। वह किसी दल से सम्बन्धित नहीं था। मास्को में पैदा होने के बावजूद भी वह उससे पूरी तरह अनजान बना हुआ था। विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्ति के बाद उसने स्कूल में अध्ययन कार्य करना स्वीकार किया था। महायुद्ध में वह पकड़ा गया और वहां से भाग गया। लोगों ने सुना कि वह मर गया है। वह अभी हाल में जर्मनी की एक जेल से मुक्त होकर आया था। तुर्कातूय में राजद्रोह आरम्भ करने वाले राजिन-सैनिकों से भी उसका पाला पड़ चुका था।

चारकिन-उस स्थान पर, जहां एक वफादार कमाण्डर की हत्या कर दी गई थी, उसने डटकर मुकाबला किया था। उपरोक्त हर परिस्थितियों में उसे सफलता मिली थी। नियमानुसार विद्रोहियों की खोज करके कठोरतापूर्वक उन पर मुकद्दमा चलाकर, उसने उन्हें सजा दी थी। स्थानीय सैनिकों के भाग जाने की आदत को उसी ने नियन्त्रित किया। सैनिकों को भर्ती करने की संस्था का पुनर्गठन किया। इस तरह से लाल सेना में सैनिकों की

जबरदस्ती भर्ती का काम बढ़ता गया। अन्त में जब उत्तर की ओर से श्वेतदल का दबदबा बढ़ने लगा और हालत चिन्ताजनक हो गई, तब उस पर फौजी कार्यवाही, आक्रमण योजना तथा सैनिक परिचालन सम्बन्धी नई कूटनीतिक जिम्मेदारियां डाल दी गईं।

जब वे कमरे में पहुंच गये तो स्ट्रेलिनिकोव ने कहा—'जिवागो... जिवागो...पेशा ? मेरा ख्याल है...कुलीन...अच्छा...मास्को का एक डाक्टर। आप वेरिकिनो जा रहे हैं ? आश्चर्य की बात है। ऐसे असंगत स्थान के लिए आपने मास्को क्यों छोड़ दिया ?'

—'यह, बस, एक विचार है। अनिश्चित भविष्य की शांति और आराम की खोज में !'

—'आह, यह बात है। लेकिन यदि श्वेत-दल वालों के कारण आपको घर लौटने की बीमारी हो गई है, तो आपको निराशा होगी। हम लोगों ने उन्हें इस जिले से भगा दिया है।'

—'क्या अभी तक आप मुझसे मजाक कर रहे हैं ?'

—'मजाक, एक डाक्टर के साथ ? एक फौजी डाक्टर के साथ ? हम हैं इस समय युद्ध-काल में। खैर, मेरा यही काम है। आप भगोड़े हैं। विद्रोही जंगल में शरण लेने के लिए भाग रहे हैं। भागने का कारण ?'

—'दो बार मैं घायल हो चुका हूं; और नाकाम साबित हो चुका हूं।'

—'इसके बाद आप यह सिद्ध करने की चेष्टा करेंगे कि आप रूसी नागरिक हैं, सहानुभूति रखने वाले हैं, अथवा पूर्णतः उनके भक्त हैं। शिक्षा अथवा स्वास्थ्य विभाग की लोक-परिषद का हवाला भी आप देने वाले होंगे। यह बड़ा रहस्यमय समय है मेरे प्रिय महाशय, यही आखिरी फैसले का वक्त है। यह समय है। चमकती हुई तलवार धारण करने वाले देवदूतों का, अथवा पाताल के विशाल परों वाले पक्षियों का—न कि सहानुभूति दिखाने वाले लोगों अथवा राजभक्त डाक्टरों का। फिर भी मैं आपसे कह चुका हूं कि आप स्वतन्त्र हैं। आप जा सकते हैं। मैं अपने शब्द वापस नहीं लूंगा। लेकिन याद रखिये कि यह सिर्फ इस बार के लिए है। मुझे लगता है कि हम फिर मिलेंगे; उस मसय हमारी बातचीत आज से बिलकुल भिन्न होगी।

यूरी लौट आया।

यूरी को गाड़ी में ले लेने के लिए सबने एक साथ अपने हाथ फैला दिये।

—'मैं अपने आप चढ़ जाऊंगा।' उसने विनीत स्वर में कहा।

वह अंदर चला गया। उसने अपनी पत्नी का कंधा थपथपाया। टोन्या कह रही थी—आखिर यह संकट-काल समाप्त हो गया। खुदा का लाख-लाख शुक्र है। हमें मालूम था कि आप सकुशल हैं।

—'तुम्हें कैसे मालूम ?'

—'संतरी ने आकर हमें बताया था कि आपके साथ कैसा व्यवहार हो रहा है। आह, दुविधा का वह समय किस प्रकार गुजरा था। मैं और पिताजी परेशान हो गये। तमाम उत्तेजनाओं के बाद अब उन्हें नींद आ गई है। वे वहां सो रहे हैं। उन्हें उठाना अब मुमकिन नहीं।'

'यहां कई नये यात्री आ गये हैं। जाइये, मैं आपको उनसे परिचित करवा दूं। लेकिन पहले यह सुन लीजिये। मुक्ति के लिए आपको सब लोग बधाइयां दे रहे हैं।'

भीड़ में घिरे हुए एक यात्री की ओर मुड़कर अपनी पीठ के पीछे खड़े पति की ओर इशारा करती हुई टोन्या ने कहा—'वे कहां हैं ?'

प्रत्युत्तर में उचककर उसने अपना हैट ऊपर उठाकर अभिवादन करते हुए, तथा भीड़ चीरकर आगे बढ़ते हुए, अपना परिचय दिया—मुझे सामदेवयातोव कहते हैं। यूरा ने उसका अभिवादन स्वीकार कर लिया।

13

तोर्फयानाया स्टेशन के प्लेटफार्म की कुचली हुई और जमी हुई बालू पर, अपना सामान बारम्बार गिनते हुए टोन्या खड़ी थी। यद्यपि वह ठीक स्टेशन पर उतर गये थे। स्टेशन की चुप्पी ने उस पर अजीब-सा असर डाला था। अचानक उसे चक्कर-सा आया और वह बेहोश हो गई। सब

लोग घबरा गए थे। इसी समय एक प्रौढ़ व्यक्ति, जिसकी वर्दी से मालूम होता था कि वह स्टेशन मास्टर है, उन लोगों के पास चला आया। अपनी टोपी को उठाते हुए, अभिवादन के साथ, विनम्र शब्दों में उसने पूछा—'क्या इन देवीजी के लिए स्टेशन के दवाखाने से कोई दवा दे सकता हूं ? ताकि ये होश में आ जाएं ?'

—'कोई खास बात नहीं है। यह अभी ठीक हो जाएगी।' एलेक्जेण्ड्रोविच ने कहा।'

—'सभी जानते हैं कि लम्बी यात्रा की थकान का यही परिणाम होता हैं। और इतनी अफ्रीकी गर्मी हमारे यहां नहीं होती। सफर की घटनाओं का भी बहुत बड़ा असर पड़ा है !'

—'वहां से गुजरते समय हमने गाड़ी में से आग की लपटों को देखा था।'

—'मेरा ख्याल है आप रूसी हैं।'

—'हां, मैं रूस का—मास्को का।'

—'मास्को के ? फिर तो यह आश्चर्य की बात है कि देवीजी को मानसिक आघात लगा हो। सुना है, वहां तो एक ईंट भी नहीं बची।'

—'जितना कहा जाता है, वैसा कुछ नहीं है। लोग अतिश्योक्ति करते हैं। खैर, यह बात सही है कि हम लोगों के लिये वहां रहना कठिन था। यह मेरी लड़की है, यह उसका पति। यह उसका लड़का है और ये नूशा—यह बच्चे की आया है।'

—'आप सबसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। कैसे हैं आप ? ठीक हैं आप ? आप लोगों की ही मैं प्रतीक्षा कर रहा था। सामदेवयातोव ने सकमा से टेलीफोन करके मुझसे कहा था कि जिवागो परिवार मास्को से यहां आ रहा है और मैं यथासंभव उनकी मदद करूं ? योग्य सेवा बताइये ? मुझे लगता है कि आप ही जिवागो हैं।'

—'नहीं, डा० जिवागो मेरे दामाद हैं। वे रहे। मैं डाक्टर नहीं, कृषिशास्त्र का प्रोफेसर हूं। मेरा नाम है ग्रोमेको।'

—'गलती के लिए मुझे माफ कीजिएगा। मैं आप लोगों से मिलकर

सचमुच बहुत ही प्रसन्न हुआ हूं।'

—'तो क्या आप सामदेवयातोव को जानते हैं ?'

—'उस आश्चर्यजनक कर्मठ कार्यकर्ता को कौन नहीं जानता ? वे ही तो हमारी एकमात्र आशा हैं। उन्होंने जब मुझे कहा कि मैं आपकी हर संभव मदद करूं तो मैंने हां भर ली है।'

इसी व्यक्ति ने इनके लिये गाड़ी की व्यवस्था कर दी थी और अपने नियत स्थान पर पहुंचे। इस प्रदेश में पहुंच कर यूरा ने डायरी लिखनी शुरू की। कविताओं का अध्ययन का दौर भी जारी रहा था। यहां आकर उसने पुस्तकालय की शरण ली और पुस्तकालय में एक दिन...उसने देखा, पुस्तकालय अध्यक्ष से कोई महिला पुस्तक लेने को झुकी थी; और यह कोई नहीं लारा थी।

लारा लाइब्रेरियन से बातचीत कर रही थी। यूरा की पहली इच्छा हुई, वह उसके पास जाकर उससे बातचीत करे। भूतकाल के संकोच तथा सादगी के अभावपूर्ण सम्बन्धों के कारण वह उठकर उससे अनौपचारिक तरीके से मिल नहीं पाया। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह प्रस्तुत स्थिति में व्यवधान नहीं डालेगा और न ही अपने काम से मन हटायेगा।

उसे देखने के प्रलोभन को दूर करने के लिए उसने कुर्सी बगल की ओर घुमा दी। परिणामस्वरूप उसका पिछला भाग इस ओर से दिखाई देना बंद हो गया। एक हाथ से पुस्तक पकड़े और दूसरा हाथ अपने घुटनों पर रखे, उसने प्रयत्न किया कि उसका मन अपने अध्ययन में लगा रहे। लेकिन पढ़ने के विषय से उसके विचारों का संसार बिल्कुल अलग था।

अचानक याद आया कि वेरिकिनी की शरद्-रात्रि में उसने एक स्वप्न में जिस नारी कंठ का स्वर सुना था—वह स्वर वास्तव में लारा का ही था। लारा के चेहरे का एक भाग पीछे से दिखाई दे रहा था। वह बालक की तरह, तन्मयता के साथ अपनी पुस्तक में खोई बैठी थी। उसका माथा दायें कंधे की ओर थोड़ा-सा झुका हुआ था। बीच-बीच में कुछ सोचने के लिए वह रुक जाया करती, छत की ओर देखती और फिर गालों पर हाथ टिकाये अपनी नोटबुक में पेन्सिल से तेजी से कुछ नोट करती हुई खो जाती।

मेल्यूनेवो में जो कुछ देखा था, वह यूरी को याद हो आया। इसमें किसी प्रकार का त्रियाचरित्र नहीं है। वह न किसी को खुश करने की कोशिश करती है और न नाराज। वह सोचता ही रहा और लारा चली गई। यूरी से रहा न गया।

लारा के मकान में दो द्वार थे; एक मर्चेन्ट स्ट्रीट में, दूसरा कोने की गली में। उसे ठीक-ठीक मालूम नहीं था कि किस दरवाजे से घुसे, इसलिए वह बगल वाली सड़क पर चला गया। दरवाजे की ओर मुड़ते ही हवा का एक अंधड़ फिर उठा और सामने का रास्ता कूड़े करकट से भर-सा गया।

इस अंधड़ के काले पर्दे के बीच से किसी मुर्गे द्वारा पीछा किए जाने के कारण मुर्गियों का दल चीं-चीं करता हुआ यूरी के पांवों के नीचे भाग गया। अधंड़ के समाप्त होने पर उसने लारा को कुएं के पास पानी भरते हुए देखा। उसने दो बाल्टियां भरीं और कावड़ में अटका कर वह चलने की तैयारी कर रही थी। बालों को धूल से बचाने के लिए उसने लापरवाही के साथ एक रूमाल से उन्हें बांध रखा था। लहराते हुए स्कर्ट को उसने घुटनों के बीच दबा रखा था। घर की ओर कदम बढ़ाते ही हवा के कारण उसका रूमाल उड़ कर गिर गया और वह रुक गई। रूमाल उड़ता हुआ उन मुर्गियों के पास चला गया जो अभी भी मुर्गे से परेशान आनन्दपूर्वक चहक रही थीं।

यूरी ने लपककर रूमाल उठाया और लारा के पास चला आया। हमेशा की तरह उसने अपना आश्चर्य भाव पलक झपकते ही छिपा लिया। उसके चेहरे पर किसी नाटकीय भाव को नहीं देखा जा सकता। उसके मुंह से निकला—'जिवागो !'

'लारा !'

'आप यहां कैसे ?'

'इन बाल्टियों को नीचे रख दो। मैं पहुंचा दूंगा।'

'मैं न अधूरा काम छोड़ती हूं, न आधे रास्ते रुकती हूं। आप मुझसे ही मिलने आये हैं न ? आइये।'

'और यहां किसलिए आता ?'

'मुझे क्या पता।'

'खैर, इन बाल्टियों को छोड़ दो। यह काम मुझे करने दो। जब तुम काम करो, मैं चुपचाप निष्क्रिय नहीं रह सकता।'

'यह भी कोई काम है ! रहने दीजिये। आपसे नहीं होगा। सिर्फ सीढ़ियों पर पानी फैल जायेगा। अच्छा बताइये तो, आज आप यहां कैसे चले आये ? यहां आप एक साल से हैं। लेकिन कभी यहां आने की याद तो आपको आई नहीं। समय ही नहीं मिला होगा ?'

'तुम्हें कैसे मालूम कि मैं यहां साल भर से हूं ?'

'अफवाह सुनी थी ! मैंने स्वयं आपको वाचनालय में देखा था।'

'फिर भी बात नहीं की ?'

'करती कैसे ? डर लगता था। अब आप यह भी कह दीजिये कि आपने मुझे वहां देखा ही नहीं था।'

बाल्टियों के बोझ से झुकी हुई, उसने दरवाजा पार किया। फर्श पर बाल्टियों को रखकर उसने अंगड़ाई ली। हाथ सीधे किये, छोटे से रूमाल से पोंछ लिये।

'आइये। सामने के हाल में मैं आपको ले चलती हूं। वहां अधिक उजाला है। एक मिनट आपको रुकना होगा। मैं पीछे की सीढ़ियों से जाकर बाल्टियां रख आती हूं और थोड़ी-बहुत व्यवस्था कर आती हूं। ज्यादा देर नहीं लगेगी। आपने इन साफ स्वच्छ सीढ़ियों को देखा ? यह पुराना मकान है। गोलाबारी का इस पर कुछ असर हुआ है। दीवार में दरारें पड़ गयी हैं। इस दरार की ओर देखिये, मैं अथवा कात्या जब बाहर जाती हैं तो यहां चाबी रख जाया करती हैं। मेरी अनुपस्थिति में यदि कभी आप यहां आयें तो चाबी लेकर दरवाजा खोलकर आराम से बैठ सकते हैं। देखिये यह रही चाबी। लेकिन इस समय मैं इसका उपयोग नहीं करूंगी। पिछल रास्ते से जाऊंगी। आप यहीं खड़े रहिये। मैं अंदर से दरवाजा खोल दूंगी।'

'लाइये, अपना हाथ मुझे दे दीजिये। फर्नीचर से भरे हुए दो अंधकारपूर्ण कमरों से हमें गुजरना है। ख्याल रखियेगा, कहीं किसी चीज से टकरा न जाएं और अपने हाथ-पांव न तोड़ बैठें।'

'यह तिलिस्म है। मुझे तो यह रास्ता कभी न मिलता। फ्लैट को वापस सजाया जा रहा है क्या ?'

'ऐसी कोई बात नहीं। फ्लैट किसी और का है। किसका है, यह मुझे नहीं मालूम। मेरा फ्लैट स्कूल की इमारत में था। जब से स्कूल काठ्या-गृह-व्यवस्था-विभाग के लिए ले लिया गया है, मुझे इस फ्लैट का एक हिस्सा दे दिया गया है।'

मास्को से आते वक्त का यात्रा-विवरण सुनाने वह बैठ गया। स्ट्रेलिनिकोव की बात कहते-कहते वह भूल गया कि सम्भवत: वह लारा का पति है। उसकी कथा के इस भाग का लारा पर विशेष असर पड़ा।

'आपने उन्हें देखा था ? कितनी विचित्र बात है। अभी मैं कुछ ज्यादा नहीं कर सकूंगी। लेकिन यह सब कितना असाधारण है। जैसे संयोग ने आपको उनसे मिलने के लिए बाध्य कर दिया हो। कभी इस बारे में आपको सभी कुछ कहूंगी। आप पर, लगता है उनका अच्छा प्रभाव ही पड़ा है।'

'हां, कुल मिलाकर बहुत अच्छा प्रभाव रहा। यदि वह चाहता तो मेरी बात नहीं भी मान सकता था। चाहता तो कोई रू रियायत नहीं करता।'

ऐसा होता तो मनुष्य के रूप में उसका कभी का अंत हो गया होता। माना कि उसे किसी निश्चित श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, लेकिन इसके यह माने नहीं कि उसमें मानवता का अपरिहार्य अंश न हो।उसमें वही तो है, जो अमरता का मूल है।

—'खैर। जाने दो इन बातों को, अब सवाल पूछने की मेरी बारी है। जिस समय हम यहां आये थे, स्थानीय गड़बड़ियां काफी थीं। उन दिनों तुम यहीं थीं ?'

—'थी। चारों ओर आग लगी हुई थी। पता नहीं बमबारी के बावजूद भी यह मकान कैसे बच गया ? फिर भी यह पूरी तरह से टूट-फूट चुका है। अभी भी सामने के भाग में बिना फूटे हुए बम के गोले पड़े मिल जायेंगे। जिस प्रकार प्रत्येक सरकार के बदलते समय होता है, ठीक वैसे ही चारों ओर गोलाबारी और आतंक फैला हुआ था। हम इन सबके आदी हो गये थे। मुझे ठीक-ठाक नहीं मालूम है कि श्वेत-दल के नियंत्रण में

क्या हुआ था। खून, प्रति-हिंसा, जोर-जबर्दस्ती, बदमाशी वास्तविक प्रेत पूजा का आयोजन ! एक बहुत बड़ी बात को कहना मैं भूल ही गई। हमारा गेल्युलिन ! वह चेकोस्लावियनों के साथ है, गवर्नर जनरल हो गया है।'

उस रोज वह लारा की बेटी कात्या से भी मिला। बातचीत के दौरान में उसने कहा—और, अब जब आपने इस तरह दिल खोलकर बातें कही हैं तो मैं भी खुल गई हूं। जिस स्ट्रेलिनकोव से आप मिल चुके हैं, वे दरअसल मेरे पति पाशा आन्तिपोव हैं। उन्हीं की खोज में मैं युद्धस्थल पर गई थी; और जिनकी मृत्यु की बात पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। इसके बाद जब यह सब कुछ सुना तो मुझे इस पर भी विश्वास नहीं हुआ। इसीलिए आप से काफी मुक्त रूप से बातचीत करती रही। मैंने उस व्यक्ति को देखा है, लेकिन आपको और उन्हें बराबर खड़ा करके तुलना करना निरी मूर्खता होगी। खैर, यह बिल्कुल सच है कि स्ट्रेलिनिकोव मेरा पति आन्तिपोव ही है। बहुत से लोगों का यह ख्याल है और मैं इससे इंकार नहीं करती। कात्या को भी यह मालूम है और उसे अपने पिता पर गर्व है। स्ट्रेलिनिकोव उसका बनावटी नाम है।

प्रत्येक क्रियाशील क्रांतिकारी के लिए जिस प्रकार आवश्यक है कि वह असली नाम को जाहिर न करे, उसी तरह उनके लिए भी जरूरी है वे छद्मनाम धारण कर लें। यह उनके लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। और यही हैं वे जिन्होंने उस भाग पर कब्जा जमा लिया और यहां अग्निवर्षा की। उन्हें मालूम था कि हम लोग यहीं पर हैं। लेकिन अपनी तटस्थ के रहस्य के खुल जाने के डर से उन्होंने एक भी कोशिश नहीं की, कि वे हमारी खबर लें कि हम जीते हैं या मर गये। वास्तव में यही उनका कर्तव्य भी था। मुझसे पूछा जाता, तो मैं यही कहती। आप सोचते होंगे कि मेरा इस तरह सुरक्षित रहना और नगर-कमेटी द्वारा मुझे रहने के लिए उपयुक्त स्थान देने से यह जाहिर हो जाता है कि वे गुप्त रूप से हमारा ख्याल रख रहे होंगे। दरअसल बात यह थी कि वे यहां आकर हमसे मिलना चाहते थे, परन्तु इस भावना के साथ वे निरन्तर संघर्ष करते रहे। यह

आदमीयत नहीं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं आपके दृष्टिकोण से प्रभावित हो गई हूं। आपकी तरह मैं एक ही तरह से सोच नहीं सकती। फिर भी कुछ अस्पष्टता की ऐसी गुंजाइश नहीं है, जहां हम समानता अनुभव करते हैं। यह अच्छा ही है कि हम जीवन के अहम मसलों पर—अपने जीवन दर्शन में अलग रहें। खैर, स्ट्रेलिनिकोव की बात...

वे इस समय साइबेरिया में हैं। उन पर लगाये जाने वाले आरोपों की बातें मैंने सुनी हैं; और सुनकर मेरा रक्त ठंडा हो गया है। किसी महत्वपूर्ण उच्च पद पर आसीन वे गल्युलिन के साथ युद्ध कर रहे हैं, और उसे खदेड़ रहे हैं। यही ग्लयुलिन उनका बचपन का ही नहीं रण-स्थल का साथी रहा था। गल्युलिन को मालूम है कि स्ट्रेलिनिकोव कौन है; और उसे यह भी मालूम है कि मैं पाशा की पत्नी हूं। बस वह मेरे सामने क्रोध से लाल-पीला हो जाता है !

कात्या फिर अंदर आ गई। लारा ने उसे अचानक पकड़कर गले से लगा लिया फिर उसे इतना गुदगुदाया कि बस। हर प्रेम का प्रसंग दुखद ही होता है। फिर लारा के प्रति प्रेम...यूरा उससे बार-बार मिलना चाहता और ऐसे ही एक अवसर पर वह घोड़ा दौड़ाता हुआ जा रहा था तो...तीन सवारों ने उसका रास्ता रोक लिया। उनमें एक तो स्कूली टोपी पहने हुए लड़का-सा ही था। दूसरा कारतूस वाली पेटी बांधे कोई अफसर दिखाई देता था। तीसरा व्यक्ति था अजीब सजधज वाला एक वृद्ध पुरुष।

—'कामरेड डाक्टर, बिल्कुल मत हिलो।' तीनों में से जो उम्र में सबसे बड़ा था। उसने आज्ञा दी—'हुक्म मानने पर तुम बिल्कुल सुरक्षित रहोगे। यदि नहीं, तो किसी गुनाह की जरूरत नहीं पड़ेगी—तुम्हें गोली मार दी जायेगी। हमारी टुकड़ी का डाक्टर मार डाला गया है तुम्हें हम डाक्टर के रूप में भर्ती करते हैं। नीचे उतर जाओ, घोड़े की लगाम इस नौजवान के हाथ में दे दो। एक बार फिर मैं चेतावनी दे देता हूं, कि तुमने भागने की जरा भी कोशिश की तो हम बैठे तमाशा नहीं देखते रहेंगे।'

—'क्या आप ही फारेस्टर हैं ?'

—'नहीं। मैं हूं, उनका मुख्य सम्पर्क पदाधिकारी—कम्पेनोदवोर्सकी।'

और चल पड़े कल्पुन की ओर। एक महा मठ अथवा महापंथ का स्थान।

महापंथ के बगल का वह स्थान अत्यन्त सुन्दर था, जहां पझीन्का नदी पोसद कुइतेनी तथा माले येरमोले को दो भागों में बांट देती है। कुइतेनी से कोलचक द्वारा भर्ती किये गये, नये जवानों की विदाई के लिए एक समारोह आयोजित किया गया था। येरमोले में कर्नल स्ट्रेस के निरीक्षण में एक मेडिकल बोर्ड, ईस्टर की छुट्टियों के बाद यह जांच करने में व्यस्त था कि भर्ती के लायक कितने व्यक्ति मिल सकते हैं। इसके लिए गांव में घुड़सवार कजाकों के रक्षा दल तैनात थे। ईस्टर सप्ताह के असमान्य उत्तरार्द्ध का तीसरा दिन था। बसन्त ऋतु के प्रारंभिक दिन।गर्मी बहुत थी। हवा बिल्कुल बंद। कुइतेनी में खुले आकाश के नीचे नये भर्ती किये गए नौजवानों के लिए खाद्य पदार्थ रखे हुए थे। यह स्थान महापंथ से कुछ दूर हट कर था, ताक़ि यातायात अवरुद्ध न हो। गुलाबी कमीज पहने गले में रूमाल डाले अपने अंगूठे को हिलाते हुए ब्लाज गलुजिन महापंथ के ऊपरी हिस्से के पफनुत्किन की सीढ़ियों से उतर कर इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए आये। उन्होंने अपना भाषण आरंभ कर दिया।

भाषण के पश्चात् जोरदार हर्षध्वनि के साथ उसकी आवाज डूब गई। कच्चे वोदका का गिलास उठाकर वह एक ही सांस में उसे गटक गया। उसे इसमें कोई खास मजा नहीं आया। उसे वाइन पसंद थी और अच्छे किस्म की वाइन पसन्द थी। लेकिन उसे तसल्ली इस बात की थी कि वह इस समय सार्वजनिक हित के लिए यह आत्मत्याग स्वेच्छापूर्वक कर रहा है।

—'यह बूढ़ा तो काफी अच्छा भाषण दे देता है जी, मेल्यूकोव की इससे तुलना नहीं की जा सकती। खुदा क़सम, सच।'

अपने पास बैठे अपने मित्र टेरेन्टी गलुजिन से गोस्का रेबिका ने टेबल के नीचे शराबियों के शोरगुल के बीच पड़ी मस्तीभरी आवाज में कहा—'यह निश्चित रूप से भला आदमी ही है। नहीं तो बेकार इतना कष्ट ही करता ? आशा है कि इतने परिश्रम के बदले में तुम्हारी भर्ती माफ कर

दी जाएगी।'

—'गोश्का, शर्म आनी चाहिये, तुम्हें। मेरी भर्ती को टलवा दे, कोई कोशिश करके तो देखे। जिस दिन तुम्हें भर्ती का पत्र मिलेगा, देख लेना, उसी दिन मुझे भी मिलेगा। हम एक ही पल्टन में काम करेंगे। उन हरामजादों ने मुझे स्कूल से निकाल दिया था। मां इस बात को लेकर अपने प्राण सेक रही है। लेकिन शायद कमीशन अभी नहीं मिलेगा। हां, पिताजी को मालूम है कि भाषण कैसे दिया जाता है ? भाषण को जोरदार बनाने के लिए देखा नहीं, कितना प्रदर्शन करना होता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह उनका स्वाभाविक गुण है। ये पढ़े लिखे कुछ भी नहीं।'

—'तुमने संका पफनुत्किन के बारे में सुना है ?'

—'सुना है। भयंकर संक्रामक बीमारी है।'

—'भयंकर ! अजी, असाध्य रोग है। कोई इलाज नहीं। इस बात की हमें ही सावधानी रखनी चाहिये, कि हम किसके सम्पर्क में आते हैं।'

—'दुख की बात ही है। वे आत्महत्या करना चाहते थे। उन्हें बुलाया गया है। अब येरमोले में उनकी मेडिकल जांच हो रही है। शायद उसे वे ले लेंगे। इससे पहले, वह कहता है कि वह जाकर सपक्षियों से मिल लेगा ताकि समाज की बुराइयों से बदला लिया जा सके।'

—'गोश्का, तुम बात कर रहे थे संक्रामक रोग के बारे में। उनसे बच भी जाओगे तो दूसरी बीमारी के पंजे में फंस जाओगे।'

—'मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। यह रोग ही नहीं, गुप्त पाप भी है।'

—'चुप रहो वर्ना गर्दन मरोड़ दूंगा। दोस्तों से इस तरह बातचीत की जाती है ?'

—'शांत हो जाओ। यह तो मैं मजाक कर रहा हूं। मैं दरअसल तुम्हें यह बता रहा था कि ईस्टर के लिए मैं पजिस्क गया था। वहां एक प्रवासी लेक्चरर आये हुए हैं। अराजकवादी हैं। बड़े दिलचस्प आदमी हैं। वे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की बातें कर रहे थे। मुझे उनकी बातें बड़ी मजेदार लगीं। मैं अराजकवादियों में मिल जाऊंगा। देख लेना। लेक्चचर महाशय कहते थे कि हममें एक ऐसी आन्तरिक शक्ति है, जिसे हमें जगाना होगा।

वह बता रहा था कि कामुकता तथा चरित्र, पाशविक विद्युत शक्ति का ही प्रभाव है। समझ रहे हो? कैसी बात लगी ? उसकी प्रतिभा अद्वितीय थी. ..लोग सिर हिला-हिलाकर कितना शोर कर रहे हैं। कान बहरे हो जाएं। अब अधिक बर्दाश्त नहीं होता।'

टेरेन्टी का वक्तव्य पूरा हो भी नहीं पाया था कि मेजों के आसपास से शोरगुल हो उठा और वह भी पास के किसी बम के धड़ाके की भयंकर ध्वनि में डूब गया।

दूसरी बार और जोर से विस्फोट हुआ। लोग अपनी जगहों से उछल गये। जो लोग डगमगा रहे थे, वे अपने पैरों पर खड़े हो गये। कुछ लोगों ने लड़खड़ाते कदमों से बाहर जाने की कोशिश की। कुछ मेज के नीचे जाकर पड़ रहे। औरतें चीखने लगीं। क्लास अपराधी का पता लगाने की चेष्टा कर रहा था। उसे तुरन्त मालूम हो गया कि विस्फोट की यह आवाज गांव से, या हो सकता है मेजों के बिल्कुल करीब से आयी हो। उसकी गर्दन की नसें तन गयीं। उसका चेहरा नील-लोहित हो उठा।

वह जोर से चीखा—'हमारे 'रेंक' में 'जूडास' कौन है ? किसने यह शैतानी की है ? हथगोला लेकर कौन इधर घूम रहा था ? कौन है। आस्तीन का सांप ? मैं उसकी गर्दन मरोड़ डालूंगा, फिर भले वह मेरा लड़का ही क्यों न हो। नागरिकों, मैं ऐसी बेहूदा मजाक पसन्द नहीं करता। सारा गांव घेरेबंदी के अंतर्गत ले लिया जाये। हम अपराधी को खोज निकालेंगे । वह भागकर आखिर जायेगा कहां ?'

शायद उपस्थित लोगों ने उसकी पूरी बात सुनी, हो सकता है, न सुनी हो। सबका ध्यान येरमोले के जिला हॉल से उठने वाले काले धुएं के आसमान की ओर आकर्षित हो गया। सब नदी की ओर दौड़ पड़े कि देखें हकीकत क्या है ? हाल में आग लग गई थी। नये भर्ती किए गए जवान निर्वाचन अधिकारियों के साथ नंगे बदन, केवल पतलून पहने भाग निकले। घुड़सवार कजाक सैनिक जीन कसे हुए सरपट घोड़ों पर भागे चले जा रहे थे कि अपराधी का पता लगाया जा सके। गिरिजाघर की खतरे की घंटी की आवाज सुनकर बहुत से लोग कुइतेनी सड़क पर दौड़ पड़े। स्थिति बहुत

तेजी से बिगड़ती जा रही थी। सायंकाल कर्नल स्ट्रेज कजाकों के साथ कुइतेनी पहुंच गये। गांव को घेर लिया गया। प्रत्येक झोंपड़ी की तलाशी शुरू हुई।

करीब आधे नौजवान पार्टी में ही बेसुध पड़े थे। दीन-दुनिया की उन्हें कोई खबर नहीं थी। जब यह मालूम हुआ कि रक्षक सेना गांव में पहुंच गई, तब तक अंधेरा छा गया था। भागने वाले नौजवानों में टेरेन्टी और गोश्का भी थे। धक्का-मुक्का करते हुए वे निकटतम खलिहान तक पहुंच गये। अंधेरे के कारण और शोरगुल की उत्तेजना के कारण, यह मालूम कर सकना मुश्किल था कि यह खलिहान किसका है, पर मछली तथा मोम की गंध से यह अनुमान आसानी से लगाया जा सकता था कि यह गांव की दुकान का गोदाम है।

बात सच थी कि उनके मित्र किसी गुण्डों से कम नहीं थे। लेकिन उनके बारे कुछ कहा भी तो नहीं जा सकता, क्योंकि आज कोई भी घटना किसी भी प्रकार का राजनीतिक स्वरूप धारण कर सकती है। सोवियत क्षेत्र में यही गुण्डागर्दी काली-प्रतिक्रिया के नाम से जानी जाती है और प्रजातंत्रीय क्षेत्र में इसे बोलशेविक लक्षण माना जाता है।

14

यूरा को गिरफ्तार किए हुए करीब दो साल हो चुके हैं। उसकी स्वतंत्रता की सीमा अस्पष्ट थी। न वह दीवारों से घिरा हुआ था, न उस पर पहरा, न कोई उसके कार्यों पर ही निगरानी रखता था। सपक्षियों की शक्ति निरन्तर बढ़ती जा रही थी। जिस भू-प्रदेश अथवा बस्तियों से ये लोग गुजरते, वहां के स्थानीय निवासियों से वे पृथक नहीं रह पाते, उन लोगों में मिलकर उन्हें अपने साथ लेते हुए उन्हीं में विलीन हो जाते। लगता, जैसा यूरा का यह बंधन उसकी यह लाचारी, सिर्फ भ्रम है। वह पूरी तरह

स्वतंत्र है। बात सिर्फ इतनी-सी है कि वह अपनी स्वतंत्रता से पूरा लाभ नहीं उठा पाता। उसकी यह परवशता वास्तव में जीवन की अन्य मजबूरियों से भिन्न नहीं है, जो कि अकसर अदृश्य, अविचारणीय, अस्तित्वहीन अथवा काल्पनिक-सी प्रतीत होती है। यह बात सही है कि न वह बेड़ियों से जकड़ा हुआ था, न उस पर कोई निगरानी ही रखी जाती थी, फिर भी उसे इस काल्पनिक गुलामी के आगे सिर झुकाना ही पड़ता था।

इस दल से भागने की उसने तीन बार कोशिश की। लेकिन सफल नहीं हो सका; पकड़ा गया। उसे किसी प्रकार की सजा नहीं मिली। फिर भी वह जानता था कि वह आग से खेल रहा है। इसलिए इसके बाद भाग निकलने की बात उसने छोड़ दी। प्रधान लिबेरियन भिकुलित्सिन को उसका साथ पसन्द था, इसलिए वह उसे चाहता था। उसके सोने की व्यवस्था उसी के तम्बू में की गई थी। यूरा इस गले पड़ी दोस्ती से परेशान था। सर्दियों में टाइफुस के ज्वर का प्रकोप और गर्मियों में पेचिस के रोग से पीड़ित रोगियों की संख्या कम नहीं थी। फिर युद्ध के आरंभ हो जाने के कारण घायलों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी। ऐसे समय में यूरा का सारा ध्यान अपने काम में लगा हुआ था। अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास का प्रतिज्ञा के अनुसार, सेना के मेडिकल कर्मचारियों को योद्धाओं को सैनिक गतिविधियों में भाग नहीं लेना चाहिये। लेकिन यूरा को एक बार इस प्रतिज्ञा को भंग करना पड़ा। रणस्थल में अपने काम पर नियुक्त डाक्टर को एक बार लड़ने वालों के भविष्य का ही सामना करना पड़ गया।

अग्रिम पंक्ति, जहां उसे दुश्मनों की गोलाबारी का सामना करना पड़ा था, जंगल के एक किनारे पर थी। वह अपनी इकाई के टेलीफोन वाले के समीप कूद कर जमीन पर लेट गया। पीठ पीछे विस्तृत जंगल फैला हुआ था, सामने खुला मैदान—और इस असुरक्षित खुले स्थान की दूसरी ओर से श्वेत-दल हमला कर रहा था। जिस समय चारों ओर यह घातक संघर्ष जारी हो, निष्क्रिय रूप से इसे चुपचाप देखते रहना मानवीय सहनशक्ति के बाहर है। सवाल यह नहीं है कि वह उस पक्ष के प्रति वफादारी दर्शाये, जिसने उसे बंदी बना रखा है, न अपने प्राणों की रक्षा का ही प्रश्न था

बल्कि सवाल था, प्रस्तुत परिस्थितियों के सामने सिर झुकाने का। उनके कानूनों के आगे झुकने का, जिनके द्वारा कि सामने घटित हो रही घटनाओं का संचालन हो रहा था। तुम्हें भी वही करना पड़ेगा जो कि हर व्यक्ति कर रहा था। सामने युद्ध जारी था। मार-काट हो रही थी। उस पर तथा उसके साथियों पर गोली चलाई जा रही थी। विवश होकर प्रत्युत्तर में उसे भी गोली चलानी पड़ी।

उसके पास ही टेलीफोन वाला पीड़ा के साथ तड़फड़ाकर उछला और ढेर हो गया। जिवागो घिसटते हुए उसके पास पहुंचा। उसकी कारतूस की पेटी और राइफल उसने ले ली। फिर वापस अपने स्थान पर आकर उसी अवस्था में पड़ रहा। वह तब तक एक के बाद एक गोली चलाता रहा, जब तक कि बंदूक खाली न हो गई। मन के कोमल भावों के कारण वह उन युवकों पर गोली चलाना नहीं चाहता था, जिनकी वह अभी-अभी प्रशंसा कर चुका था। जिनके प्रति उसके मन में सहानुभूति थी। केवल हवा में गोली चलाना मूर्खतापूर्ण था। इसलिए उसने अपनी गोलियों का निशाना बनाया उस पेड़ को, जो उजड़ा हुआ पड़ा था और उसके बीच कोई नहीं था। अपने लक्ष्य पर नजर गड़ाये, वह धीमे-धीमे बंदूक का घोड़ा दबा देता। वह गोली इस तरह चलाता, जैसे वह उसे चलाना न चाहता हो और वह अपने आप चल जाती हो। उसकी चलाई हुई गोलियां पेड़ से टकरा कर इधर-उधर फैल गयीं। लेकिन आह ! लाख सतर्कता के बावजूद भी उसके और लक्ष्य के बीच कोई न कोई नौजवान आ ही आता। उसकी गोली से दो लड़के घायल हो गये। एक लड़का, जो कि पेड़ के समीप ही पड़ा था, लगता था कि मर गया है।

श्वेत-दल ने आक्रमण को व्यर्थ मान कर वापसी का आदेश दे दिया। सपक्षी कम थे। उनकी प्रमुख सेना का एक भाग आगे बढ़ रहा था और कुछ सैनिकों ने थोड़ी दूरी पर दुश्मनों की अधिकांश सेना को रोक रखा था। अपनी कमजोरी को छिपाये रखने के लिए उन्होंने भागते हुए श्वेत सैनिकों का पीछा नहीं किया।

उस क्षण जब यह दल भाग रहा था...तो यूरा ने देखा—बच्चों तथा

सामानों के साथ सपक्षियों का परिवार, मुख्य सपक्षी सेना के साथ काफी समय से था। उसके बाद गाड़ियों के पीछे मवेशियों का, विशेषकर हजारों की तादाद में गायों का झुण्ड आया। स्त्रियों के कारण शिविर में एक नया ही रूप प्रकट हुआ। किसी सैनिक की पत्नी कुवरिखा जो मवेशियों का इलाज किया करती थी; और जिसे लोग जादूगरनी समझते थे, चर्चा का विषय थी।

बड़ा कोट पहने, तिकोना हैट डाले, वह डींग हांका करती कि उसने यह सब किसी कैदी की टोपी तथा कपड़ों से (जो कि ब्रिटिश सामग्री के साथ कोलचक द्वारा भेजा गया था) उसने अपने ये कपड़े बनवाये हैं। किसी अज्ञात कारणों से कोलचक्र ने उसे केझया जेल में कैद रखा था, जहां से साम्यवादियों ने उसे छुड़ाया। यूरा इन सबसे धीरे-धीरे परिचित होने लगा। उधर लड़ाई का दौर जारी था। इसके पश्चिमी किनारों पर लड़ाई हो रही थी। त्यागा का आकार इतना विशालकाय था कि यह लड़ाई सीमावर्ती प्रदेश के झगड़े की तरह लगती।

उसके मध्य भाग में शिविर छिपा हुआ था। यहां लोगों की इतनी भीड़ थी कि भले कितने ही आदमी रण-स्थल पर क्यों न ले जाएं, वहां लोगों की कमी नहीं होने पाती। इस भीषण जंगल में युद्ध-निनाद बड़ी मुश्किल से शिविर तक सुनाई दे पाता। फिर अकस्मात जंगल में गोलियों की सनसनाहट गूंज उठी। लोग विस्मय से दिग्विमूढ़ अपने तम्बुओं अथवा डिब्बों की गाड़ियों की ओर भागे। पलक झपकते ही विप्लव का-सा दृश्य दिखाई देने लगा। अपना-अपना सामान उठाये प्रत्येक व्यक्ति भागने की चेष्टा करने लगा। डरने की कोई बात नहीं थी। सपक्षियों का दल उस ओर चला आया, जहां से गोलियों की आवाज सुनाई दी थी। एक घायल आदमी जमीन पर चित पड़ा था। उसकी एक भुजा और एक पांव काट दिया गया था। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि अवशिष्ट पांव और कटे हुए हाथ को लिये वह शिविर तक आया कैसे ? उसकी पीठ पर एक तख्ती लटक रही थी। जिसमें बहुत सारी गोलियों के बाद यह धमकी दी गयी थी कि यह लालदल के लिए सबक है।

यह भी लिखा हुआ था कि एक निश्चित तिथि तक यदि हथियार नहीं डाल दिये गये, तो यही नतीजा प्रत्येक सपक्षी को भुगतना पड़ेगा। रक्त-स्नात, दम तोड़ते हुए घायल व्यक्ति ने अपने दुर्बल स्वर में कराहते हुए बताया कि उसे मृत्यु दण्ड माफ कर दिया गया था। फांसी लटकाने के बजाय उसके हाथ-पैर काट दिये गये थे, ताकि शिविर में पहुंचने पर सपक्षी आतंक से घबरा जाएं। उन्होंने उसे शिविर के बाहर तक पहुंचाया था और फिर शिविर की ओर रेंगने की आज्ञा दी थी। पीछे से हवा में गोलियां चलाई जा रही थीं और वह आगे बढ़ रहा था। वह बोल नहीं पा रहा था। उसके शब्द गले में अटक जाते। उसकी बात समझने के लिए उपस्थित लोग उसके मुंह के पास तक झुक आये।

फिर भी वह बोला—'देखो साथियों, उनके सैन्यदल शक्तिहीन हो गये हैं। जीत हमारी ही होगी। वहां एक खाई है, वे हमें डरा देना चाहते हैं। मैं जानता हूं कि मैं बच नहीं सकूंगा। लो मैं गया।'

—'थोड़ा आराम करो। शांत रहो। तुम देख नहीं रहे हो कि उसे बोलने देना कितना कष्टदायक है। कसाई कहीं के।'

घायल ने अपने वक्तव्य का सिलसिला जोड़ते हुए आगे कहा—'मैं तुम्हें खून से नहला दूंगा, यदि तुमने यह नहीं बताया कि तुम कौन हो ? और मैं उसे कैसे बताता कि मैं सिर्फ एक भगोड़ा हूं, इसके अलावा कुछ नहीं। मैं उनके पास से तुम लोगों के पास आ रहा था।'

—'तुम सिर्फ, वह—वह ही कह रहे हो, तुमने उसका नाम नहीं बताया ? वह कौन था ?'

—मुझे दम लेने दो। बताता हूं। वह है हेटमेन वेकिसिन, कर्नल स्ट्रेस विटमिन का आदमी, तुम्हें नहीं मालूम कि वह किस तरह का आदमी है। सारा शहर त्राहि-त्राहि कर रहा है। वे खौलते हुए पानी में आदमी को उबालते हैं। वह बोटी-बोटी काट डालता है। गर्दन पकड़कर पता नहीं तुम्हें किस नर्क में धकेल दिया जाये, तुम जान नहीं सकते। रेल के एक डिब्बे में अधनगे, अन्दरूनी कपड़े पहने चालीस आदमी कैद हैं। वे दरवाजा खोलकर फिर किसी को उसमें डाल देते हैं। ठीक वैसे ही जैसे मुर्गी के

बच्चे को हलाल करने के लिए पकड़ा जाता है। किसी को फांसी के फंदे में लटका देते हैं। किसी को लोहे के छड़ से पीटते हैं। मारते-मारते वे धज्जियां उड़ा देते हैं। घावों पर नमक छिड़क देते हैं। खौलता हुआ पानी डाल देते हैं। कै करने पर उसे खाने के लिए बाध्य करते हैं। बच्चों को भी...हे भगवान।'

उस हतभागे का अंतिम क्षण आ चुका था। उसके मुंह से चीख निकली और बिना अपनी कहानी पूरी तरह समाप्त किये, वह मर गया। उपस्थित लोग मृत्यु के लक्षण समझ गये। उन्होंने अपनी टोपी उतारी और मृतआत्मा के प्रति सम्मान दिखाने के लिए कंधों और छाती पर क्रास अंकित कर लिया। त्यागा, शिविर और सपक्षियों के साथ बिताये गये अठारह महीने उसके दिमाग से बिलकुल विलुप्त हो गये। इन सबके बारे में वह जैसे बिल्कुल भूल गया हो। अपने प्रियजनों की स्मृति की भीड़ उसके दिमाग में भर गयी।

एक-एक प्रियजन व्यक्ति की प्रेतछाया-सी उसके सामने से गुजरने लगी। प्रत्येक छाया एक-दूसरे से अधिक भयानक थी। ...बर्फीली हवा में साशा को गोद में लिए टोन्या जा रही है।

वह पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ना चाहती है। लेकिन बर्फीले तूफान ने उसे पीछे धकेल दिया है। वह ठोकर खाकर गिर पड़ी। उठने की शक्ति उसमें नहीं है। तेज हवा थपेड़े मार रही है और बर्फ उसे ढक रही है। ओह, यह भूल ही गया, उसकी गोद में दो बच्चे हैं।

साशा तथा एक बच्चा और। उसके दोनों हाथ खाली नहीं थे और उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था। बच्चों का पिता गायब है। कोई नहीं जानता, वह कहां गया ? वह बहुत दूर है।

हमेशा वह दूर ही रहता है। सारे जीवन वह उनसे अलग रहा है। पता नहीं वह किस किस्म का पिता है ? क्या कोई पिता अपने बच्चों से इतने दिनों तक इतनी दूर रह सकता है ? उसके अपने पिता का भी तो यही हाल था। पता नहीं एलेक्जेण्डर एलेक्जेण्ड्रोविच इस समय कहां होंगे ? नूशा तथा दूसरे लोग कहां हैं। अच्छा है कि उन सब लोगों के बारे में न

सोचा जाये, उनके बारे में कोई प्रश्न न किया जाये। वह उठा और मुड़कर वापस लौटने लगा। लेकिन उसका विचार बदल गया। बहुत दिनों पहले उसने एक जोड़ा स्काइज, बिस्कुट का डिब्बा और आवश्यक सामान अलग रख छोड़ा था ताकि अवसर मिलने पर पलायन किया जा सके। शिविर के बाईं ओर एक देवदार के पेड़ के नीचे उसने अपना यह सामान गाड़ रखा था। पेड़ में चाकू से उसने एक निशान भी लगा दिया था ताकि जरूरत पड़ने पर आसानी से पहचाना जा सके। बर्फ का दरारों के बीच गड़े हुए अपने गुप्तकोष की ओर वह चल पड़ा। पूर्णिमा की चांदनी रात थी। उसे मालूम था कि किस-किस जगह पहरा लगा हुआ है।

सावधानी के साथ उनसे बचता हुआ, खुले मैदान के टीले और रोबन वृक्ष के समीप जब वह आया तो एक संतरी ने दूर से देख कर उसे टोका—रुक जाओ वर्ना गोली मार दूंगा। कौन है ? 'संकेत' दो ?

—'भले आदमी तुम्हें हो क्या गया है ? तुम मुझे नहीं पहचानते ? मैं शिविर का डाक्टर हूं—डाक्टर जिवागो।'

—'माफ करना डाक्टर। मैं पहचान नहीं पाया। कोई अपराध हो या न हो; मैं तुम्हें आगे नहीं जाने दूंगा। तुम चाहे जिवागो होवो या और कुछ। हुक्म आखिर हुक्म है।'

—'जैसी तुम्हारी मर्जी। संकेत शब्द है—लाल साइबेरिया; और जवाब है—मध्यस्थ मुर्दाबाद।

—'यह ठीक है। जा सकते हो। इतनी रात गये कहां जा रहे हो। क्या इरादा है ?'

—'प्यास लगी थी और सो नहीं पा रहा था। सोचा कि बाहर जाकर टहल आऊं, हवा और बर्फ दोनों खूब मिलेंगी। मुझे यह रोबन वृक्ष दिखाई दे रहा था जिसमें बर्फ से आच्छादित बेरियां लटक रही थीं।'

—'अति भद्र पुरुषों की अति बुद्धिमानी ! शीत ऋतु में बेरियां तोड़ना। तीन साल हो गये हमें, कि हम लोगों की अक्ल सुधार दें। लेकिन वही ढाक के तीन पात। अच्छी बात है जाइये और तोड़िये बेरियां। आपका पागलपन आपको मुबारक हो। मुझे क्या पड़ी है ?'

जिस तरह वह दबे पांव वह आया था, उसी तेजी के साथ वह अपनी स्काइज पर खड़ा हुआ और पतली वायु की तरह नंगी शीतकालीन झाड़ियों को पार करके अस्पर्श्या बर्फ के मैदान को, सीटी बजाते हुए पार कर गया। पगडंडी के सहारे वह रोवन वृक्ष के नीचे चला आया। वृक्ष अपनी दो टहनियां फैलाए उसका स्वागत कर रहा था। उसे लारा की सुदीर्घ श्वेत सुडौल भुजाएं याद आ गयीं। उसने प्रत्युत्तर में टहनियों को अपने पास खींच लिया। वृक्ष के बर्फ की फुहनियां टपकने लगीं।

—'मैं तुम्हें खोज निकालूंगा, मेरे प्रिय सौन्दर्य और मेरे रोवनवृक्ष—मेरे अपने रक्त और मांस, मैं तुमसे आकर जरूर मिलूंगा।'

पूरे चांद की स्वच्छ रात थी। निशानांकि वृक्ष के पास जाकर उसने अपना सामान निकाला और शिविर छोड़कर चल दिया। मकान के सामने की भीड़ में एक क्षीणकाय व्यक्ति भी शामिल हो गया। धूल और गंदगी से भरा यह व्यक्ति अपने कंधे पर एक डंडे के साथ भोजन का थैला लटकाये हुए था। उसकी ललाईवाली दाढ़ी भूरी हो रही थी।

यह था डा० जिवागो। इनका महीन रोओंवाला कोट या तो भोजन के बदले किसी को दे दिया होगा, या सड़क पर उससे किसी ने छीन लिया होगा। फटी हुई छोटी आस्तीन वाली जैकट यह साबित कर रही थी कि इसी तरह के विनिमय की कोई बात निश्चित रूप से हुई होगी।

झोले में रोटी का एक टुकड़ा था, शायद समीपस्थ नगर के किसी गांव में यह उसे दान के रूप में प्राप्त हुआ था। एक घंटे पहले यह युर्यातिन की सीमा पर पंहुंच गया था, लेकिन हारे-थके और कमजोर पैरों के साथ यहां तक आने में उसे एक घंटा लग गया। यात्रा के कारण वह बहुत थक गया। उसे लगता कि वह अपने घुटनों के बल अब गिरा, तब गिरा। बड़ी साव-धानी के साथ उसने रास्ता पार किया।

गली के प्रत्येक ईंट-पत्थर के प्रति उसके हृदय में प्रेम उमड़ रहा था; क्योंकि उसे आशा नहीं थी कि वह किसी दिन, किसी प्रकार यहां तक पहुंच सकेगा। इस नगर को देखकर उसे उतनी ही प्रसन्नता हुई, जितनी कि किसी मित्र को देखने से होती है।

साइबेरिया से यहां आने तक की अधिकांश यात्रा उसने रेलवेपथ के सहारे चलते-चलते की थी। सारा क्षेत्र उदासीन, उपेक्षित और बर्फ से ढका पड़ा था। श्वेत दल के लोगों द्वारा छोड़ी हुई ट्रेनें बेकार पड़ी थीं। इसका कारण था ईंधन की कमी, बर्फ की अधिकता और कोलचक्र की पराजय। मीलों तक बर्फ़ में गड़े हुए ट्रेनों के बेकार डिब्बे दिखाई देते थे। इनमें से कुछ डिब्बे राजनीतिक भगोड़ों और डकैतों के अड्डे बन गये थे। लेकिन अधिकांश रास्ता सर्दी और टायफुस से मरने वाले लोगों की कब्र बन गया था। आसपास के गांव भी इस बीमारी और उसके परिणाम से आतंकित थे। इन दिनों यह कहावत सत्य सिद्ध हो रही थी कि एक आदमी दूसरे आदमी के लिए भेड़िया है। एक यात्री सामने आते हुए दूसरे यात्री को देख एक ओर हट जाता। एक अपरिचित व्यक्ति दूसरे अपरिचित व्यक्ति को इसलिए मार डालता कि उसे भय था कि कहीं यह मुझे न मार डाले। इधर-उधर मनुष्य-भक्षण की घटनाएं भी हो जातीं। मानवीय सभ्यता के नियम विलुप्त हो गये थे। आदम-कालीन जंगली नियम अमल में लाये जा रहे थे। उन्हें सपने भी वे ही दिखाई देते जो प्रागेतिहासिक काल में गुफाओं में रहने वाले लोग देखा करते थे और यहां अनायास उसे एक पत्र प्राप्त हुआ; इतना प्यारा पत्र कि उसने उसे चूमकर होंठों से लगा लिया।

थकान गायब हो गयी। अनियंत्रित उत्तेजनाभरी अधीरता से वह व्याकुल हो उठा। सम्प्रति के बजाय आगत बीमारी के ये स्पष्ट लक्षण थे। आराम करने से पहले, वह अपने बाल और बढ़ी हुई दाढ़ी कटवाना चाहता था। शहर में से गुजरते वक्त नाई की दुकान की तलाश करते समय उसने अधिकांश दुकानों को खाली देखा। कुछ दुकानों की व्यवस्था और व्यवसाय बदल गया था। शेष बंद हो गयी थीं।

उसके पास उस्तरा नहीं था। कैंची से काम चल सकता था, इसलिए उसने लारा का सारा ड्रेसिंग टेबल खोज डाला, लेकिन कैंची उसे मिली नहीं। उसे याद आया, पास ही एक दर्जी की दुकान है। बंद होने से पहले यदि वह वहां पहुंच जाय, तो उससे कैंची उधार मांगी जा सकती है।

यूरा ने दरवाजा खटखटाया और अंदर आने की इजाजत मांगी। प्रत्युत्तर मिला कि यहां व्यक्तिगत काम लिया नहीं जाता। इसलिए वे उन्हें अकेले छोड़कर यहां से चले जायें। एक स्त्री ने हाथ उठा हथेली को छोटी नाव का आकार देते हुए यह बताने में कसर नहीं रखी कि उसकी हरकतों से वे नाराज हो रही हैं।

भौंहों के संकेत से जब उससे पूछा गया कि आखिर वह चाहता क्या है तो उसने वापस अंगुलियों के इशारों में जवाब दिया—मुझे कैंची चाहिये। चूंकि यह बात किसी की समझ में नहीं आई, इसलिए उन्होंने इसे निरी उद्दण्डता ही समझा। बाहर खड़े फटेहाल और भद्दे तरीके से व्यवहार करते हुए वह पागल-सा दिखाई दे रहा था। उसने निश्चय किया कि पिछले दरवाजे को खटखटाकर देखा जाए। काले रंग की, अधेड़ उम्र की, एक रक्ष-सी स्त्री ने आकर पिछला दरवाजा खोल दिया। उसकी काली पोशाक से जाहिर होता था कि वह प्रमुख दर्जिन है।

'तुम हमारे पीछे क्यों पड़े हो, जी ? हमें अपना काम क्यों नहीं करने देते ? अच्छी बात है, बताओ, क्या बात है ? क्या चाहिये तुम्हें ?'

'मुझे कैंची की जरूरत है। इसमें ताज्जबु की कोई बात नहीं। अपने बाल और दाढ़ी काटने के लिये मुझे कैंची चाहिये। अपना काम यहीं खत्म करके तत्काल कैंची लौटा दूंगा। दे दें कृतज्ञ रहूंगा।'

वह उसे अपने साथ एक छोटे से कमरे में ले गयी—उसे एक कुर्सी पर बिठा दिया गया। नाई की तरह उसके चिबुक तक चादर ढंक दी गई और वह देवी जी एक जोड़ी कैंची, कंघी उस्तरा आदि सामान ले आयीं। यूरी के आश्चर्य को देखकर उसने कहा—मैंने हर तरह का काम किया है। दूसरे महायुद्ध में जब मैं परिचारिका थी; तब मैंने बाल काटने का काम सीखा था। अच्छा, पहले मैं बाल काट देती हूं, इसके बाद दाढ़ी बना दूंगी।

—'बड़ी कृपा। यदि केश बिल्कुल छोटे कर दें तो और मेहरबानी।'

—'मैं अपनी ओर से किसी तरह की कसर नहीं रहने दूंगी। अच्छा,

एक बात बताओ, तुम तो पढ़े लिखे मालूम होते हो, फिर इस तरह गंवारों का अभिनय क्यों करते हो, जैसे जानते ही नहीं कि हम यहां दस दिनों का सप्ताह मनाते हैं और आज महीने की सत्रह तारीख है। प्रत्येक सात अंक की तारीख को यहां के नाई छुट्टी नहीं मानते ? तुम्हें मालूम नहीं है ?'

—'सचमुच, मुझे कुछ भी नहीं मालूम। नाटक नहीं रच रहा हूं। मैंने आपको बताया न, कि मैं अभी-अभी बहुत दूर से आ रहा हूं।'

—'हिलो मत, अन्यथा चमड़ी कट जाएगी। तो, तुम अभी आये हो ? लेकिन आये कैसे ?'

—'अपने दोनों पांवों पर।'

—'महापंथ से ?'

—'कुछ रास्ता महापंथ से तय किया, कुछ रेलवे लाइन के साथ-साथ। रास्ते में पता नहीं, कितने किस्म की गाड़ियां पड़ी थीं। लेकिन सब बेकार ..बर्फ से ढकी हुई।'

—'बस थोड़ा-सा और है। फिर मेरा काम खत्म। परिवारिक काम है ?'

—'नहीं तो। मैं ऋण-सहकारी-संस्थाओं के पर्यटन निरीक्षक के रूप में काम करता था। मुझे अपने काम के सिलसिले में साइबेरिया के दौरे पर भेजा गया था और वहां जाकर मैं बुरी तरह फंस गया। आप तो जानती ही हैं, एक भी ट्रेन वहां से आजकल नहीं आती। सो, पैदल चलने के अलावा चारा ही क्या था ? रास्ता तय करने में 6 सप्ताह लगे। बीच में जो कुछ देखा, वह कहना भी चाहूं तो समझ में नहीं आता कि उसकी शुरूआत कैसे करूं ?'

—'मैं तुम्हारी जगह होती तो कुछ कहती ही नहीं। मेरी एक या दो नसीहतें गांठ बांध कर रख लो। पहले अपना चेहरा आईने में देखो। चद्दर में से हाथ निकाल लो, लो पकड़ो। ठीक है।'

—'मेरे ख्याल में इन बालों को थोड़ा और छोटा कर दें तो कैसा रहेगा ?'

—'छोटे कर देने पर भद्दे लगेंगे। मैं कह रही थी—कुछ बोलो मत। इस जमाने में चुप रहना ही बेहतर है। ऋण सहकारिता, लक्जरी ट्रेन, निरीक्षण-यात्रा, इन तमाम बातों को भूल जाओ। देखते नहीं हो, समय कैसा है ? वर्ना ऐसे फेर में पड़ जाओगे कि छुटकारा पाना मुश्किल हो जायेगा। अधिक अच्छा तो यह है कि तुम डाक्टर अथवा स्कूल-मास्टर बनने का बहाना कर लो। दाढ़ी छोटी हो गयी है। अब साबुन लगाकर साफ कर देती हूं। इसके बाद तुम दस साल पहले के जवान दिखाई देने लगोगे। मैं केटली का पानी गर्म करके अभी ले आती हूं।'

यूरी बैठा सोच रहा था—यह कौन है ? किसी-न-किसी तरह से इससे मेरा सम्बन्ध सम्पर्क जरूर रहा होगा। इस महिला को मैंने कहीं देखा है, अथवा इसके बारे में कुछ सुना है...या इनके कारण किसी बात की याद ताजा हो जाती है। लेकिन समझ में नहीं आता कि यह कौन है ?

तीसरी बार खाली फ्लैट में जब वह लौटकर आया तो उसके दिमाग में एक ही बात बारम्बारी चक्कर काट रही थी—वे मास्को में हैं ! मास्को में ! खाली फ्लैट में चूहों का उत्पात उसी तरह जारी था। यूरी को विश्वास हो गया कि थकान भले चाहे जितनी हो, चूहों के इस उपद्रवकाण्ड में सोना मुश्किल है। सोने से पहले चूहों के बिलों को मूंद देना आवश्यक है। सौभाग्य की बात यह है कि सोने के कमरे में, फ्लैट के अन्य भाग की अपेक्षा कम बिल थे। अंधेरा बढ़ता जा रहा था, इसलिए यह आवश्यक था कि वह अपना काम तुरन्त कर डाले। रसोईघर की मेज पर, संभवत: उसके आने की संभावित आशा में, एक लालटेन रखी हुई थी। पास ही दियासलाई पड़ी थी। दियासलाई और पैराफिन तेल, दोनों का महत्व वह जानता था, इसलिए मितव्ययिता आवश्यक थी। थोड़ी देर में ही उसने बिलों को टूटे हुए शीशों से भर दिया। दरवाजा इतना फिट था कि एक बार बंद कर देने पर चूहों के अंदर आने की कोई संभावना नहीं रहती।

भोजन करने के बाद उसे इतने जोर की नींद आने लगी कि वह सोफे पर ही सो गया। दीवारों के पीछे से आने वाली चूहों की गुस्ताख

आवाज भी उसकी नींद नहीं तोड़ सकी। वह अजीब से बुरे सपने देख रहा था। इन्हीं के कारण जब वह जागा तो पसीने से तरबतर हो गया था। बुखार से बदन जल रहा था और एक स्त्री उस पर झुकी हुई थी। यह लारा थी। उसके बाल उसे छू रहे थे। वह खुशी से जैसे पागल हो उठा।

15

लारा ने उससे आग्रह किया :

'आपको अपने परिवार के पास अवश्य जाना चाहिये। आवश्यकता से अधिक एक दिन भी मैं आपको रोकना नहीं चाहती। देखिए तो क्या से क्या हो गया ? जब आप बीमार थे, तब से कितना कुछ बदल गया है ? सोवियत रूस के अंग होते ही हमारा अस्तित्व छिन्न-भिन्न हो गया। मेरी राय तो यह है कि फिलहाल यहीं कुछ काम ढूंढ लीजिये। आप अपने पेशे के अनुसार ही काम करिये। यहां के लोग उसे पसन्द भी करेंगे। कुछ-न-कुछ काम तो आखिर आपको करना ही है। जो स्थिति सामने है, वह कोई बहुत अच्छी थोड़े ही है ? आपके पिता साइबेरिया के लखपति थे, आपकी पत्नी एक धनवान की लड़की है। और आप पार्टिशन (सपक्षी) के फरार व्यक्ति हैं। बचने का कोई उपाय नहीं। क्रांतिकारी सेना का पद आपने छोड़ दिया है—यह बहुत ही घातक है। आपके लिए बेकार रहना खतरनाक है। देखो तो, मेरी भी स्थिति अच्छी नहीं है। मुझे भी कुछ न कुछ करना ही होगा। मैं तो जैसे ज्वालामुखी पर खड़ी हूं।'

—'तुम्हारा मतलब है—कि स्ट्रेलिनिकोव के बारे में क्या होगा ?'

—'हां, उन्हीं के लिए तो कहती हूं। पता नहीं, उनके कितने शत्रु पैदा हो गये हैं। अब चूंकि कम्युनिस्ट सेना जीत गयी है, अतः गैरदलीय सैनिक जो उच्चपदाधिकारी थे और जो अधिक अनुभवी थे, उनकी किस्मत ही

फूट गयी है। उन्हें यदि केवल निकाल दिया जाय अथवा देश निकाला दे दिया जाय—मारा न जाय, तो ही गनीमत समझिये। उन पर बहुत खतरा है। वे उनका शिकार बन सकते हैं। आपको मालूम है, वे पूर्व की ओर गये थे। वहां से भाग कर वे कहीं छिप गये हैं। उनकी तलाश जारी है। जाने दीजिये, उनके बारे में मैं अधिक बात नहीं कर सकती। मुझे रोना पसन्द नहीं; और यदि मैंने आगे कुछ भी कहा तो मैं रो पडूंगी।'

—'उसके साथ तुम्हारा बहुत प्रेम था लारा ? अभी भी उतना ही है ?'

'प्रिय, मैंने उनसे विवाह किया है। वे मेरे पति हैं। उनका व्यक्तित्व आश्चर्यजनक ओजस्वी है। हमारे वैवाहिक जीवन के नष्ट होने का कारण मैं स्वयं हूं। यह मतलब नहीं कि मैंने कभी उन्हें दुख दिया हो, हानि पहुंचाई हो। वे कितने प्रभावशाली एवं उदार हृदय हैं और सच्चाई उनकी कितनी बड़ी खूबी है, यह मैं कैसे बताऊं...ओह, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। उनकी तुलना में मैं कुछ भी नहीं हूं...यही तो मेरा सबसे बड़ा अपराध है। जाने दीजिये, इस समय इस बारे में अधिक बातचीत न करें, तो ही अच्छा है।'

यूरा के मन में इस वक्त प्यास का आवेग भी था, और जलन भी। वह जानना चाहता था कि उन लोगों ने रूस की राजधानी में बसने वाले चरित्रहीन, लोलुभी वकील के विषय में चर्चा की। चर्चा का विषय उस घृणित चरित्र के बाद पुनः लारा के पति पर बदल गया।

लारा ने कहा—अगर कभी, किसी भी तरह, किसी भी स्थिति और किसी भी कारण उन्हें मैं उनकी मेज पर पुस्तकों में तल्लीन देख सकूं—तो मैं पृथ्वी के किसी भी कोने में क्यों न रहूं—नंगे पांव, उन तक दौड़ कर पहुंच जाऊंगी। मेरे रोएं-रोएं से उनके लिए पुकार निकलेगी। उनकी पिछली सरल ईमानदारी के प्रति मैं संसार की कोई भी वस्तु न्यौछावर करने को तैयार हूं। यहां तक कि आपको भी जिसके प्रेम में निश्छल आनन्द है, स्वाभाविकता है और जो मेरा अपना एक अंग बन गया है—उसे भी उनके लिए छोड़ दूंगी। ओह, माफ करना...पता नहीं मैं क्या कह गयी...।'

वह उसकी छाती पर लुढ़क पड़ी और रोने लगी।

उसने अपने आंसू पोंछ कर संयत स्वर में कहा—'क्या कर्तव्य की यही पुकार आपको टोन्या के पास नहीं खींच रही है ? आह, हे प्रभु, हम कितने असहाय हैं ? हम लोगों का क्या होगा ? हम क्या करें ?'

—'मैंने आपके प्रश्न का जवाब नहीं दिया कि हमारे वैवाहिक जीवन के नष्ट हो जाने का कारण क्या है ? मैं बताती हूं। यह सिर्फ मेरी ही कहानी नहीं है, यह आज बहुत से लोगों का दुखान्त दुर्भाग्य है।'

—'कहो।'

—'युद्ध से दो साल पहले हमारा विवाह हुआ था। हमारे दाम्पत्य जीवन का श्रीगणेश हुआ ही था कि युद्ध छिड़ गया। इस पीढ़ी के लिए सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण घातक अगर कोई चीज है तो वह है—युद्ध ! मुझे अपने बचपन के दिन याद आते हैं, जबकि हम गत शताब्दियों के दृष्टिकोण से सहमत थे। यह सभी लोग मानते थे कि तर्क-संगत बात सुनी जाय, लेकिन किया वही जाय, जिसके लिए आत्मा गवाही दे। हत्याओं की कथा सिर्फ उपन्यास कहानियों, नाटकों आदि में ही पाई जाती थी। वास्तविक जीवन में एक आदमी दूसरे आदमी के खून करने की घटना शायद ही कभी हो पाती। और इसके बाद अचानक सब कुछ बदल गया। शांत, निर्दोष और व्यवस्थित जीवन के बदले रक्तपात, आंसू और पागलपन भरा, कानून द्वारा मान्य किया गया पुरस्कृत हत्याकाण्ड आरम्भ हुआ। मैं कहती हूं कि इसकी सजा उन लोगों को एक न एक दिन अवश्य भुगतनी होगी। आपको तो याद ही होगा कि किस विघटन का आरंभ हुआ था। किस प्रकार एक साथ तमाम चीजें खंडित होने लगीं। खाद्यान्न की पूर्ति किस प्रकार समाप्त हो गयी। घरेलू जीवन किस प्रकार विषग्रस्त हो गया और नैतिक पतन किस तेजी से आरंभ हुआ ?

यूरा सुनता रहा। और फिर बोला—'उसके लिये तुम्हारा यह प्यार बना रहे। मैं उससे द्वेष नहीं करता।'

दो-तीन महीने इसी तरह गुजारने के बाद अक्टूबर में एक दिन यूरी ने लारा से कहा—'ऐसा लगता है कि मुझे अब नौकरी छोड़नी होगी। हमेशा ऐसा ही होता है। पहले सब कुछ अच्छा ही लगता है। वे कहते हैं—आओ,

हम अच्छे कामों का और ईमानदारी का स्वागत करते हैं। हमारे लिए इससे बढ़कर खुशी की क्या बात हो सकती है ? अपना काम करो, अनुसंधान जारी रखो, और संघर्ष करते रहो। व्यावहारिक रूप से ये सब क्रांति और सरकार की प्रशंसा में इस्तेमाल किये जाने वाले शब्द मात्र हैं। मैं इससे ऊब गया हूं। मैं ऐसी चीजों का अभ्यस्त नहीं हूं। मैं उनका पक्ष नहीं लेता। लेकिन जानता हूं कि वे अपने दृष्टिकोण से सही हैं। फिर भी उन्हें युग-नायक नहीं मानता। न अपने आप को उनसे हीन समझता हूं और न अस्पष्टता और अत्याचार का पक्ष ही लेता हूं। वेन्देन यापिन के बारे में तुमने कुछ सुना है ?'

—'आप ही ने एक बार मुझे बताया था। सीमा तुन्तसेवा उनके बारे में अक्सर बात किया करती है। वह उनकी बड़ी प्रशंसक है। लेकिन मैंने उनकी कोई पुस्तक अभी तक नहीं पढ़ी। मेरी रुचि दर्शन में नहीं है। मेरा ख्याल है कि जीवन और कला में दर्शन का महत्व नमक की तरह है। लेकिन इसी को बहुत अधिक महत्व देना, मुझे वैसा ही लगता है, जैसा किसी को नमक के पानी पर रहने के लिए कहना। इन ऊटपटांग बातों के लिए मुझे माफ करना।

—'नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। मैं तुम्हारे विचारों से सहमत ही हूं। मेरा ख्याल है कि मुझ पर मेरे मामा का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। मैं अंत:-प्रेरणा पर विश्वास करता हूं। कितनी अजीब बात है यह कि लोग कहते हैं कि मेरा बीमारी का विश्लेषण बिल्कुल खरा होता है ! यह है भी सच कि मैं इसमें गलती नहीं करता। लेकिन सारी स्थिति एक ही नजर में भांप लेना अन्त:प्रेरणा नहीं है तो और है क्या ?'

अपने कर्तव्य की भावना से वह झुक-सा जाता। लारा अथवा कात्या के प्रति इसका कोई विरोध नहीं था। बल्कि उनके प्रति उसका उतना ही प्रेम अब भी था, अविभाज्य अखंडित। लेकिन फिर भी अन्तर्द्वन्द्व की पीड़ा से वह दुखी था। लेकिन अब पुराने घाव के रोगी की तरह वह इससे अभ्यस्त हो गया था। पकड़-धकड़ जारी थी ही। यूं वक्त गुजरता जाता था।

कोई भी नया हादसा होने पर लारा कहती—स्थिति अच्छी नहीं है। हम

भी अधिक दिनों तक सुरक्षित नहीं रह सकते। चिन्ता है कि कात्या का क्या करूं—

'तो—'

'एक बार मास्को क्यों नहीं चलते।'

'मास्को।'

'तुम भी—'

'मैं वहां क्या करूंगी—मैं नहीं जा सकती। मेरे पाशा का निर्णय यहीं होगा। मैं यहीं रहूंगी, ताकि वक्त जरूरत पर काम कर सकूं—।'

फिर भी यूरा स्टेशन तक टोह, लेने गया—और वहां से लौटा तो इतना निराश था कि लेटते ही सो गये उसे नींद से जगाकर एक पत्र दिया।

यह पत्र टोन्या का था, लिखा था—

'हमारे एक लड़की हुई है। आपकी मां की स्मृति में उसका नाम माशा रखा गया है। हमें निष्कासन का दण्ड मिला है।'

'यह दुर्भाग्य की बात है; खासकर उस हालत में, जब कि आप हमारे साथ नहीं है। फिर भी खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि ऐसे भयानक समय में हमें सिर्फ निष्कासन का ही दण्ड मिला। लेकिन आप कहां हैं ? मैं यह पत्र आन्तिपोव के पते से भेज रही हूं। यदि किसी दिन वह आपको पा सकी, तो यह पत्र वह आपको दे देगी। मेरे दुख की सीमा नहीं है कि इस निष्कासन के बाद आपसे कभी मुलाकात हो सकेगी या नहीं ? मेरा निश्चित विश्वास है कि आप सकुशल हैं, जीवित हैं। जब आप प्रकट हो जायेंगे, तब तक आशा है कि रूस में स्थिति इतनी नाजुक नहीं रहेगी, और आपको पार-पत्र आसानी से मिल जायेगा। तब भगवान की दया से, हम एक बार फिर मिल जायेंगे। लेकिन अपने इतने बड़े सौभाग्य पर मुझे स्वयं विश्वास नहीं होता। दुख की बात यह है कि मैं आपको बहुत प्यार करती हूं; मगर आप मुझे नहीं चाहते। मैं इस न्याय का कारण खोजना चाहती हूं। इस बात का अर्थ समझने की कोशिश करती हूं, इसका कारण खोजना चाहती हूं। इस बात का अर्थ समझने की कोशिश करती हूं, इसका कारण ढूंढ निकालने की चेष्टा करती हूं। अपने बारे में बहुत सोचने पर भी मुझे

नहीं मालूम कि किस गलती के कारण मुझे यह दुर्भाग्य भुगतना पड़ रहा है ? क्यों आपके विचार मेरे प्रति इतने अनुदार हैं ? मेरी प्रतिछाया आपको टूटे हुए कांच में ही क्यों दिखाई देती हैं। 'काश आप जान सकते कि मैं आपको कितना प्यार करती हूं। आप में जो कुछ साधारण और असाधारण है, जो कुछ सुविधाजनक और असुविधाजनक है, वह सब मुझे प्रिय है। जो कुछ आप में है वह सब मेरे लिए मूल्यवान है। अभिव्यक्ति से मुखरित आपका सुन्दर चेहरा मुझे बार-बार याद आ जाता है। वासना और इच्छाओं पर आपकी बुद्धि ने विजय पाई है। आपकी कोई इच्छा तो नहीं है—इस विरक्ति से भी मुझे प्यार है। संसार में आपसे बढ़कर मेरे लिये और है ही क्या ? किन्तु सुनिए, यदि आप मुझे इतने प्रिय न भी होते, यदि मैं आपको इतना पसन्द न भी कर पाती, अथवा आपकी प्रशंसा न कर पाती, तो भी मैं यही सोचती कि मैं आपके प्रेम में आकण्ठ डूबी हूं। फिर मेरा उपेक्षा भाव क्या मुझमें छिप नहीं जाता, आपको अपमानजनक कष्टदायक दण्ड देने के भय मात्र से ही मैं यह समझने का ध्यान नहीं रखती, कि मैं आपसे प्रेम नहीं करती। इस बात को न मैं जान पाती न आप। क्योंकि प्रेम न करना एक हत्या के समान है मुझमें किसी पर इतनी चोट पहुंचाने की शक्ति नहीं है। अभी तक कुछ भी निश्चित नहीं है। लेकिन सम्भवत: पेरिस जा रहे हैं। पिताजी आपको आशीर्वाद भेज रहे हैं। साशा बड़ा हो गया है। सुन्दर होते हुए भी वह स्वस्थ लड़का है। आपके बारे में जब भी कभी बातचीत होती है वह चिल्लाने लगता है, फिर उसे शांत करना और मेरे लिये रुलाई रोकना मुश्किल हो जाता है। अच्छा, अलविदा। आने वाले वर्षों की अन्तहीन जुदाई, अनिश्चितताओं में आपके दीर्घजीवन की कामना के लिए मुझे आप मर काइस्ट का निशान बना लेने दो। सुदीर्घ अन्धकारमय मार्ग को निष्कंटक पार करने के लिए मैं अपनी मंगलकामनाएं आप तक भेजती हूं। मुझे आप से कोई शिकायत नहीं।

'आप चाहे जहां रहें, जिस रूप में रहें मैं यही चाहती हूं कि आप कुशल से रहें। बस। यूराल्स छोड़ने से पहले मैं लारा से परिचित हो चुकी हूं। यूराल्स हमारे लिये कितना भयानक और निर्णायक स्थान सिद्ध हुआ है।

कठिन समय में वह बराबर मेरे साथ ही रही। प्रसूति के समय उसने मेरी सहायता की है। मैं उसके प्रति कृतज्ञ हूं। मैं बनावटी बातें करना नहीं चाहती। वह ठीक मुझसे विपरीत है। मैंने जीवन को सरल बनाने और बुद्धिगत हल का पक्ष ग्रहण करने के लिए जन्म लिया है। जब कि उसने उलझन पैदा करने और मार्ग को भ्रामक बनाने के लिए। खुदा हाफिज ! मैं पत्र यहीं समाप्त करती हूं। सामान बांधा जा रहा है। यूरा, जो यूरा, मेरे प्रीतम, मेरे पति—यह सब क्या हो रहा है ?क्या हम कभी एक-दूसरे से नहीं मिल सकेंगे ? मैंने जो लिखा है, उसका अर्थ आप समझ रहे हैं ? समझ रहे हैं न ? वे जल्दी मचा रहे हैं। लगता है कि मुझे सत्य की ओर घसीट कर ले जाया जा रहा है। यूरा, ओ यूरा !'

पत्र समाप्त करके उसने आंखें उठाकर सामने की ओर देखा। आंसू नहीं थे। चिन्ता की ज्वाला से वे कभी के सूख चुके थे। उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। अपने इर्द-गिर्द के वातावरण को वह भूल गया। हवा के कारण बाहर तेजी के साथ बर्फ गिर रही थी। मानो किसी को पकड़ने के लिए दौड़ रही हो। उस ओर टकटकी लगाये यूरा देखता रहा। बर्फ की ओर उसकी नजर नहीं थी बल्कि सामने खिबरी हुई बर्फ में वह टोन्या का पत्र पढ़ रहा था। बर्फ के जो तारे झिलमिला रहे थे, वे उसे पत्र के बीच की सफेद जगह की तरह दिखाई देने लगे—सफेद—अन्तहीन ! वह छाती पकड़ कर चीख पड़ा। उसे लगा कि जैसे वह बेहोश हो जाएगा। लड़खडाते हुए कदमों के साथ वह सोफे तक पहुंचा और अचेत होकर उस पर गिर पड़ा। पर भयमिश्रित पागलपन केवल यूरा पर नहीं लारा पर भी सवार हुआ जब पता लगा कि कोमारोवस्की यही है।

16

'यहां, कहां ?'

—'नहीं, यहां नहीं। वे सुबह आये थे। कहते थे कि रात को भी जाऊंगा। वे आप से कुछ बातचीत करना चाहते हैं।'

—'वह यहां क्यों आया था ?'

—'मैं उनकी कोई बात नहीं समझी। सुदूरपूर्व जाने से पहले वे आपको और पाशा को देखने के लिए यहां आये थे। वे कहते हैं पाशा, आप और मैं—हम तीनों भयंकर खतरे में हैं। उन्होंने कहा कि यदि उनकी राय पर चला जाय तो बचाव का कोई रास्ता निकल सकता है।'

—'मैं बाहर जा रहा हूं। उससे मिलने की मेरी कोई इच्छा नहीं।'

लारा उसके पैरों से लिपट गई। यूरी ने एक तरह जबरदस्ती ही उसे ऊपर उठाया।

वह रोती हुई कह रही थी—'आप कहीं मत जाइए। मैं उनसे अकेले में डरती ही नहीं हूं; बल्कि उनसे घृणा भी करती हूं। इसके अलावा वह इतने अनुभवी और कुशल हैं कि उनकी राय हमारे बहुत काम आ सकती है। मुझे मालूम है उन्हें देखकर आपको अरुचि होगी। लेकिन इसके बावजूद भी आप जाइये मत। मैं अकेले में उनके सामने नहीं रहना चाहती।'

—'तुम्हें हो क्या गया है ? इतनी परेशान क्यों हो रही हो ? आखिर तुम चाहती क्या हो ? उठो, हंस दो। इस प्रेत ने तुम्हें बहुत डरा दिया है। डरो मत। मैं यहीं हूं। कहीं नहीं जाऊंगा। तुम्हारे लिए तुम्हारे एक इशारे से, मैं बखुशी उसकी हत्या कर सकता हूं।'

तय किया गया कि कोमारोवस्की को रसोईघर में ही बिठाया जाए। रोटी और उबाले हुए आलुओं की प्लेटें सजा दी गयीं। विशालकाय फर्नीचर के बीच, छोटे लालटेन की तरह रेंडी के तेल की बोतल में एक बत्ती धरी हुई थी।

दिसम्बर की काली रात में, कोमारोवस्की जब उनके घर आया तो वह बर्फ से ढंका हुआ था। टोपी, कोट और बूट से झरने वाली बर्फ के कारण नीचे फर्श पर एक छोटा-सा तालाब बन गया था। इस समय उसकी दाढ़ी-मूंछों पर बर्फ का पलस्तर लगा हुआ था।पुराना, पर बढ़िया सूट पहने,

अंदर आकर औपचारिक अभ्यर्थना से पहले उसने जेब से एक कंघा निकालकर अपने बालों को संवारा।

इसके बाद उसने दोनों हाथ लारा और यूरा की ओर बढ़ा दिये। यूरा की ओर मुखातिब होकर उसने कहा—'मेरा ख्याल है हम काफी पुराने परिचित हैं। शायद तुम्हें मालूम ही है कि मैं तुम्हारे पिता का घनिष्ठ मित्र था। उनकी मृत्यु मेरे हाथों में ही हुई थी। लेकिन तुम्हारी उनसे कोई समानता नहीं। वे बहुत खर्चीले, मुक्त और मनमौजी आदमी थे। तुम पर शायद तुम्हारी मां का अधिक प्रभाव पड़ा है। वह एक भली आदर्शवादी स्त्री थी।'

—'लारा ने मुझे बताया था कि आप मुझसे मिलना चाहते हैं। शायद कुछ काम हो। यह मुलाकात मेरी इच्छा से नहीं हो रही है; और न मुझे याद आ रहा है कि हमारा कोई पुराना परिचय है। अच्छा, काम की बात शुरू कीजिये।'

—'मैं तुम दोनों को देखकर बहुत खुश हुआ हूं। मैं सब कुछ अच्छी तरह से जानता-समझता हूं। बल्कि, मुझे कहना चाहिये कि तुम दोनों की जोड़ी बात अच्छी जंचती है।'

—'आप अपने मतलब की बात कहिये। आप भूल गये हैं कि आप को क्या कहना चाहिये ? हमने आपसे अपने पर टीका करने के लिए नहीं कहा था।'

—'ओह, तुम तो बड़ी तेजी से गर्म हो रहे हो। लगता है कि पिता का असर तुम पर किसी हद तक मौजूद है। वे भी इसी तरह आपे से बाहर हो जाये करते थे। अच्छा मेरे बच्चों मेरे आशीर्वाद लो। सचमुच तुम बच्चे ही हो। बोलने में ही नहीं, हर तरह से तुम लोग बिलकुल नादान हो। मैंने तुम्हारे बारे में इन दो दिनों में मालूम कर लिया है। तुम लोग शायद नहीं जानते कि तुम तलवार की धार पर चल रहे हो। यदि इस बारे में कुछ किया नहीं गया तो तुम्हारी स्वतंत्रता के—और शायद तुम्हारे जीवन के दिन भी गिने-चुने ही बाकी हैं। यूरी एण्ड्रोविच, यहां एक निश्चित साम्यवादी पद्धति हैं। कुछ ही लोग उसको सही तौर पर समझ पाये हैं। लेकिन ऐसा तो नहीं देखा कि कोई अपने जीवन को इस तरह उपेक्षाभाव से फेंक दे।

इस भय से, इस तरह आंखें मूंद लेने का तात्पर्य मेरी समझ में नहीं आता। उन तमाम लोगों के लिए तुम तिरस्कृत और बदनाम हो। तुम्हारा अतीतकालीन इतिहास, तुम्हीं तक गुप्त रह सकता, तो बात दूसरी थी। मास्को के तमाम लोग तुम्हें अच्छी तरह से जानते हैं। कामरेड आन्तिपोव और तिविरजिन अपने घातक हथियार तेज कर रहे हैं।'

'कुछ भी हो यूरा, तुम आखिर पुरुष हो। तुम्हें अपने जीवन को खतरे में डालकर बेवकूफी करने का पूरा अधिकार है। लेकिन लारा एक बच्चे की मां है। वह तुम्हारी तरह अंधी होकर नहीं चल सकती। उसे स्थिति की गंभीरता समझाने की काफी कोशिश की। लेकिन वह मेरी बात पर कान ही नहीं देती। अच्छा हो, यदि तुम अपने प्रभाव के बल पर उसे यह समझा सको कि उसे अपनी कन्या की सुरक्षा के लिए मेरे प्रस्ताव का अपमान नहीं करना चाहिये।'

—'मैंने कभी किसी पर अपने विचार नहीं लादे; खासकर जो मेरे अति निकट हैं, उन पर तो नहीं ही। लारा आपकी बात सुनती है, अथवा नहीं, यह उसके अधिकार की बात है। जैसा वह उचित समझे, करे।यह उसका अपना मामला है। इसके अलावा मुझे यह भी नहीं मालूम कि आपका प्रस्ताव क्या है ?'

—'तुम्हारे पिता की मुझे बहुत याद आ रही है। ठीक तुम्हारी ही तरह वे भी जिद्दी थे। मैं अपना प्रस्ताव तुम्हें बताता हूं, बिना बीच में बोले तुम धीरज के साथ सुन सकोगे ?'

'महत्वपूर्ण परिवर्तनों का आयोजन जोर-शोर से हो रहा है। काफी विश्वस्त सूत्रों से मुझे जो समाचार मिले हैं, उन्हें तुम सच ही मान लो। वे निपुण, कानून के प्रति उदार, जनतांत्रिक पद्धति की स्थापना करना चाहते हैं। यह जल्द ही होने वाला है। इसलिए दण्ड देने वाले लोगों का काम समाप्त करने से पहले, उन्हें स्थानीय हिसाब किताब साफ करने के लिए कह दिया गया है। वे बड़ी जल्दी में हैं। इसलिए प्रस्तुत परिस्थितियों के अंत से पहले भीषण क्रूरता का सामना करना होगा। तुम्हारा नाम भी इसी सूची में है। मैंने स्वयं देखा है। जो कुछ हो रहा है, वह सोवियत सरकार की

गुप्त आज्ञानुसार ही हो रहा है। लेकिन इस बारे में खुलेआम बात अभी तक नहीं की जा सकती। मैं तुम्हें और लारा को अपने साथ ले जा सकता हूं। वहां तुम्हें वोट मिल जाएगा और तुम अपने परिवार के पास जा सकोगे। तुम्हें मालूम ही होगा कि उन्हें निष्कासन का दण्ड मिला है।'

'मैंने लारा से प्रतिज्ञा की है कि मैं स्ट्रलिनिकोव को किसी प्रकार बचा लूंगा।'

यूरी को कुछ समझ नहीं आ रहा था, मगर उसने अस्पताल से लाई शराब प्रस्तुत की जिसे पीकर वह व्यक्ति धुत हो गया।

नशे में वह अजीब-अजीब-सा भाषण कर रहा था।

लारा ने कहा—'रात काफी बीत गयी है। आपके जाने का समय हो गया है। मुझे बुरी तरह नींद आ रही है।'

—'ओह ! देर तो हो ही रही है। लेकिन तुम लोग इतने अभद्र थोड़े ही हो सकते हो कि इस अंधेरी रात में मुझे बाहर धकेल दो। मैं इस शहर से अच्छी तरह परिचित नहीं हूं। मेरे लिए रास्ता ढूंढ निकालना बहुत मुश्किल है।'

—'आपने यह सब पहले क्यों नहीं सोचा ? इतनी देर ठहरने के लिए आपको कहा किसने था ?'

—'तुम मेरे प्रति इतनी कठोर कैसे हो रही हो, लारा ? तुमने मुझसे एक बार भी तो यह नहीं पूछा कि मेरे पास रहने के लिए कोई जगह है भी या नहीं ?'

—'मुझे इससे कोई मतलब नहीं। यदि आप यह सोच रहे हैं कि हम आपको यहीं सोने के लिए निमंत्रित करें, तो मैं यह बता देती हूं कि टोन्या और मेरे सोने के कमरे में जगह नहीं है। दूसरे कमरे चूहों से भरे पड़े हैं।'

—'कोई बात नहीं।'

—'जैसी आपकी मर्जी।

17

—'तुम रात भर जागती हो; खाना खाती नहीं; दिन भर भूत की तरह इधर-उधर भटकती रहती हो। बात क्या है ? इतनी चिन्ता मत किया करो।'

—'इझोट अस्पताल का चौकीदार नीचे की धोबिन से प्रेम करता है। वह आया था। उसने बताया कि यहां तलाशी होने वाली है।'

—'इसमें कोई नई बात नहीं। वह कभी भी हो सकता है। इसलिए समय रहते हमें यहां से फरार हो जाना चाहिये। मास्को जाना नहीं हो सकता। अच्छा, तुम्हारी राय के अनुसार वेरिकिनो क्यों न चला जाय ? वहां चुपचाप पड़े रहेंगे। एक हफ्ते दो हफ्ते इसी तरह माह दर माह !'

—'ओह, यह बहुत ही अच्छा रहेगा। मैं जानती हूं कि आप अपने सुनसान घर को देखकर कितने दुखित नहीं होंगे। आपकी पीड़ा में मुझे जो खुशी मिलेगी उसका अर्थ क्या होगा ? जैसे किसी की प्रिय और पवित्र वस्तु को कुचल दिया जाए। मैं आपका इस तरह का बलिदान हर्गिज स्वीकार नहीं करती। लेकिन इस समय, इसके अलावा और कोई चारा भी तो नहीं। आपका मकान तो रहने लायक नहीं है। हां, मिकुलित्सिन का घर किसी हद तक ठीक है।'

—'तुम इतना समझदार हो और तुम्हारी दृष्टि इतनी तेज है, यह जानकर मैं कृतज्ञता महसूस करता हूं। सुनो, कोमारोवस्की का उस दिन के झगड़े के बाद क्या हुआ ?'

—'मैं कुछ भी नहीं जानती। मुझे मतलब भी नहीं। आपने पूछा क्यों ?'

—'कभी-कभी मैं सोचता हूं कि उसके प्रस्ताव के बारे में हम दोनों का दृष्टिकोण एक-सा नहीं हो सकता। हम दोनों की परिस्थिति एक-सी नहीं है। तुम्हें अपनी लड़की की फिक्र करनी है। मेरे भय में तुम हिस्सा बंटवारा चाहती हो, लेकिन दरअसल तुम्हें इसका कोई अधिकार नहीं।

बेरिकिनो में, इस शिशिर ऋतु में बिना शक्ति और आशा के उस निर्जन जंगल में रहना क्या पागलपन नहीं है।'

'अच्छी बात है, पागलपन ही सही। सामदेवयातोय से घोड़ा मांगकर उसके अन्तर्गत चोरबाजारी करने वाले लोगों से हम प्रार्थना करेंगे कि यदि हमारी इज्जत की अभी भी कोई कीमत है तो हमें खाने-पीने का उधार सामान दे दो। सामदेवयातोव को कह देंगे कि जब तक उसे घोड़े की जरूरत न हो, वह वहां न आवे। हम कुछ दिनों के लिए बिल्कुल एकांत, चाहते हैं। चलो मेरे प्राण, चलो चलें। हम स्वयं लकड़ियां काट लायेंगे और काम चला लेंगे।'

'मैं तुम्हारे सामने झूठा आडम्बर नहीं करता। लेकिन यह सच है कि इसमें हमारी कोई पसन्दगी अथवा नापसन्दगी नहीं है। मौत हमारे दरवाजे पर खड़ी है। इसलिए गिने-चुने दिनों को हम अपने ही तरीके से क्यों न बितायें। मृत्यु के कारण विलग होने से पहले, क्यों न हम एक-दूसरे के पास रहें। आज से बहुत सालों पहले जब स्कूली पोशाक में मैंने तुम्हें देखा था, उस समय भी तुम इतनी ही सुन्दर थीं जितनी कि आज ! पता नहीं, मुझमें कौन-सी प्रेरणा का बीज बो गई हो, बहुत कोशिश करने पर भी मैं उसकी व्याख्या आज तक नहीं कर सका।धूमिल रोशनी और बुझती हुई आवाज की तरह, यही प्रेरणा मेरी समस्त काया में व्याप्त हो गई। तुम्हारी प्रेरणा से संसार की सभी वस्तुओं को देखने का माध्यम मुझे मिल गया। उस समय ही तुम्हें देखकर मुझे लगा कि इस दुबली-पतली छोटी-सी लड़की में अखिल विश्व के नारीत्व का गुरुत्वाकर्षण सन्निहित है। यदि तुम्हें उस समय अपनी अंगुली के अग्रभाग से भी छू लेता, तो एक चिनगारी निकल कर सारे कमरे को प्रकाशित कर देती। या तो वह मुझे मार डालती अथवा मेरे शेष जीवन में वेदनापूर्ण लालसा अथवा चुम्बकीय प्रवाह भर देती; उस समय मैंने अपने आपसे आश्चर्यचकित होकर पूछा—यदि प्रेम की उत्तेजना का दुख इतना गहरा है, तो स्त्री होने पर यह कष्ट कितना अथाह न होता होगा ? यह सब किसी को पागल कर देने के लिए पर्याप्त है और मेरा सब कुछ इसी पागलपन में छिपा हुआ है।

वह पलंग के छोर पर सुसज्जित, विचारमग्न और संकोच से सिकुड़ी हुई बैठी थी।

यूरा उसके पास ही कुर्सी पर बैठा, धीरे-धीरे बोल रहा था। वह उसकी ओर गाल पर हाथ रखे चुपचाप ताकती रही। बीच-बीच में उसका सिर यूरा के कंधे पर लुढ़क जाता और वह भूल जाती कि खुशी के मारे उसकी आंखों से आंसूओं की धारा बह रही हैं।'

यूरा को अपने आलिंगन पाश में आबद्ध करते हुए उसने कहा—'आप कितने विवेकशील हैं ! हर बारे में आपका अन्दाज कितना सही है। मेरे लिए आपका ही आश्रय है। मेरी ताकत आप ही हैं। चलो चलें। मैं आपको एक बात बताऊंगी।'

यूरी ने सोचा वह अपने गर्भवती होने की बात कहना चाहती है। उसने जवाब दिया—'मैं जानता हूं।'

18

परिचित-अपरिचित व्यक्तियों में से अपने स्लेज में बैठे यूरा, लारा और कात्या वेरिकिनो की ओर चल पड़े।

रास्ते में सामदेवयातोव भी मिला और कोमारोवस्की भी, लेकिन दोनों ने उनसे नजर बचा ली। रास्ते में ग्लासा ने उन्हें देखा और विदाई का हाथ हिला दिया। सीमा के मिलने पर वे कुछ देर के लिये रुके। सीमा ने कहा—वापस लौटने पर मैं आपसे बहुत-सी बातें करूंगी। भोजन की सामग्री उन्होंने घास के नीचे रख दी थी। यूरा स्लेज में ईस तरह बैठा था; जैसे कोई ग्रामीण बैठा हो। शीतकाल के मध्यान्ह में सूर्यास्त से पहले ही दिन समाप्त हो जाता है। यूरा ने घोड़े को चाबुक लगाई, और वह तीर की तरह सरपट दौड़ पड़ा।

यूरी ने कहा—'मैं तुम्हें वह स्थान बताना चाहता था जहां सपक्षियों ने

मुझे गिरफ्तार किया था। लेकिन जंगल की शांत नीरवता ने सब कुछ अपरिलक्षित रूप से बदल दिया है। वह उस जगह को कब पार कर गया, उसे मालूम ही नहीं हो सका।

जिवागो-भवन के आगे वे स्लेज से उतर गये। अंधेरा होने वाला था, इसलिए उन्हें जल्दी थी। बेरिकिनो उजाड़ और सुनसान था। वहां कोई नहीं था।

लारा कह रही थी—'हमें जल्दी करनी चाहिये। थोड़ी देर में ही अंधेरा हो जायेगा। सोचने का समय बिल्कुल नहीं है। घोड़े को खलिहान में बांध दीजिए, तब तक मैं एक कमरे को साफ करने और रहने लायक बना देती हूं। नहीं, आपके मकान में नहीं, मिकुलित्सिन के घर में ही हम रहेंगे। यहां की प्रत्येक चीज आपको रुलाये बिना नहीं छोड़ेगी। पहला काम है, सिगड़ी को जलाकर तैयार करना। आप कुछ भी बोलते क्यों नहीं ?'

—'एक मिनट। थोड़ी देर में मैं ठीक हो जाऊंगा। तुम ठीक कह रही हो। मिकुलित्सिन के मकान में रहना ही ठीक होगा।'

वह आगे बढ़ गये।

19

मिकुलित्सिन के मकान का दरवाजा बंद था। यूरी ने पेंचकस और लकड़ी की पटरी के जरिये ताला खोला। बिना कपड़े खोले वे अंदर चले गये। मिकुलित्सिन के अध्ययन-कक्ष की स्वच्छता देखकर यूरा चकित रह गया। लगा कि जैसे अभी तक यहां कोई रह रहा था। फिर उसने ताले के बजाय कुंडी का इस्तेमाल क्यों किया ? कुछ भी हो, मिकुलित्सिन यहां नहीं हो सकते। फिर कौन था ? लेकिन उन्होंने इस रहस्य को जानने के लिए अधिक मगजपच्ची नहीं की। आजकल जगह-जगह भगोड़े भागते फिर रहे हैं। फिर इस ओर अधलुटे मकानों की भी कमी थोड़े ही है ?

शायद कोई आफीसर गुप्त वास कर रहा है। उन्होंने सोचा—यदि वह वापस लौट आया, तो उसके लिए भी व्यवस्था कर दी जाएगी। यहां कमरों की कमी नहीं। घोड़े को खलिहान में बांध दिया गया। बिना कपड़े उतारे, अपने फर-कोट और कम्बल में लिपटे हुए, सारे दिन खुली हवा में खेलते रहने वाले निर्दोष बालकों की तरह वे गहरी, शांत और आनन्दपूर्ण निद्रा में खो गये।

20

दो कमरे साफ किये जा चुके थे, वे रहने लायक बन गये थे। यूरा की अंगुलियां कुछ लिखने के लिए मचलने लगीं। उसने निश्चय किया कि लारा और कात्या के सो जाने के बाद, वह अपना यह काम शुरू करेगा। वह दिन भर इस अनलिखे को लिखने के लिए बेचैन रहा। यूरा सोच रहा था कि यदि वह लारा के साथ यहां कुछ दिन और रहा तो वह कुछ मौलिक, नवीन और उपयुक्त कृति की रचना कर सकेगा।

—'बहुत व्यस्त हैं ? क्या कर रहे हैं ?'

—'सिगड़ी में कोयले झोंक रहा हूं। बात क्या है ?'

—'मुझे टब की तलाश है। कपड़े धोने के लिए चाहिये।'

—'इस तरह से लकड़ियां जलाई गयीं तो बाद में बिना उसके काम चलाना होगा। मैं लकड़ी के बाड़े की ओर जाकर देखता हूं, शायद वहां कुछ लकड़ियां बच रही हों ? हां, तुम क्या कह रही थीं—टब ? मैंने कहीं देखा जरूर है, लेकिन याद नहीं आता—कहां ?'

—'मैंने भी कहीं देखा है। मुझे भी याद नहीं आता कि कहां देखा था। कोई बात नहीं, मैं एक बर्तन में फर्श साफ करने के लिए पानी गर्म किये लेती हूं। जो बच जायेगा, उससे अपने और कात्या के कपड़े धो लूंगी। आप भी अपने कपड़े दे दें। सब कुछ व्यवस्थित हो जाए, उसके बाद शाम

को गर्म पानी से स्नान कर लेंगे।'

—'अच्छा, मैं अपने कपड़े ले आता हूं। तुम्हारी इच्छानुसार मैंने 'फर्नीचर यहां से हटा दिया है।'

—'खैर, जब तक टब नहीं मिल जाता, मैं बेसिन में कपड़े धो लूंगी। लेकिन वह चिकना बहुत हो गया है, रगड़ कर साफ करना होगा।'

—'जैसे ही सिगड़ी गर्म हो जाएगी, मैं दूसरा फर्नीचर हटा दूंगा। मुझे अधिकांश चीजें डेस्क के दराजों में मिल जाती हैं। साबुन, दियसिलाई, कागज, पेन्सिल, पेन और स्याही...और टेबल पर पड़े लैम्प में पैराफिन तेल भी है। मुझे मालूम है यह सब मिकुलित्सिन के पास नहीं था। लेकिन कोई-न-कोई इसे कहीं-न-कहीं से लाया जरूर है।'

—'इसे कहते हैं तकदीर। यह हमारा अपरिचित साथी है।देखो, हम फिर बातें करने लगे; उधर पानी खौल रहा है।'

एक कमरे से दूसरे कमरे में जोर-जोर से बोलते, आपस में टकराते, वे काम करने में व्यस्त थे। कात्या उनके पीछे-पीछे भागती फिरती। यूरा ने सोचा, इस जमाने के ये बिचारे बच्चे ! हमारे बंजारों के से जीवन के दुख के ये भी शिकार हैं।

उसने आश्वासन देते हुए कहा—'रोने की बात नहीं बेटी।स्टोव गर्म हो गया है। फिर तुम्हें ठंड नहीं लगेगी।'

—'स्टोव गर्म हो रहा है, लेकिन मैं ठण्डी हो रही हूं।'

—'थोड़ा धीरज रखो। मैं स्टोव जलाता हूं। मां ने कहा था न, शाम को नहाने के लिए तुम्हें गरम पानी मिलेगा।'

लिबेरियस के पुराने खिलौनों को निकालकर कात्या को देते हुए उसने कहा—'लो खेलो।'

टूटी अधटूटी ईंटें और चौकोर लकड़ी के टुकड़े, ट्रेन, इंजन और तस्वीरों को देखकर कात्या ने सयानों के लहजे में कहा—'यूरी एण्ड्रोविच, ये मेरे लायक नहीं हैं। ये तो छोटे बच्चे के लिए हैं। मैं बड़ी हो गयी हूं।'

इसके बाद वह इन खिलौनों से खेलने लगी। शहर से अपने साथ वह गुड़िया लेती आयी थी। इस गुड़िया—नैना—के लिए बनाया हुआ उसका यह

मकान अधिक स्थायी था, बनिस्पत उन मकानों के, जिसमें उसने अपना अधिकांश जीवन गुजार दिया था। लारा रसोईघर में थी। वहां से उसे देखते हुए वह सोच रही थी—बच्चों का यह घर का प्रेम तो देखो। घर और व्यवस्था के प्रति यह आदिम लालसा किसी भी प्रकार नष्ट नहीं हो सकती।

यूरा को टब मिल गया था। उसे लाते हुए उसने कहा—यह अपनी जगह पर नहीं, उस छत के नीचे पड़ा था।

21

साथ लायी सामग्री पकाकर तैयार कर ली गयी। कात्या तब तक खाती और किलकती रही, जब तक कि उसका पेट फटने न लगा। भरे पेट शरारतें करती हुई, अंत में वह मां के पसमीने में छिपकर सोफे पर सिकुड़ कर सो गयी। लारा को खाना बनाने और कात्या तथा यूरी की प्रसन्नता को याद करके बड़ा संतोष हो रहा था।

एक ओर लेटते हुए उसने कहा—'इसी तरह क्रीत दासी की तरह सारी जिन्दगी गुलामी करते हुए मैं परम सौभाग्य मानूंगी और प्रसन्न रहूंगी, यदि मुझे इतना-सा मालूम हो जाए, कि इसका अंत क्या होगा ? यह सब व्यर्थ और लक्ष्यहीन नहीं है ? मुझे आप याद दिलाते रहें कि हम यहां स्थाई रूप से एक साथ रहने के लिए आए हैं। क्योंकि सच्चाई यह है कि यह सब मुझे नाटक की तरह लग रहा है कि हम किसी के मकान में जबर्दस्ती घुस आये हैं और पागलों की तरह चीखते-चिल्लाते इधर-उधर फिर रहे हैं। हम नहीं जानते कि यह जिन्दगी नहीं है—यह है रंगमंच का सेट। यह सब नाटकीय रूप धारण करने जैसा है कि हम अभिनय कर रहे हैं।'

—'तुम्हीं तो यहां आने का इतना आग्रह कर रही थीं। मैं तो सहमत था नहीं।'

—'मैंने ही कहा था। लगता है, भूल हुई। इसीलिए आपको इसे

बार-बार सोचना पड़ रहा है, हिचकिचाहट महसूस होती है। लेकिन मेरे लिए दृढ़ संकल्प लेने के सिवाय कोई चारा नहीं है। अंदर आने पर अपने बच्चे का खटोला देखकर आप मूर्छित से होने लगते हैं। यह आपका अधिकार है। लेकिन कात्या के लिए मेरा फिक्र करना आपको ठीक नहीं लगता। आपके प्रेम के लिए मुझे सब कुछ छोड़ देना होगा।'

—'जरा सोचो लारा ! अभी भी देर नहीं हुई है। तुम जो ठीक समझो, वही करो। मैं पहले ही कहता था कि कोमारोवस्की की योजना पर तुम्हें गंभीरता से विचार करना चाहिये। खैर, घोड़ा हमारे पास है, चाहें तो सीधे वापस युर्यातिन जा सकते हैं। शायद कोमारोवस्की अभी तक वहीं हैं।'

—'आप बुरा मान गये। युर्यातिन में यदि बचने का कोई रास्ता होता तो हम यहां थोड़े ही आते ? सुनिश्चित योजना के बिना यह अनिश्चितता हमेशा कायम रहेगी। कोमारोवस्की की योजना विचार करने लायक है। वह नफरत करने लायक भले ही हो, लेकिन वह मूर्ख नहीं है। उसे सारी बातों की जानकारी है। यह कितनी खतरनाक जगह है ! चारों ओर सीमाहीन सांय-सांय हवाओं के बीच खुला मैदान—कि यदि हम बर्फ में दब जाएं, तो सुबह उसमें से निकल भी नहीं सकते। हो सकता है कि जो हमारी दैवी-मदद कर रहा है, वह अचानक हमारी गर्दन मरोड़कर उसका गरम-गरम लहू पीने के लिए लालायित हो उठे ? हमारे पास बन्दूक भी तो नहीं है। आपके कारण मैं कुछ भी सोच नहीं पाती।'

—'आखिर तुम चाहती क्या हो, साफ कहो न ? मैं क्या करूं ?'

—'मैं स्वयं नहीं जानती कि मैं क्या करने के लिए आपसे कहूं ? अजी, आप मुझे सदा अपने अंगूठे के नीचे दबाकर रखिये और याद दिलाते रहिये कि मैं आपकी खरीदी हुई क्रीत दासी हूं। मुझे सर मत उठाने दो। सोचने का काम मेरा नहीं है।'

'आपकी टोन्या और मेरा पाशा हमसे हजार गुना अच्छे हैं।'

आंसुओं के भीगे चेहरे सहित वह उसके गले से लिपट गई। बोली—'हमारी स्थिति कितनी भिन्न है। मुक्त गगन में विहार करने के लिए प्रभु ने

आपको शक्तिशाली पंख दिये हैं। जब कि मैं स्त्री हूं—मेरे पंख जमीन पर बैठकर अपने बच्चों को सुरक्षित रूप से सेने के लिए हैं।'

लारा का यह कथन यूरा को बहुत अच्छा लगा। लेकिन अपनी भावुकता कहीं जाहिर न हो जाए, इसलिए वह खामोश रहा।

—'यह सच है कि हमारे इस यायावर जीवन में विकृति है, झूठ है। लेकिन हमने इसे कभी चाहा नहीं। आगे बढ़कर हमने इसकी मांग कभी की नहीं। इसका आविष्कार हमने नहीं किया। लेकिन यही तो सभी जगह हो रहा है। यह इस युग की देन है। दिन भर मैं इसी बारे में सोचता रहा। बेकार बैठे रहना मुझे पसन्द नहीं और यहां थोड़े दिन और रुकने के लिए कुछ न कुछ काम करना ही चाहिये।पहले हमने अपने परिवार के साथ यहां सफलतापूर्वक खेती का काम किया था। लेकिन मुझमें इस समय वही काम शुरू करने की शक्ति और हिम्मत नही है। मैं कुछ और ही करना चाहता हूं।'

—'मैं यही सोच रही थी। लेकिन मुझे भी भविष्य की स्थिरता में विश्वास नहीं है। मुझे लगता है कि जैसे हमें यहां से कहीं दूसरी जगह चल देना होगा। लेकिन जब तक हमें अवकाश मिला हुआ है, मैं चाहती हूं कि आपने जो कविताएं मुझे सुनाई थीं, वे निकालकर रख दें।'

शाम को वे गर्म पानी से खूब नहाये। टेबल के पास यूरा खिड़की के सामने बैठा हुआ था। उसकी पीठ कमरे की ओर थी। वहां लारा अपने केशों को तौलिये से पगड़ी की तरह बांधे, साबुन की गंध के साथ कात्या को सुलाने के लिए थपथपा रही थी। अपने काम की तन्मयता में उसे अपने चारों ओर का वातावरण प्रसन्नतापूर्ण और आरामदायक लगा। सोने का बहाना करते-करते लारा सचमुच सो गई। कात्या के स्वच्छ धुले हुए कपड़े चमक रहे थे। चारों ओर फैली हुई निस्तब्धता में उसे जीवन की स्पष्ट धड़कन सुनाई दे रही थी। लैम्प की रोशनी सफेद कागज के पन्नों और दवात पर सोने का मुलम्मा चढ़ा रही थी।

शिशिर का तुषार देखने के लिए वह अंधेरे कमरे से दूसरे कमरे में घुसा और खिड़की से बाहर देखने लगा। रात्रि की सुन्दरता अनिर्वचनीय थी। वह

वापस लौट आया। लिखने बैठा। जो कुछ उसने देखा था, उसी के प्रवाह में वह कविता लिखना चाहता था।उसके मस्तिष्क में निश्चित आकार बनाई हुई, अर्ध-विकसित कविताओं की पंक्तियां धाराप्रवाहिक रूप से लिखी जाने लगीं।

क्रिसमिस नाइट और विन्टर स्टार को लिखने के बाद, उन पुरानी कविताओं को पूरी करने बैठा जिन्हें वह अधूरी छोड़ चुका था। उन्हें पूरी कर नहीं पाया और दूसरी मौलिक कविताओं की रचना में खो गया। दो-तीन पंक्तियों को लिख लेने के बाद वह अपने भावों पर स्वयं आश्चर्यचकित-सा हो गया। इस स्वयंस्फूर्त प्रेरणा के कारण भाषा स्वयंप्रवाहित होने लगी और मनुष्य के लिए बोलने वाली इस भाषा में संगीत की झंकार अपने आप आकर मिश्रित हो गयी।

स्वाभाविक नियमों के अनुसार भाषा का प्रवाह लय और ध्वनि के साथ गतिमान हो उठा और उनमें से अनगिनत विधान और विधियों की सृष्टि हुई। उसे लगा कि यह सब उसने स्वयं ने नहीं, बल्कि किसी अज्ञात शक्ति ने उससे करवाया है। जैसे वह स्वयं मिथ्या हो, सिर्फ गतिमान संकेत निर्देशित पुतला मात्र। इस विचार से वह आत्मप्रवंचना, असंतोष और हीनता के भावों से भर-सा गया। सामने सफेद तकियों पर दो सिर रखे हुए थे। चांद और सितारों के नीचे बर्फ भरी रात में, साफ-स्वच्छ कमरों में धुले हुए उजले इन दो प्राणियों की प्रतिमा को देखकर उसके हृदय में एक ही आशय की विजय प्राप्ति की लहर उठी और उसके चारों ओर व्याप्त हो गयी।

तीन बज गये। सुदूरपूर्व की आत्मविस्मृति की एकाग्रता से वह वापस वास्तविकता में लौट आया। वह संतुष्ट था, प्रसन्न था, शक्तिसम्पन्न, चारों ओर फैली हुई खुले प्रवेश की निस्तब्धता अब भंग हो गयी। वह अंधेरे कमरे में चला गया। सामने के दरवाजे पर जो गलीचा बर्फ के बचाव के लिए रखा गया था, उसे उसने हटा दिया, कोट पहना और बाहर चला गया।

श्वेत बर्फ चमक रही थी। सामने, सिवाय इस रजत प्रकाश के कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैदान के उस पार, नाले के ऊपर उसने पेंसिल

से खींची हुई लकीरों की तरह चार छायाओं को देखा।वे भेड़िये थे। चन्द्रमा की ओर, अथवा उसके घर की ओर मुंह उठाये वे चिल्ला रहे थे। थोड़ी देर बाद, मानो वे यूरा के विचार समझ गये हों, कुत्तों की तरह धीरे-धीरे चले गये।

वापस आकर उसके दरवाजे बंद कर दिये। कम्बल और गलीचों को दरारों में मूंद दिया, ताकि बर्फ और ठंड अंदर न आ सके। अपनी टेबल पर लौट आया। लैम्प की रोशनी उसी तरह चमकती हुई उसका स्वागत कर रही थी, लिखने की अब उसकी प्रवृति नहीं हो रही थी। वह थक गया था। लारा की आंख खुल गयी। बोली—अभी तक काम कर रहे हो, प्रिय ? उसकी आवाज नींद से बुझी हुई थी—मोमबत्ती की तरह जलती और चमकती हुई रात। मेरे पास आइये और यहां बैठिये। मैं अपने स्वप्नों की बात बताऊं। उसने बत्ती बुझा दी। कात्या को खिलाते हुए और लारा के घर के काम-काज में मदद करने में यूरा सारे दिन व्यस्त रहा। काम करते-करते जब दोनों के हाथ मिल जाते तो वे तमाम बातें भूल जाते और एक-दूसरे के पास विमुग्ध भाव से बैठे रहते। इसके बाद उन्हें जब कात्या की याद आती कि वह अकेली होगी, अथवा घोड़े को दाना-पानी देना होगा, वे फिर काम में लग जाते।

यूरा अच्छी तरह से सो नहीं पाया था। उसके सिर में मीठा-मीठा दर्द हो रहा था; और नशे की तरह हरारत महसूस हो रही थी। वह अधीरतापूर्वक रात का इंतजार करता रहा कि अधूरे छोड़े हुए अपने लेखन कार्य को पूरा कर डाले। तन्द्रा ने उसके विचारों पर आवरण-सा डाल दिया और अस्पष्टता में सब कुछ डूब गया। उसका कृतित्व यही अन्तिम स्वरूप प्राप्त करने वाला था। थकान और आलस्य की अवस्था में सभी कुछ परिवर्तित हो उठा और भिन्न स्वरूप में प्रस्तुत हो गया। उसे लगा कि बेरिकिनो में कुछ दिन और ठहरने की उसकी इच्छा पूरी नहीं होगी। लगा कि लारा से अलग होने का समय निकट आ गया है। उसके साथ ही जीवन और उसकी समस्त आशाएं तिरोहित हो जायेंगी। उसका हृदय व्यथित था, फिर भी वह बेकरारी से रात का इंतजार कर रहा था कि वह

अपनी वेदना को इस तरह प्रकट करे कि उसे सुनकर दूसरे लोग रो पड़ें। बर्फीले मैदान में उसने जिन सियारों को देखा था, वे अब सियार नहीं, बल्कि कृतित्व के विषय वस्तु बन गये थे। लगता कि वे शत्रुओं की तरह उसे और लारा को तहस-नहस का डालना चाहते हैं। उन्हें वेरिकिनो से भगा देना चाहते हैं। सन्ध्या तक उसकी यह कल्पना प्रागैतिहासिक जानवर अथवा अजगर के रूप में परिवर्तित हो गई, जो कि शुत्मा के रास्ते से चले आ रहे थे और उनके खून के प्यासे हो रहे थे। संध्या के समय जब लारा और कात्या सो गयीं, उसने टेबललैम्प जलाया। वह पिछली कविताओं को संशोधित रूप से दुबारा, साफ अक्षरों में लिखने बैठ गया। नवीन कविताएं घसीट के अक्षरों में, संक्षेप में लिखी गयी थीं। इन गूढ़ांक्षरों को स्पष्ट करने के लिए हमेशा की तरह उसे निराशा की ही शरण लेनी पड़ती। पिछली रात को कच्चे रूप से लिखे हुए अवतरणों ने उसे आश्चर्यान्वित कर दिया था। आशातीत कुछ सफल पंक्तियों से विह्वल होकर वह रो पड़ा था। फिर उन्हीं पंक्तियों को दुबारा पढ़कर वह उदास हो गया कि ये पंक्तियां अज्ञेय हैं।

लारा कब बिस्तर से उठकर, उसकी टेबल के पास आई, उसे पता ही नहीं चल सका। अपनी पोशाक में वह दुबली, पतली और काफी लम्बी दिखाई दे रही थी। डर के मारे पीली पड़ी लारा को इस तरह देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया।

लारा कह रही थी—'सुन रहे हैं आप ? कुत्ते रो रहे हैं। कितना भयंकर है। यह बहुत बुरे शकुन हैं। सुबह तक किसी तरह बर्दाश्त करने के बाद हम यहां से चले जायेंगे। एक मिनट भी हम यहां नहीं ठहरेंगे।'

एक घंटे बाद; बहुत समझाने-बुझाने पर वह सो गयी। यूरा बाहर आया। पता नहीं, किस दिशा से सियार आये और किस दिशा में वे गायब हो गये। उनके झुण्ड को वह देख सकता था, लेकिन गिन वह नहीं सका कि कुल मिलाकर कितने सियार होंगे। यह निश्चय था कि उनकी संख्या काफी है।

इस तरह वेरिकिनों में रहते हुए उन्हें तेरह दिन हो गये थे। कोई खास नई बात नहीं हुई। सियार रात को फिर चिल्लाते। पिछले सप्ताह से उनक

आवाज सुनाई नहीं दे रही थी, लेकिन अब वे फिर वापिस लौट आये थे। उन्हें कुत्तों का विलाप समझकर बुरे शकुन से भयभीत, लौट जाने का निश्चय करती। काम में इतनी अधिक व्यस्त रहने के कारण वह इसी बात की रट लगाये नहीं रह सकी। फिर भी बीच-बीच में वह बेचैन हो उठती है। बार-बार इन अशुभ आवाजों को सुनते-सुनते आखिर दूसरे सप्ताह में लारा ने अपने लौटने की तैयारियां करनी शुरू कर दीं। लगता, इतने दिनों तक उनका यहां रहना, कभी हुआ ही नहीं था।

शायद वह स्वयं कोई निश्चय नहीं कर पाई। अभी-अभी वह एक सीधी-सादी ईमानदारी और प्यार-भरी जिन्दगी गुजारने के लिए यहां हमेशा-हमेशा के लिए बस जाने को, करते रहने के लिये, कुछ भी बलिदान करने के लिए तैयार थी। सामान्य रूप से घर का काम-काज करने के बाद वह सामान बांधने लगी। यूरा से घोड़ा तैयार करने को कहा। उसने रवाना होने का निश्चय कर लिया था। यूरा ने न विरोध किया न बहस की। शहर की ओर लौटना निरा पागलपन था, जहां कि गिरफ्तारियों का तांता लगा हुआ था। साथ ही वह यह भी जानता था कि बिना किसी प्रकार के हथियार के इस वीरान जगह में इस तरह समय गुजारना भी कम पागलपन नहीं है।

खाने की सामग्री और घोड़े का चारा भी समाप्त प्राय: था।यदि वहां रहने का निश्चय होता तो वह प्रयत्न करके कहीं न कहीं से खाने और चारे का इंतजाम करता भी। लेकिन अनिश्चित से थोड़े दिनों के लिए प्रयत्न करना बेकार था।

वह घोड़ा तैयार करने चल दिया। घोड़े को दाना-पानी देने और उसे तैयार करने का उसे अभ्यास नहीं था। यद्यपि सामदेवयातोय ने उसे इस बारे में कई बार नसीहत दी थी, लेकिन वह बार-बार भूल जाया करता। किसी तरह उसने घोड़ा तैयार किया; और लारा को बुलाने अंदर चल दिया। लारा कात्या के साथ कोट पहने तैयार थी। सामान बांधा जा चुका। उसकी रुलाई रोके नहीं रुक रही थी।

उसने प्रार्थना की—थोड़ी देर बैठ जाओ।

इसके बाद वह स्वयं कुर्सी पर धप् से बैठ गई। उठकर उसने अस्तव्यस्त लड़खड़ाते शब्दों में, तीव्र वेदनायुक्त स्वर में, अवरुद्ध कंठ से पूछा कि क्या वह उनके जाने के इरादे से सहमत नहीं है ?

—'मैं क्या करूं ? मैं नहीं जानती कि यह सब कैसे और क्यों हो रहा है ? लेकिन आप भी तो देखिये कि इस समय जाना संभव कैसे होगा? बहुत देर हो गई है।थोड़ी देर में अंधकार हो जाएगा। हम जंगल में खो जायेंगे। मैं ठीक नहीं कह रही हूं ? आप जैसा कहेंगे मैं करूंगी, लेकिन इस समय जाने का इरादा छोड़ दीजिये। आप कुछ भी कहते क्यों नहीं ? हमने आधा दिन किस तरह बर्बाद कर दिया। कल शायद हम अधिक शांति के साथ सोच सकेंगे—एक रात और रह जाने में हर्ज क्या है ? कल सुबह होते ही छः बजे, हम यहां से रवाना हो जायेंगे। सिगड़ी जलाकर एक बार और आप अपना लिखने का काम कर लें। क्या यह ठीक नहीं होगा ? हे प्रभु, क्या मुझसे फिर कोई भूल हो रही है ?'

'तुम बात को बढ़ा रही हो। अंधेरा होने में अभी काफी देर है। लेकिन जैसा तुम ठीक समझो; करो। उतावली करने से इस तरह उखड़ जाने से काम नहीं चलेगा। चलो, कोट उतार दो और सामान खोल डालो। कात्या कह रही थी कि उसे भूख लगी है। खाने के लिए कुछ तैयारी कर लो। तुम ठीक कहती हो। अचानक इस तरह चले जाने में कोई तुक नहीं है। मैं सिगड़ी जलाता हूं। इससे पहले मैं जरा बाहर जाकर देख आता हूं कि हमारे लकड़ियों के भंडार में कुछ है भी या नहीं ?

22

जहां लकड़ियों का भंडार था, वहां से जिवागो-भवन तक स्लेज के कई निशान बन गये। इस शिशिर में बर्फ काफी गिरी थी। प्रवेश-द्वार पर बर्फ के कारण छतें नीचे झुक आई थीं और यार्ड कुबड़ा-सा दिखाई देने

लगा था। ऊपर आधा चांद चमक रहा था। यूरी का मन विकृत और गमगीन था। उसे लगा कि चांद जुदाई का शकुन प्रकट कर रहा हो और नीचे निर्जनता का प्रतिबिम्ब पड़ रहा हो। उसने स्लेज़ से लकड़ियां नीचे उतार दीं।

अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए, लारा के लिए उसने ईश्वर से प्रार्थना की—'हे प्रभु, इस अभागी सरल हृदय, नम्र, प्रिय लारा को सलामत रखना।'

घोड़ी हिनहिनाई। उसे आश्चर्य हुआ, यह खुश है या डर गयी है ? लेकिन घोड़े डर के मारे हिनहिनाते नहीं। यह इतनी मूर्ख थोड़े ही होगी कि सियारों की गंध पाकर वह अपनी उपस्थिति का संकेत उन्हें दे दे। वह शायद घर जाने की बात सोच रही होगी। उसने कहा—थोड़ी देर और ठहरे, कुछ ही देर बाद हम घर की ओर लौट पड़ेंगे। इस बार घोड़ी फिर हिनहिनाई। कारण था, सामने दूर से कहीं किसी घोड़े की आवाज का आना। इसका क्या मतलब होता है ? उसने सोचा—हमारा ख्याल था कि वेरिकिनो बिल्कुल उजड़ा हुआ होगा। शायद यह हमारी गलती थी। यह बात उसके ध्यान में ही नहीं आई कि उसके यहां कोई मेहमान आ सकता है। और उनके घोड़े के हिनहिनाने की यह आवाज हो सकती है।

जल्दी क्या है ? उसने लकड़ियों का ढेर उतार कर रख दिया। घोड़ी को बांधा। स्लेज को यथास्थान रखने के बाद, घोड़ी के सामने बचा-खुचा घास डाल दिया। पोर्च के सामने एक और स्लेज खड़ी थी और उसके आसपास एक मोटा अजनबी घूम रहा था; जो कभी घोड़े को थपथपाता, कभी उसके बालों को सहलाता। अंदर से किसी की आवाज सुनाई दे रही थी। वह रुक गया।

कोमारोवस्की कात्या और लारा से बात कर रहा था। आवाज से पता चलता था कि लारा अस्थिर है और चिल्ला रही है। उसके विरोध का स्वर कभी ऊंचा उठता और कभी वह उसके साथ सहमत हो जाती। शायद वे यूरी के बारे में ही बातचीत कर रहे थे। वह कह रहा था कि यूरी का अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता है। कौन कह सकता है कि वह

अपने परिवार वालों को अधिक प्यार करता है अथवा तुम्हें ? वह शायद कह रहा था कि दो तलवारें एक म्यान में नहीं रह सकतीं। या इन दो पाटों के बीच उसकी दुर्गति होगी।

यूरी अंदर चला गया। कोमारोवस्की फर-कोट पहने हुए था और लारा कात्या को कोट पहना रही थी जिसका हुक उसे नहीं मिल रहा था और कात्या विरोध कर रही थी—धीरे मां, तुम मुझे मार डालोगी। वे बाहर जाने के कपड़ों में रवाना होने की तैयारी में खड़े थे।

यूरी के आते ही लारा और कोमारोवस्की दोनों उसकी ओर एक साथ, एक ही बात, एक ही स्वर में कहते हुए बढ़े—'आप कहां चले गये थे ? यहां आपकी सख्त जरूरत थी।'

—'कैसे हो यूरी एण्ड्रेविच ? तुमने मुझे निमन्त्रित नहीं किया और पिछली बार जो कहा-सुनी हुई थी, उसके बावजूद भी मैं यहां फिर एक बार हाजिर हुआ हूं।'

—'आप ठीक हूं ?'

लारा ने पूछा—'आप कहां चले गये थे ? सुनिये, ये क्या कह रहे हैं ? अब हमें कोई न कोई फैसला करना ही होगा। व्यर्थ समय बर्बाद नहीं किया जा सकता।'

—'लेकिन हम सब खड़े क्यों हैं? बैठ जाइये, कोमारोवस्की साहब, बैठ जाइये। हां तुम पूछ रही थीं कि मैं कहां चला गया था। तुम नहीं जानतीं कि मैं लकड़ियां लाने गया था ? इसके बाद घोड़े की देखभाल कर रहा था। बैठ जाइये, कोमारोवस्की साहब।'

—'इन्हें यहां देखकर आपको आश्चर्य नहीं हो रहा है ? हम सोच रहे थे कि ये कहीं चले न गये हों। हम सोच ही रहे थे कि क्यों न इनके प्रस्ताव पर विचार किया जाये ? अब आप ही इन्हें सब कुछ बता दीजिये जो कुछ भी आप कहना चाहते हैं, कह दीजिये।'

कोमारोवस्की ने कहा—'मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम लारा क्या सोच रही है। एक बात मैं स्पष्ट कर दूं कि मैंने जान-बूझकर यह बात फैलाई थी कि यहां से चला गया हूं। लेकिन रुका रहा, ताकि तुम दोनों को

सोचने-विचारने और फैसला करने का समय मिल सके। मुझे आशा है कि अब तुम लोग बिना सोचे-समझे निर्णय नहीं करोगे।'

अब अधिक टाला नहीं जा सकता।लारा बीच में बोली—'हमें तुरन्त रवाना हो जाना चाहिये। कल सुबह...लेकिन कोमारोवस्की को आप स्वयं यह कह सकते हैं।'

—'बात ठीक है, लेकिन एक मिनट ठहरो। हम इस तरह खड़े क्यों रहें ? बैठ जाइये। इन गम्भीर बातों को एक मिनट में तो तय किया नहीं जा सकता। शायद मेरी बात कोमोरावस्की साहब को बुरी लगे। सुनिये, मैं आपके साथ नहीं जा सकता। लारा का मामला अलग है। कभी-कभी जब हमारी परेशानियों का कारण एक-सा नहीं रहता और जब हम एक नहीं दो व्यक्तियों के रूप में एक-दूसरे के सामने प्रस्तुत होते हैं, तब मैंने सदा लारा से कहा है कि वह आपकी योजना पर विचार करे। वास्तव में वह अब तक आपकी योजना के बारे में ही सोच रही थी।'

लारा बीच में बोली—'लेकिन एक शर्त पर, कि आप हमारे साथ चलेंगे।'

—'जुदा होना जितना कठिन मेरे लिए है, मुझे मालूम है, उतना ही कठिन तुम्हारे लिए भी होगा। लेकिन शायद हमें अपनी भावनाओं को दूर रख त्याग करना ही होगा। कारण, मैं यहां से नहीं जाऊंगा।'

—'आपने सुना नहीं, कोमारोवस्की क्या कह रहे हैं ? कल सुबह...।'

'लारा उस बारे में सोच रही है, जो मैंने अभी-अभी उसे कहा है। सुदूर-पूर्व सरकार की ट्रेन स्टेशन पर तैयार खड़ी है। वह कल पूर्व के लिए रवाना हो रही है। आधे डिब्बे इनमें संचार-मंत्रालय के लिए हैं। इसी गाड़ी में जा रहा हूं। कई सीटें मेरे और सहायकों के लिए सुरक्षित हैं। आराम से सफर किया जा सकता है। फिर ऐसा मौका मिलेगा नहीं। मुझे मालूम है कि तुम्हारा स्वभाव उग्र है। एक बार निश्चय कर लेने पर तुम उस पर पुनर्विचार नहीं कर सकते। लेकिन लारा के बारे में तो सोचो। वह कह रही है कि बिना तुम्हारे वह ज़ायेगी ही नहीं। चलो हमारे साथ ब्लादिवोस्टक तक नहीं तो युर्यातिन तक ही चलो। हमें जल्दी करना चाहिये। एक क्षण भी

बर्बाद नहीं किया जा सकता। मैं स्वयं गाड़ी नहीं चलाता। मेरा कोचवान है। पांचों के लिए तो मेरी गाड़ी में जगह नहीं होगी। लेकिन तुम्हारे पास सामदेवयातोव का घोड़ा है ही। क्या वह अब भी तैयार है ?'

—'नहीं, मैंने उसे खोल दिया है।'

—'कोई बात नहीं। जितनी जल्दी हो सके, जीन कस दो। मेरा कोचवान तुम्हारी मदद करेगा। परेशानी की बात ही क्या है, तुम्हारे स्लेज की कोई जरूरत नहीं। लेकिन भगवान के लिए जल्दी करो जो कुछ तुरन्त हाथ लग सके, वही यात्रा के लिए आवश्यक सामान बांध लो। भूलो मत कि यह एक बच्ची की जिन्दगी का सवाल है।'

—'मेरी समझ में नहीं आ रहा कि आप क्या कह रहे हैं ? आप तो इस तरह बातें कर रहे हैं, जैसे मैंने आपके साथ चलने का निश्चय कर लिया है। यदि लारा जाना चाहे, तो वह भी आपके साथ जा सकती है। घर की चिन्ता करने की जरूरत नहीं। तुम लोगों के जाने के बाद इसे साफ करके ताला लाग दूंगा।'

—'आप क्या कह रहे हैं ? 'यदि लारा चाहे तो'—क्या आप को विश्वास नहीं होता कि मैं आपके बिना कहीं नहीं जा सकती ? अपने आप मैं कोई निर्णय नहीं ले सकती। इसलिए घर साफ करने की ताला लगाने की इन बातों का क्या मतलब है ?'

—'सो, तुम अपने निश्चय पर दृढ़ हो ? अच्छी बात है...कोमारोवस्की ने कहा—यदि लारा इजाजत दे तो मैं तुमसे अकेले में कुछ कहना चाहता हूं।'

—'यदि कोई इतनी आवश्यक बात हो तो मैं हाजिर हूं। चलिये, रसोईघर में चलें। इजाजत है लारा ?'

और फिर मिला : यह दुखद समाचार। स्ट्रेलिनिकोव को गिरफ्तार करके मृत्यु-दण्ड दिया गया था और उसे गोली मार दी गयी।

—'ओह, कितनी भयंकर बात है ! सच ?'

—'यही मुझे बताया गया है और मुझे विश्वास हो गया है कि यह सच है।'

—'लारा को मत कहियेगा। वह पागल हो जायेगी।'

—'मैं नहीं कहूंगा। इसीलिए तुमसे अकेले बात करना चाहता था। जो कुछ हो चुका है, लारा और कात्या की जिन्दगी खतरे में है। उन्हें बचाने के लिए तुम्हें मरी मदद करनी होगी। हमारे साथ न चलने का तुम्हारा निश्चय पक्का है ?'

—'बिल्कुल।'

—'लेकिन वह बिना तुम्हारे जायेगी नहीं। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या किया जाये ? अच्छा एक दूसरे तरीके से तुम मेरी मदद कर सकते हो। तुम्हें इस तरह का भाव बताना होगा कि हमारे साथ नहीं तो हमारे पीछे तुम आ रहे हो। थोड़ा झूठ जरूर बोलना पड़ेगा। लेकिन आपने इस प्रस्ताव में तुम्हारा ख्याल भी मुझे है। मैं शपथ-पूर्वक कहता हूं कि ज्यों ही मुझे मौका मिला मैं तुम्हें पूर्व की ओर भेज दूंगा। लेकिन तुम्हें लारा को यह विश्वास दिलाना होगा कि तुम हमारे पीछे आ रहे हो।तुम कह सकते हो कि स्लेज तैयार करके मैं पीछे आता हूं और बिना समय बर्बाद किये हम लोग रवाना हो जाएं।'

—'स्ट्रेलिनिकोव के बारे में समाचार सुनकर मैं इतना दिग्ङ्मूढ़ हो गया हूं कि मेरी समझ में आपकी कोई बात नहीं आ रही है।'

—'मुझे मालूम है। चिन्ता की कोई बात नहीं। मेरे पास एक बंदूक और रिवाल्वर है। ठण्ड दूर करने के लिए थोड़ी शराब भी पी आया हूं। मेरे पास काफी है। तुम पीओगे ?'

मगर विछोह। यूरा पगला-सा हो गया। ओह, यह मैंने क्या कर डाला ? मैंने उसका परित्याग कर दिया। लारा, ओ लारा। मेरी आवाज अब उन तक नहीं पहुंच सकती। सभी कुछ ठीक-ठीक और सुव्यवस्थित रूप से निपट जाने से वह खुश हो रही होगी। वह सोच रही होगी कि मेरे साथ वह किसी ऐसी सुव्यवस्थित जगह जा रही है। वह आशा कर रही होगी, कि मैं उनके पीछे-पीछे आ रहा हूं। जंगल पार करने से पहले मैं उनके साथ हो लूंगा। विदा भी न दे सका। जैसे कंठ में कुछ फंस गया हो। बोला नहीं जा रहा था। मैंने पीठ मोड़ ली थी।

वह पोर्च में खड़ा था। उसका सारा ध्यान सामने के बिन्दु पर केन्द्रित था। बर्च-वृक्षों में घिरी हुई सड़क पहाड़ के ऊपर चढ़ जाती है। वहां जाती हुई स्लेज दिखाई दे रही थी। अस्तगामी सूर्य की वक्र किरणें अभी भी खुले मैदान में फैली हुई थीं। अलविदा, प्रिय अलविदा। हमेशा के लिए चले जाने वाले मेरे प्रेम अलविदा। एक के बाद एक बर्च-वृक्षों को पार करती हुई स्लेज धीमी पड़ गयी, शायद रुक गयी। उसने मन-ही-मन में सोचा—वे वापस लौट रहे हैं। वे लौट रहे हैं। उत्तेजना के मारे उससे खड़ा नहीं रहा जाता था; कि वह बेहोश होकर गिर पड़ेगा। वे क्यों खड़े हो गये ? हे प्रभु, क्या तुम मुझे अपने मीत लौटा दोगे ? लेकिन वे चल पड़े विदा लारा, अलविदा। अब हमारी मुलाकात होगी किसी दूसरे संसार में। आह, अब तुम्हें इस जीवन में फिर कभी नहीं देख सकूंगा। अंधेरा हो रहा था। उसने चारों ओर देखा प्रकृति का प्रत्येक दृश्य जैसे परम मित्रों की भांति सहानुभूतिपूर्ण नेत्रों से उसे निहार रहा था।

उसने मन-ही-मन कहा—धन्यवाद, मित्रो धन्यवाद ! मैं थोड़ी देर में ठीक हो जाऊंगा। वह कमरे में लौट आया। जैसे उसने संसार की ओर से पीठ मोड़ ली हो। मन-ही-मन उसने कहा—मेरा सौभाग्य सूर्य अस्त हो गया है।

चाह कर भी वह इन शब्दों को जोर से नहीं कह पा रहा था। दो बातें उसके दिमाग में एक साथ चक्कर काट रही थीं—पहले मास्को जाऊंगा। पहला सवाल है अपने आपको बचाना। अनिद्रा की बीमारी के चपेट में आने से बचाना होगा। सारी रात काम करता रहूंगा जब तक नींद बुरी तरह से न आने लगे स्टोव जला देना चाहिये। रात को बहुत ठंड पड़ेगी। मन का दूसरा स्वर कहता—मैं तुम्हारी स्मृति के साथ बैठा रहूंगा। जब तक कि मेरी बाहें, मेरे हाथ मेरे होंठ तुम्हें याद करते हैं, तब तक तुम्हारे लिए रोता रहूंगा। मेरा यह विलाप अक्षय बना रहे और तुम्हारे प्रेम के अनुकूल प्रमाणित हो।

कुछ दिनों बाद मैं भी यहां से चला जाऊंगा। कागज पर समुद्र की तरह अपने दुख को उंड़ेल दूंगा कि तूफान उसके अन्तराल को मथ दे और

विशालाकार बड़ी-बड़ी लहरें किनारों पर अपने चिन्ह अवशेष छोड़ दें। दरवाजा बंद कर वह शयन-कक्ष की ओर गया। रवाना होने की तैयारी में वहां सब कुछ अस्त-व्यस्त बिखरा पड़ा था। वह बिस्तर के सामने घुटनों के बल बैठ गया। बच्चों की तरह पलंग पर सिर रखकर छाती फाड़ कर वह रोने लगा।

23

यूरा ने निश्चय किया कि अब संभल जाना चाहिये। समझदारी से काम लेना चाहिये। यदि आत्मरक्षा करनी ही है, तो उसके लिए आसान तरीका काम में लाया जा सकता है। सोचा कि सामदेवयातोव के आते ही वह उसके साथ चला जायेगा। सामने के मैदान की बर्फ पर किसी के हल्के पदचाप सुनाई दिये।

सामदेवयातोव तो नहीं हो सकता। उसके पास अपना घोड़ा है। शायद मुझे बुलाने कोई आया हो। हो सकता है शहर लौट चलने की आज्ञा हो। या मुझे गिरफ्तार करने के लिए आदमी आये हों। लेकिन ऐसा होता तो एक आदमी नहीं आता और मुझे ले जाने के लिए उनके पास वाहन अवश्य होता।

शायद मिकुत्सिन हो। वह व्यक्ति बिना हिचकिचाहट के पूरे आत्मविश्वास के साथ आकर दरवाजे पर रुक गया। उसने सरल भाव से पूछा—आप किससे मिलना चाहते हैं ?

जवाब न मिलने पर वह आश्चर्यचकित-सा आगंन्तुक व्यक्ति को देखता रहा। प्रस्तुत व्यक्ति हट्टाकट्टा सौम्य स्कंध पुरुष था। कंधे पर बंदूक लटक रही थी। उसके इस स्वरूप को देख कर वह आश्चर्यचकित रह गया था। वह समझ गया कि उन्हें जो दैवी मदद मिल जाया करती थी, वह इसी आदमी के कारण। उसे लगा कि इस आदमी को उसने पहले कहीं

देखा है।

आगन्तुक को शायद मालूम था कि मकान में कोई रहता है। सम्भवत: वह यूरा को पहचानता भी था। पता नहीं किस वर्ष की दग्ध मई के प्रात: काल में, ट्रेन का एक डिब्बा एक अधिकारी...! दृढ़, निश्चयी, एकनिष्ठ—हा स्ट्रेलनिको ! पाशा !

वही था—इन व्याकुल बना देने वाले भयपूर्ण दिनों में जिस प्रकार रूस का प्रत्येक व्यक्ति निराश स्वर में क्रुद्ध होकर जोर से बोलने लगता, ठीक उसी तरह वे दोनों आपस में घंटों बातचीत करते रहे। स्ट्रेलिनिकोव बातचीत खत्म करना नहीं चाहता था। वार्तालाप को जारी रखने का वह हर संभव प्रयत्न कर रहा था। जैसे उसे अकेले रहने में डर लग रहा हो। पता नहीं वह अपने आप से डर रहा था अथवा निराशा से भरी स्मृतियां उसे डरा रहीं थीं; अथवा हो सकता है वह आत्मप्रताड़ना से दुखी हो, जो कि आदमी को इतना हीन और अरुचिपूर्ण बना देती है कि असह्य लज्जा के मारे वह मर जाना चाहता हो। या सम्भवत: उसने कोई ऐसा निश्चय किया हो, जिसके विचार के साथ, वह अकेले में रहना नहीं चाहता हो। उस निश्चय को क्रियान्वित करने में, इस बातचीत द्वारा, जो देर हो, उससे कुछ छद्म तसल्ली उसे मिल रही हो।

वह इस बात को छिपा गया। लेकिन वैसे वह खुले दिल से प्रत्येक विषय पर बोल रहा था—इस युग की क्रांति की बीमारी संक्रामक रूप में फैल गयी थी। हृदय में कुछ और होते हुए भी लोग इस आडम्बर में बहे जा रहे थे। किसी के दिमाग में कोई बात स्पष्ट नहीं थी। कारण ऐसे थे कि प्रत्येक व्यक्ति आत्म-वंचना से प्रताड़ित था कि प्रत्येक को लगता कि वह ऐसे अपराध कर रहा है, जिसकी किसी को जानकारी नहीं है। किसी भय के कारण नहीं, अपने आप लोग स्वयं को प्रताड़ित करने लगे थे। इस विनाशक प्रवृत्ति के कारण आध्यात्मिकता जैसे कोई चीज शेष नहीं रही।

पदाधिकारी सैनिक के रूप में पाशा ने अनेक सैनिक अदालतों में निर्णय करने के पद पर काम किया है। कई शपथ-साक्षियां सुनी हैं। कई घोषित अपराधियों को सजा दी है। आज वही छिपने के अपराध का

अपराधी है। वह सारे जीवन का लेखा-जोखा करके हिसाब ठीक करना चाहता था। वह कह रहा था...टेबल की दराजों में सामान देखकर शायद तुम चकित रह गये थे ? वह सब मिलेट्री को दिये गये माल में मेरे विस्वस्त और भरोसे के आदमियों द्वारा यहां लाया गया था। यों कहा जाय तो मेरा सारा जीवन ऐश्वर्यशाली रहा है। 'ऐसी बात नहीं है ?' ...हां, यह मेरी पत्नी का तकिया कलाम था। जब तुम से मिला तभी मैं यह तुम्हें कहने वाला था सचमुच मैं अपनी पत्नी और कन्या से मिलने के लिए ही यहां आया था। मुझे मालूम था तुम उनके साथ हो। तुम्हारा नाम भी मैं जानता था किसी विशेष कारणों से, हजारों लोगों के सम्पर्क में आने पर भी, मैंने तुम्हारा नाम छांटकर तुम्हें पहचान लिया था। डा० जिवागो ! तहकीकात के सिलसिले में तुम्हारी पेशी मेरे यहां हुई थी ?

...अब तुम्हें अफसोस हो रहा होगा कि तुमने मुझे गोली नहीं मार दी। पाशा ने इस प्रश्न का जवाब नहीं दिया। शायद उसने सुना ही नहीं अपने विचारों में मग्न वह कहता गया...वास्तव में मुझे ईर्ष्या हुई है, लेकिन उस मामले में नहीं 'ऐसी बात नहीं है ?' सुदूर पूर्व के मेरे गुप्तवास के बाद मैं यहां कुछ ही दिन पहले आया था। कोर्ट-मार्शल के अन्तर्गत मुझ पर धोखा देने का अपराध लगाया गया था। नतीजा स्पष्ट है। मैं अपराधी नहीं था। सोचा, भविष्य में शायद कभी अपनी अच्छाई प्रमाणित कर सकूं। इसलिए मैंने फरार होने का निश्चय कर लिया। अब भी मैं गुप्त रह सकता था। मुझे गिरफ्तार कर सकें, इससे पहले संन्यासी के रूप में इधर-उधर घूमता हुआ जीवन बिता सकता था। यह मुश्किल नहीं होता यदि वह धूर्त लड़का मुझे न मिल गया होता। जिस पर मैंने विश्वास किया और जिसने मुझे धोखा दिया।

इस विवरण से यूरा को लगा कि वह लड़के को जानता है। पूछा—उस लड़के का नाम टेरेन्टी गलुजिन था ? ...हां। तो उसने जो कुछ कहा, सच ही कहा। एक शब्द भी झूठ नहीं।...उसके पिता को शत्रु मानकर गोली मार दी गई थी। उसकी मां कैदखाने में थी और संभावना थी कि उसे भी गोली मार दी जायेगी। वह अपनी मां को बहुत चाहता था, उसके लिए कुछ भी

करने को तैयार था। स्थानीय चेका में जाकर उसने आत्मसमर्पण कर दिया और उनके लिए काम करने को राजी हो गया। उसे मौका मिल गया, इस शर्त के साथ, कि वह मुखबिर हो जाय। उसने बता दिया कि मैं कहां छिपा हुआ हूं। भाग्यवश मैं वहां से निकल चुका था।

कई अच्छे बुरे अभियान और प्रयत्नों के साथ मैंने साइबेरिया पार किया और देश के उस भाग में पहुंचा, जहां मैं काफी अच्छी तरह प्रसिद्ध हूं। मुझे मालूम था कि वे यहां मुझे तलाश नहीं करेंगे। उनके ख्याल में मेरी यहां आने की हिम्मत हो ही नहीं सकती। वे चेका के आसपास मुझे ढूंढ रहे थे; उस समय मैं इस घर में अथवा यहीं-कहीं आस-पास छिपा हुआ था। मैं जानता था कि मैं यहां सुरक्षित हूं। लेकिन अब सब कुछ समाप्त हो गया है। वे करीब आ गये है। रात हो रही है। मैं कई सालों से सो नहीं पाया। मोमबत्तियां हैं न ? थोड़ी देर हम बातचीत करते रहें तब तक जब तक कि तुम बर्दाश्त कर सको। मैं चाहता हूं कि मोमबत्ती के प्रकाश में सारी रात हम बातचीत करते रहें।'

'...मोमबत्तियां अभी भी हैं।'

'...रोटी है ?'

'...नहीं।'

'...फिर तुम क्या खाते हो ? लेकिन यह भी कैसा बेहूदा प्रश्न है आलूओं की यहां कमी नहीं है।'

...ठीक कह रहे हो। आलू काफी तादाद में हैं। यहां रहने वाले भले आदमी थे। वे आलू जमा करना जानते थे। आलुओं को इस तरह रखा गया है कि न तो वे जमे हैं न सड़े ही हैं।'

इसके बाद पाशा क्रांति के विषय में बातचीत करने लगा।

फिर वह उठ खड़े हुए। खिड़कियों के सामने का दृश्य दिखाई दे रहा था। स्ट्रलिनिकोव यूरा के पास आया, उसका हाथ पकड़कर उसने अपनी छाती पर रखा, दबाया।

फिर तेजी के साथ टहलता रहा। बोला...माफ करना डॉक्टर। मैं तुमसे बहुत कुछ पूछना चाहता हूं। मेहरबानी करके तुम चले मत जाना। मैं स्वयं

जल्दी ही चला जाऊंगा। जरा सोचो यह सालों का वियोग अमानवीय आत्म नियंत्रण ! मैं सोच रहा था कि अब पूरी आजादी मिल जायेगी, मैं उनके पास चला जाऊंगा। लेकिन मेरा सारा अन्दाजा गलत सिद्ध हुआ। कल मैं गिरफ्तार कर लिया जाऊंगा। तुम उसके बहुत करीब हो। प्रिय हो। एक दिन तुम शायद उससे मिलो...लेकिन मैं क्या कह रहा हूं। ...मेरा दिमाग ठिकाने नहीं है...वे मुझे अपने बचाव में कुछ भी नहीं कहने देंगे। मैं जानता हूं, कार्यवाही कैसे की जाती है।'

बहुत दिनों के बाद यूरा इतनी गहरी नींद में सो सका। पाशा रात भर वहीं दूसरे कमरे में रहा। रात में एकाध बार उठकर उसने सिर तक कम्बल खींचकर ओढ़ लिया और फिर प्रगाढ़ निद्रा में तल्लीन हो गया। बचपन के कई स्वप्न उसे वास्तविक रूप में और करीब से दिखाई दिये। बहुत देर से उठ सका। सिर दर्द कर रहा था। उसे याद आया पाशा यहीं है। अब तक शायद उठ गया होगा। यदि नहीं, तो उठाकर काफी बनाकर साथ ही पीयेंगे।

...पाशा ! कोई जवाब नहीं मिला। सोचा, गहरी नींद में सोया होगा। उसने तसल्ली के साथ कपड़े पहने और पाशा के कमरे में चला गया। वहां कोई नहीं था। मेज पर हैट पड़ा था। सोचा, घूमने गया होगा। मुझे आज वेरिकिनों छोड़कर चल देना चाहिये। लेकिन देर बहुत हो चुकी है। बहुत सोया, हमेशा ऐसा ही कुछ कारण हो जाता है।

रसोईघर की बत्ती ज़लाकर बाल्टी उठाकर वह कुएं की ओर चला। रास्ते के उस पार पाशा का सिर बर्फ के जमे हुए भाग पर पड़ा था। उसने गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। बायीं कनपटी से वेग से निकलने वाली खून की धारा बर्फ में फैल गई थी और वहां लाल पिण्ड बन गया था...ठीक बर्फ की रोवनवरीज की तरह !

24

जिवागो के प्रतिकूल विकास के आठ या दस वर्षों की कहानी शेष रह गई। धीरे-धीरे डाक्टर अथवा लेखक की हैसियत से उसकी प्रतिभा गिरती चली गई। अपने प्रति चरम विरक्ति के परिणाम स्वरूप वह अपने हृदय रोग के प्रति भी उदासीन बना रहा।

सोवियत रूस के सबसे अधिक अनिश्चित और ऊहापोह के एन० ई० पी० के आरंभ में वह मास्को आया था। सपक्षियों के दल से युर्यातिन लौटते समय उसने जो दुर्दशा देखी थी, उससे भी अधिक इस समय यहां की हालत खराब थी। जिन कपड़ों की थोड़ी-बहुत भी कीमत थी, उन्हें वह रोटी अथवा लज्जा ढंकने के लिए कुछ फटे पुराने कपड़ों के विनियम में दे चुका था। इस वेश-भूषा के कारण चारों ओर फैले हुए क्रांतिकारी सैनिकों की नजरों से वह बचा हुआ था। फटी-पुरानी सैनिक वर्दी पहने एक सुन्दर कृषक लड़का भी उसके पीछे-पीछे चला जा रहा था। अपने पुराने परिचित घरों में, जहां किसी समय उसका स्वागत किया जाता था, वे दोनों साथ-साथ गए। घुमा-फिराकर बातचीत करके उन्होंने मालूम कर लिया कि उनके परिवार के लोग किन परिस्थितियों में यहां से चले गये थे। दोनों ही शर्म के मारे मरे जा रहे थे, इसलिए भीड़ से कतरा रहे थे कि कहीं उन्हें किसी से बातचीत करनी पड़ जाए। किसी परिचित अथवा पुराने मित्र के सामने पड़ जाने पर वे किसी गली के कोने में जाकर खड़े हो जाते ताकि बिना किसी बाधा के वे अपना समय गुजार सकें। चिथड़े पहने डाक्टर जिवागो उस किसान की तरह लगता जो कि सत्यशोध के लिए घर से निकल पड़ा हो। उसका साथी अनुरक्त आज्ञाकारी शिष्य की भांति उसके पीछे-पीछे चल रहा था। यात्रा का अधिकांश भाग यूरी ने पैदल और बाद में रेल द्वारा तय किया। सपक्षियों के दल से आने पर साइबेरिया और यूराल्स के उजड़े हुए गांवों से वह गुजरा था, उनसे भी इस रास्ते के गांवों की हालत बदतर थी। तब शिशिर ऋतु थी, अब ग्रीष्म का अंत और पतझड़ का

प्रारंभ था।

आधे गांव खाली पड़े थे। आक्रमण के समय खेत बिना काटे छोड़ दिए गये। यह था युद्ध का...गृह-युद्ध का परिणाम । सितम्बर के अन्तिम तीन दिनों तक वह नदी के ढालू रास्ते के किनारे-किनारे चलता रहा। एक ओर नदी बह रही थी और दूसरी ओर अन्तरिक्ष के किनारे तक बादलों को छूते हुए खेत फैले हुए थे। बीच का काफी स्थान छोड़कर घना जंगल था। जंगल के गहरे नाले नदी में आकर मिल जाते। परित्यक्त खेतों से पका हुआ धान अटक रहा था। यूरी ने मुट्ठी भर धान उठाया और पकाने का कोई साधन और उपाय न होने के कारण वह उसे कच्चा ही चबा गया और फिर किसी तरह इस चारे को हजम भी कर गया।

नदी की विपरीत दिशा में एक खण्डहरप्राय: गांव से वह गुजरा। एकाध जले हुए और ध्वस्तप्राय मकान खड़े थे। वे भी खाली थे। भस्मप्राय पत्थर के टुकड़ों के साथ चूल्हे की धुआं निकालने वाली नालियां लटक रही थीं। नदी की ओर जाने वाली चट्टानों के बीच मधुमक्खियों ने अपना अड्डा जमा लिया था। अंतिम मकान के सामने बिना काम में लाये तीन पत्थर, बिना खुदे हुए पड़े थे। शांत संध्या थी। दरवाजा खोलकर उस मकान के अंदर जाते ही हवा का एक तेज झोंका चला आया और पुआल तथा घास के तिनके फर्श पर इधर-उधर उड़ने लगे। दीवार पर चिपकाये हुए कागज लटकते हुए फड़फड़ाये। यहां भी चूहों की भरमार थी।

जैसे सारी गति मध्यम हो गई थी। बहती नदी के साथ चलने वाली सड़क और बादलों के साथ वह चला जा रहा था। सारे वातावरण में पता नहीं कौन-सी व्याप्त थी कि उसकी ओर निरन्तर देखते रहने से यूरा का सर दर्द करने लगा था। चूहों के कारण भयंकर रूप से प्लेग फैला हुआ था। रास्ते में अंधकार से घिरे खुले मैदान में सोने के लिए जब भी वह बाध्य होता चारों ओर से चूहे आकर उस पर चढ़ जाते। दिन में भी इनकी कमी नहीं रहती। गन्दगी पर चलने वाले कुत्ते उसका पीछा करते कि मौका मिलते ही उस पर झपट पड़ें। बिना चूहों की परवाह किये वे यूरा का पीछा करते और जब वह रुककर उनकी ओर बढ़ता तो ये दुम दबाकर भाग

जाते।

जंगल और खेतों का स्वरूप बिल्कुल अलग-अलग था बर्बाद खेत अनाथों की तरह लगते, जनशून्यता के कारण अभिशप्त से। लेकिन जंगल इस बर्बादी से युक्त, स्वतंत्रतापूर्वक अपना सिर ताने खड़ा था। सूर्य गांव के खेतों के पीछे छिप रहा था। तप्त स्वर्णिम किरणें घाटी में, उनकी दरारों में घुस रही थीं। यूरा बाहर निकल आया, सड़क पार की और पास के मील के पत्थर पर जाकर बैठ गया।

'मुझे बहुत प्यास लगी है। डरो मत। यहां आओ।' उसने एक लड़के से पानी मांगा।

पानी लाने वाला लड़का किशोर ही था। उसके बाल बिखरे हुए थे, पांव नंगे थे, चेहरा रूखा-सूखा। यूरा के सौहार्दपूर्ण व्यवहार के बावजूद भी उसके मन से संदेह गया नहीं। थोड़ी देर बाद पता नहीं क्यों, वह खुशी के मारे उत्साहित हो उठा।

बाल्टी नीचे रखकर यूरा के पास आते हुए उसने कहा—ऐसा...ऐसा नहीं हो सकता...क्या मैं सपना देख रहा हूं ? माफ करना कामरेड, मेरा ख्याल है कि मैं आपको जानता हूं। हां हां जानता हूं। आप...आप डाक्टर ही हैं न ?

...'और तुम कौन हो ?

—'मुझे नहीं पहचाना ?'

'नहीं।'

...मास्को वाली गाड़ी में हम साथ ही थे। आपको याद नहीं मजदूरी करने के लिए मैं बेगारी में पकड़ा गया था।

यह था वास्या ब्रेकिन। उसने नीचे झुककर यूरा का हाथ पकड़कर चूम लिया। यह जला हुआ गांव था उसकी मातृभूमि वेरिन्टेनिन्की। उसकी मां मर चुकी थी। गांव बर्बाद हो चुका। जिस समय तहकीकात चल रही थी, वह दुख से पागल हो गई और नदी में कूदकर उसने आत्महत्या कर ली। उसकी दो बहनें आल्या और आर्या किसी अनाथालय में हैं, जिनके बारे में निश्चित रूप से वह कुछ भी नहीं जानता। वह यूरा के साथ मास्को चल

दिया। रास्ते में उसने अपनी आप-बीती बड़े विस्तार के साथ सुनाई।

वह कह रहा था...पिछले शिशिर में जब हमने खेत बोये थे हमारी मुसीबतें आरंभ हो गईं। बस जैसे ही पोल्या गई, हमारा दुर्भाग्य शुरू हो गया। आप उन्हें जानते हैं ?

'नहीं। नहीं जानता कौन हैं ?'

...'अजी आप उसे नहीं जानते। वह भी तो हमारे साथ रेल में थी। बार-बार बाल संवारती रहती थी।'

'हां, हां। वह ? ठीक। मुझे याद है एक बार वह मुझे साइबेरिया के एक शहर में भी मिली थी ?'

'...सच ? पोल्या आपको मिली थी ?'

'...तुझे हो क्या गया है रे ? इतने जोर से हाथ मत खींच भले आदमी। और अब लड़कियों की तरह शर्मा क्यों रहा है ?'

'जल्दी बताओ वह कैसी है ?'

'...बिल्कुल ठीक। वह तुम लोगों के बारे में बातचीत करती रही। शायद उसने यह भी बताया कि वह तुम लोगों के साथ रह चुकी हैं ?'

'...हां, वह हमारे साथ रहती थी। मां उसे आल्या और आर्या की तरह बहुत ही प्यार करती थी। बड़ी भली लड़की थी। काम करने में होशियार। सिलाई का काम तो इतना बढ़िया करती कि बस। लेकिन वेरिटेनिन्की की अफवाहों से उसका जीना दूभर हो गया था। गांव में एक रौटन खारलम रहता था। वह उसके पीछे पड़ा था। लेकिन पोल्या उसकी ओर फूटी आंखों से भी नहीं देखती। इसी कारण वह मुझसे जलता था। इसलिए पोल्या और मेरे बारे में बदनामी फैला रहा था। अन्त में वह अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकी और चली गई। इसके बाद हमारी मुसीबतें शुरू हो गईं।'

25

मास्को पहुंचने पर यूरी ने कहा—'अब तुम्हें किसी-न-किसी काम में लग जाना चाहिये।'

'—मैं पढ़ना चाहता हूं।'

'—ठीक है।'

'—दूसरी मेरी इच्छा है कि अपनी मां की एक तस्वीर अपनी याददाश्त के आधार पर बनाऊं।'

—'यह भी अच्छा ख्याल है। लेकिन इसके लिए चित्रकला का अभ्यास होना चाहिये। तुमने इसके लिए कभी कोशिश की है ?'

—'जब मैं अपने चाचा के यहां काम सीखता था, तब उनकी नजरें बचा कर दीवार पर कोयले से ऐसे ही टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींचा करता था।'

—'तो फिर ठीक है। देखते हैं, क्या किया जा सकता है।'

वास्या में चित्रकार होने की कोई विशेष प्रतिभा नहीं थी। लेकिन दस्तकारी में उसकी औसत योग्यता थी। यूरा ने अपने मित्रों की सहायता से स्ट्रोगनोव इंस्टीट्यूट में उसे भर्ती करवा दिया। सामान्य ज्ञान के अतिरिक्त प्रिंटिंग, बाईंडिंग और पुस्तक प्रकाशन के सम्बन्ध में थोड़े ही दिनों में उसने अच्छी योग्यता हासिल कर ली।

वास्या और यूरा के प्रयत्न संयुक्त हो गये। यूरा ने विभिन्न विषयों पर बीच-पच्चीस पृष्ठों की कई पुस्तकें लिखीं और वास्या ने कम्पोज करके छाप दीं। इस संस्था में सिखाये गये काम की व्यावहारिक रूप से प्रमाणित करने का नियम था जिससे कि उसने लाभ उठाया। पुरानी पुस्तकों की जो दुकान अभी हाल ही में उनके मित्रों ने खोली थी इनके द्वारा ये पुस्तिकाएं बेच दी गयीं। इन पुस्तकों में उसका जीवन-दर्शन, औषधि शास्त्र पर उनके विचार, स्वास्थ्य और रोग की परिभाषा, मानवीय विकास का क्रम, जाति वर्ग का परिवर्तन और उसके स्थूल सिद्धांत, धर्म तथा इतिहास पर विचार आदि विषयों पर उसने पुस्तिकाएं लिखीं।

इन पुस्तकों में यूरी के मामा का प्रभाव स्पष्ट था। वे बोल-चाल की भाषा और पद्धति में लिखी गई पुस्तिकाएं थीं। इसके अलावा कुछ कविता-संग्रह, तथा पुगोचेव-प्रदेश के संस्मरण भी लिखे गये। यह पुस्तिकाएं उन प्रचलित और सुप्रसिद्ध विषयों पर लिखी गयीं थीं तो कि विवादास्पद, निर्णीत और अप्रमाणित थे। रचना-शैली सजीव और मौलिक थी। लिहाजा पुतिस्काओं की अच्छी बिक्री हुई और पाठकों ने उन्हें पसंद किया। उन दिनों हर विषय पर प्रवीण लोगों की बहुतायत थी। काव्य-रचना और साहित्य अनुवाद के लिए विशेषता प्राप्त लोग सुलभ थे। प्रत्येक विषयों के सिद्धांतों के अध्ययन के लिए अनेक संस्थाएं स्थापित की जा चुकी थीं। विचारों के बड़े-बड़े महल संयोजित किये गये थे और कलात्मक विचारों के लिए अनेक अकादमियों की स्थापना की गयी थी। इस तरह की आडम्बरपूर्ण दिखावटी पचास से भी अधिक संस्थाओं का यूरा मेडिकल सलाहकार था।

यूरा और वास्या के बीच के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध धीरे-धीरे ढीले पड़ने लगे। वास्या ने अद्भुत तरीके से तरक्की कर ली थी। अब वह किसी गांव का रूखे बाल बिखराये नंगे-पैरों वाला गरीब लड़का नहीं था। क्रांति द्वारा उद्घोषित सत्यों का प्रत्यक्ष आत्म-प्रमाण उसे दिन-प्रतिदिन अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। चूँकि वह यूरा की तमाम कमजोरियों से प्रत्यक्ष रूप से अच्छी तरह से परिचित था, इसलिए वास्या का यह रुख यूरा को दुखित कर देता। विभिन्न सरकारी दफ्तरों से अपने परिवार का राजनैतिक विस्थापन, उनके रूस वापस लौटने के लिए इजाजत, एवं अपने लिए पार-पत्र प्राप्त कर पेरिस से उन्हें लौटा लाने के लिए अनुमति प्राप्त करने में वह प्रयत्नशील था।

उसके प्रयत्नों की उत्साहहीनता और व्यर्थता से वास्या को आश्चर्य होने लगा था। यूरा इस बात पर विश्वास करने के लिए उतावला हो उठता कि उसके तमाम प्रयत्न अर्थहीन हैं। जब भी वह बोलता तो किसी काम को करने की इच्छा में किसी तरह का विश्वास प्रतिध्वनित नहीं होता। वास्या की निगाहों में यूरी की अनेकानेक गलतियां आने लगीं। यूरा को न्यायोचित स्पष्ट आलोचना पसन्द थी, पर वास्या के इस नूतन रूप का असर

उनके मैत्रीपूर्ण रिश्तों पर अवश्य पड़ा। अन्त में दोस्ती समाप्त हो गयी।दोनों अलग हो गये। यूरा ने, जहां वह उसके साथ रहता था, उस कमरे को छोड़ दिया।

और वह मचनोगोरोड में चला आया जहां मार्केल सर्वेसर्वा थी। वहीं उसके लिए पहले से ही उसने स्टेंटिट्स्की के पिछले फ्लैट में एक कमरा रख छोड़ा था। इसमें एक परित्यक्त स्नानागार था और एक खिड़की वाला कमरा, जिसकी पीछे की ओर से रास्ता था। यहां आने पर उसकी अपने प्रति विरक्ति अधिक बढ़ गयी। उसने दवा लेनी छोड़ दी और मित्रों से मिलना बंद कर दिया।

बड़ी गरीबी में वह दिन काट रहा था। सर्दी ऋतु और रविवार का दिन। छतों पर से खंभों के रूप में और खिड़कियों में से फुहारों के रूप में धुआं निकल रहा था। शहर का जीवन अभी भी सुव्यवस्थित नहीं हो सका था। मुचनोगोरोड के किरायेदार गंदे कपड़े पहने इधर-उधर फिर रहे थे। अधिकांश लोग बीमार थे। रविवार होने के कारण मार्केल अपने पूरे परिवार के साथ घर में ही था। रसोईघर की बड़ी टेबल पर सब लोग मिल कर खाना खा रहे थे। पहले यहीं से राशनिंग की व्यवस्था की जाती थी। लेकिन अब तो राशनिंग की जगह दूसरे प्रकार के नियंत्रण कायम हो चुके थे। कमरे का आधे से अधिक भाग उस रूसी चूल्हे द्वारा घेर लिया गया था। उसके एक ओर बिस्तर लटक रहे थे, दूसरी ओर रजाइयां। कमरे के दोनों ओर बैंचें लगी हुई थीं। दीवार के सहारे एक ओर नल लगा हुआ था। बैंचों के नीचे घर-गृहस्थी का सामान पड़ा था।

स्टोव पूरी तेजी से जल रहा था। इसलिए कमरा काफी गर्म था। सामने एक ओर मार्केल की पत्नी रसोई बनाने में व्यस्त थी। इसी समय दो बाल्टियां लिये यूरा अन्दर चला आया।

—'मालूम होता है बहुत भूख लग रही है।'

—'बैठ जाओ। बेतकल्लुफ से आ जाओ। खा लो।'

—'धन्यवाद। मैं भोजन कर चुका हूं।'

—'अजी, बैठ भी जाओ। मुझे मालूम है तुम खाना किसे कहते

हो ? यह है गर्मागर्म। ले लो। नाक मत सिकोड़ें। बढ़ियां स्वादिष्ट खाना है। पकाये हुए आलू, कचौड़ी, कासा।'

—'माफ करना भाई । मेरे आने से दरवाजे खुले रह गये और ठंडी हवा अंदर चली आई। जितना संभव हो, पानी ले जाना चाहता हूं। स्नानागार मैंने साफ कर लिया है, उस ओर के टब को भरना बाकी है। इसके बाद तुम्हें अधिक परेशान नहीं करूंगा। बात यह है कि और कहीं पानी मिलता भी तो नहीं।'

—चलो उठाओ यह सब अपने आप ले लो। खा लो। तुम शरबत मांगते, तो शायद हम नहीं देते। लेकिन पानी की कोई कमी नहीं। जितना चाहो, ले जा सकते हो। बिल्कुल मुफ्त। तुमसे एक पैसा तक नहीं लेंगे।'

वे सब हंस पड़े। तीसरी अथवा चौथी बार जब वह आया तो मार्केल ने लहजा बदल कर कहा—मेरे ये दामाद मुझसे पूछ रहे हैं कि तुम कौन हो ? मैंने उन्हें बता दिया। लेकिन उन्हें विश्वास ही नहीं होता। परवाह मत करो। तुम पानी ले जाते रहो। बस, इतना ध्यान रखना कि फर्श पर पानी न फैले। यदि यह यहां जम गया तो तुम इसे खुरचने के लिए तो आओगे नहीं। भले आदमी, अच्छी तरह से दरवाजा बंद कर दो। हवा आ रही है। हां, तो मैं उन्हें बता रहा था कि तुम कौन हो ? वे विश्वास ही नहीं करते। कहते हैं। तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई पर इतने सारे जो पैसे खर्च किये गये थे, उससे क्या लाभ हुआ ? सच बात है। बताओ तो ?

इसके बाद जब वह फिर आया तो नाराजगी के स्वर में मार्केल ने कहा—'अब बस करो भाई। हर चीज की सीमा होती है। यदि मेरी मरीना तुम्हारी इतनी तरफदारी न करती तो मैं अब तक दरवाजा बंद कर डालता। तुम्हें मरीना याद है ?'

टेबल के उस ओर वह खड़ी रही—काली-सी...लेकिन अब मारे शर्म के लाल हुई जा रही है।

वह कहती है कि 'तुम्हारी भावनाओं पर चोट न पहुंचाई जाये।' जैसे कि हम सचमुच तुम्हें चोट पहुंचा रहे हों। वह आजकल केन्द्रीय तारघर में टेलिप्रेफिस्ट है। विदेशी भाषाएं जानती हैं। कहती है...तम भाग्यहीन हो।

बड़ा दर्द हो रहा है उसे, तुम्हारे लिए तो जैसे वह आग और पानी में कूद पड़ने को तैयार हो।

'यह तो ऐसे कह रही है जैसे कि तुम्हारे इस भाग्य के लिए मैं ही दोषी होऊं। तुमने आखिर उस संकट के दिनों में घर छोड़ा क्यों ? साइबेरिया भाग जाना तुम्हारी बहुत बड़ी गलती थी। एक हम हैं देख लो। हम कहीं नहीं गये। अब हम मजे में हैं। तुमने टोन्या की ठीक से देखभाल नहीं की, तभी तो वह बिचारी इधर-उधर मारी-मारी फिर रही है।'

'खैर, यह तुम्हारा अपना मामला है। मुझे क्या पड़ी है ? सिर्फ मुझे तो इतनी ही बता दो कि इतने सारे पानी का आखिर करोगे क्या ? अब तुम पर गरम भी तो नहीं हुआ जा सकता। क्योंकि मालूम है तुम बिल्कुल चिकने घड़े हो, कोई असर नहीं होगा।'

सिवाय मरीना के सब लोग हंस पड़े। वह गुस्से से इधर-उधर देखती हुई झुंझला रही थी। उसने अभी तक एक शब्द भी नहीं कहा था; इसलिए उसकी ओर यूरा का ध्यान गया भी नहीं।

यूरा ने जवाब दिया—'बहुत सारी सफाई करनी है। फर्श धोना है। कपड़े साफ करने हैं।'

मार्केल ने आश्चर्यचकित स्वर में कहा—'तुम्हें यह कहते शर्म नहीं आती यूरा एण्ड्रेविच ? तुम यह सब स्वयं करोगे...अकेले ही ? अब थोड़ी देर बाद तुम यहां चीनी लाण्डरी खोलने की सोच रहे होंगे ?'

'आगथा बोली—मैं अपनी लड़की भेज देती हूं। वह तुम्हारी सफाई और कपड़े धोने का काम कर देगी। डरो मत बेटी, तुम देख नहीं रही हो, ये बड़े घराने के कितने अच्छे आदमी हैं ? किसी मक्खी तक को नुकसान नहीं पहुंचा सकते।'

—'तुम भी क्या कहती हो आगथा। यह भी कहीं हो सकता है कि मरीना मेरा फर्श साफ करे ? सपने में भी नहीं। मैं सारी व्यवस्था कर लूंगा। वह भला मेरे लिये अपने हाथ गंदे करें।'

—'वाह, आप तो अपने हाथ गंदे कर सकते हैं और मैं नहीं ?' मरीना बीच में बोली—'यह सारी बातें जाने दीजिये यूरा साहब, बताइये तो, मैं यदि

आपके यहां ऊपर आ जाऊं तो मुझे धक्के मारकर तो नहीं निकाल देंगे ?'

उसके अद्वितीय मधुर स्वर की ओर यूरा का ध्यान अब गया। इस प्रकार पानी की बाल्टियां उठाकर ले जाने से जो बात शुरू हुई थी वह कुछ ही दिनों बाद आगे चलकर घनिष्ठ मैत्री में परिणित हो गयी। वह अक्सर ऊपर जाकर उसके घर के कामकाज में हाथ बंटाया करती।इसी तरह काम करने के लिए एक बार वह ऊपर गयी और वापस लौटकर नहीं आई।

वह यूरा की तीसरी पत्नी बन गई। यद्यपि टोन्या को तलाक नहीं दिया गया था और न ही मरीना के साथ उसका विवाह चर्च में अथवा रजिस्ट्री द्वारा ही हुआ था। फिर भी उनके बच्चे हुए। मार्केल और आगथा अपनी लड़की के बारे में गौरव से कहा करते...वह डाक्टर की पत्नी है।

कभी-कभी मार्केल बड़बड़ाता...इनका विवाह न तो गिरजाघर में ही हुआ है न रजिस्ट्री द्वारा ही। मार्केल की आपत्ति का आगथा जवाब देती. ..तुम भी कैसी बातें करते हो ? टोन्या के जीवित रहते हुए वह दूसरा विवाह कैसे कर सकता है ? मार्केल जवाब देता...टोन्या को अब इससे क्या लेना-देना है ? उसका जीना, न जीना बराबर ही है। मरीना को ब्याह से कोई नंहीं रोक सकता। यूरा कभी-कभी मजाक में कहा करता—हमारा प्रेम बीस बाल्टियों भर है।

मरीना ने उसकी विचित्रताओं को, अव्यवस्था और लापरवाही को संजो लिया। उसकी अद्भुत चित्तवृत्ति और कल्पनाओं के साथ सामंजस्य स्थापित कर लिया। वह जानती थी कि यह आदमी कितना विरक्त है। उसके स्वभाव, उसकी प्रकृति और उसके झिड़कने को वह आसानी से सह जाती। उसका प्रेम यूरी के प्रति बढ़ता ही गया। कभी-कभी तो यूरा की गलतियों के कारण उन्हें बहुत तंग होना पड़ता, बड़ी तकलीफ भुगतनी पड़ती। ऐसी स्थिति में वह पोस्ट आफिस का काम छोड़ देती। गनीमत यह थी कि पोस्ट आफिस में काम इतना अच्छा था कि वहां गैरहाजरियों की परवाह नहीं की जाती थी।

सामान्य लोगों की तरह डुडरोव ने अपनी बात का प्रतिपादन करते हुए

धार्मिक पुस्तक उठा ली। उसकी यह अनर्थक वार्ता इस युग के अनुकूल ही थी।

यूरा सोच रहा था जो लोग स्वतंत्र नहीं है, वे दासता की ही पूजा करते रहते हैं। वे राजनीतिक मर्म को सफलता की चरम सीमा मानते है और यूरा इनकी कट्टरता अधिक बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। लेकिन वह चुप ही रहा। दोस्तों की भावनाओं पर चोट चहुंचाना वह नहीं चाहता था। यूरा उठ खड़ा हुआ।

बोला—'अब मैं चलूंगा।तुम इतने नाराज क्यों हो रहे हो ? यहां बहुत गर्मी हो रही है। जैसे दम घुटा जा रहा हो।'

—'ओह, माफ करना, हम बहुत धूम्रपान करने लगे हैं। हम लोग भूल ही जाते हैं कि तुम्हारी उपस्थिति में यह सब नाजायज है।'

—'अब मैं चलूंगा, मिशा।काफी बातें हो चुकीं। मेरी इतनी फिक्र करने के लिए धन्यवाद। मैं ढोंग नहीं कर रहा हूं। सचमुच मुझे हृदय की बीमारी है। अभी मैं चालीस का भी नहीं हुआ हूं, लेकिन लगता है कि अब वह शुभ दिन आने ही वाला है, जिस दिन इसकी धड़कन बिलकुल बंद हो जायेगी।'

—'धुत्। अभी हमें तुम्हारी शव-यात्रा में जाने की फुर्सत नहीं हैं। तुम हम सबको मार कर फिर मरोगे। देख लेना।'

—'आजकल यह बीमारी बहुत आम हो गयी है। इससे अधिक लोग मरते नहीं। फिर भी यह हमारे युग की व्यापक देन है। उसका कारण हमारी नैतिकता ही है।'

—'ठीक कहते हो।' गोर्डन ने डुडरोव का पत्र लेते हुए कहा।

—'अच्छी बात है। यही होगा। अब मुझे जाने दो। मुझे सांस लेने में तकलीफ हो रही है। मैं सच कहता हूं। बात बढ़ाकर कहना मेरी आदत नहीं।'

—'चले कैसे जाओगे ? हम जाने ही नहीं देंगे। पहले सच्चे दिल से यह बताओ कि अब तुम्हें ठीक रास्ते पर चलना चाहिये कि नहीं। टोन्या और मरीना का मामला साफ होना ही चाहिये। आखिर औरतें भी इंसान हैं,

उनके भी दिल हैं कि महसूस कर सकती हैं कि दर्द उन्हें भी सालता है। यह कोई अच्छी बात नहीं है कि तुम्हारे जैसा आदमी इस तरह बर्बाद हो। अब तुम्हें होश में आ जाना चाहिये। तुम्हें अपनी प्रेक्टिस वापिस चालू कर देनी चाहिये।'

—'ठीक है। एक-एक करके तुम्हारी बात का जवाब देता हूं। मैं भी आजकल इन्हीं बातों पर विचार कर रहा हूं। इसलिए यह निश्चित है कि कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन होने वाला है। इसके बाद सब कुछ ठीक-ठीक हो जायेगा। देख लेना।सच कह रहा हूं। इसके बाद सब कुछ ठीक-ठीक हो जायेगा। मैं जीना चाहता हूं। जीने की मेरी इच्छा है। जीने का अर्थ है, संघर्ष करना। संघर्ष का अर्थ है, आगे बढ़ना।'

'समाचारों का दूसरा भाग भी तुम्हें सुना देता हूं। आजकल पेरिस से मुझे पत्र मिलने लगे हैं। साशा ने प्रारंभिक पढ़ाई समाप्त कर ली है और माशा स्कूल जाने वाली है। मैंने अभी तक माशा को देखा नहीं है। वे सब फ्रांसीसी नागरिक हो गये हैं; फिर भी मुझे विश्वास है कि एक दिन वे लौट आयेंगे—और फिर सब कुछ ठीक-ठाक हो जाएगा।'

'मुझे लगता है कि टोन्या और उसके पिता मरीना के बारे में सब कुछ जानते हैं। मैंने नहीं लिखा, फिर भी इधर-उधर से सुनकर उन्हें मालूम हो ही गया होगा। पिता की तरह एलेकजेण्ड्रोविच इस बात से नाराज हुए ही होंगे। उन्हें आघात लगा होगा। सम्भवतः इसी कारण से टोन्या और मेरे बीच पांच साल तक पत्र-व्यवहार बंद रहा। मास्को आने पर मैं उन्हें पत्र लिखा करता था, लेकिन अचानक उन्होंने जवाब देना बंद कर दिया। अभी हाल ही में उनके पत्र फिर आने लगे हैं। बच्चे भी बड़े प्यार से पत्र लिखते हैं। पता नहीं अचानक वे इतने दयार्द क्यों हो गये ? हो सकता है टोन्या को कोई अच्छा व्यक्ति मिल गया हो, मुझे मालूम नहीं है, लेकिन यदि मिला हो तो अच्छा ही है। अब मैं एक मिनट भी नहीं रुक सकता। मैं जानता हूं। विदा।'

26

दूसरे दिन मरीना अपने दोनों बच्चों के साथ व्याकुल भाव से मीशा के पास आई।

घबराये हुए स्वर में उसने पूछा—'यूरा यहां हैं क्या ?'

—'वह रात को वापस घर नहीं पहुंचा ?'

—'नहीं।'

—'तो शायद वह डुडरोव के यहां होगा ?'

—'मैं वहां से ही आई हूं। निकी डुडरोव विश्वविद्यालय गये हुए हैं लेकिन पड़ोसी यूरी को जानते हैं। वे कहते हैं कि वे यहां नहीं आये।'

—'तब कहां गया होगा ?'

मरीना ने छोटी बच्ची को नीचे रख दिया; और मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

27

दो दिन तक डुडरोव और गार्डन मरीना के पास बैठे रहे। साथ ही बारी-बारी से वे प्रत्येक संभव स्थान पर यूरा को ढूंढ आये।

तीसरे दिन तक डुडरोव पोस्ट आफिसों से रवाना की गयी चिट्ठियां तीनों मित्रों को मिलीं।

यूरा ने दुख जाहिर किया था कि उसके कारण लोगों को बड़ी तकलीफ हुई होगी। चिन्ता न करने की बात लिखते हुए उसने प्रार्थना की थी कि उसके बारे में किसी तरह की खोज-खबर न की जाए। उससे कोई लाभ न होगा। आगे उसने लिखा था कि एकान्त में रहकर वह आत्मशुद्धि करना और नये सिरे से जीवन शुरू करना चाहता है। जैसे ही वह किसी निश्चय

पर पहुंचेगा, वह वापस मरीना और बच्चों के पास लौट आयेगा। गोर्डन को उसने लिखा कि मरीना के लिए वह एक मनीआर्डर भेज रहा है। वह उसे दे देना और कहना कि बच्चों के लिए वह नर्स रख ले, ताकि वह काम पर जा सके। उसने मरीना को सीधे मनीआर्डर इसीलिए नहीं भेजा कि उसे डर था कि यदि किसी की नजर इस पर पड़ गई तो चोरी हो सकती है। मनीआर्डर शीघ्र ही आ गया। जितना पैसा भेजा गया था, उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं थी। मरीना वापस काम पर जाने लगी थी। कुछ दिनों तक परेशान रहने के बाद उसने इस घटना को यूरा की विचित्र हरकत मानकर धीरज धर लिया। यूरा के इस पलायन के कारण उसने अपने काम से त्यागपत्र दे दिया। तीनों उसकी तलाश करते रहे। लेकिन जैसा कि यूरा ने लिखा था, उनकी खोज बिल्कुल बेकार थी। उन्हें उसका कोई पता नहीं मिल सका। उस समय भी वह उनसे बहुत अधिक दूर नहीं था। उस दिन गोर्डन को छोड़कर संध्या से कुछ समय पहले वह ब्रोने स्ट्रीट पार करके घर की ओर मुड़ रहा था कि उससे लगभग सौ गज के फासले पर उसने अपने सौतेले भाई युवग्राफ को देखा।

तीन साल से उसने उसके बारे में कुछ भी जाना-सुना नहीं था। युवग्राफ हाल ही में मास्को पहुंचा था। एकबारगी जिवागो को लगा कि मानो वह आसमान से टपक पड़ा हो। यूरा के प्रत्येक प्रश्नों का जवाब उसने हंसते हुए, कंधे हिलाकर ही दिया। यूरा से थोड़ी देर बातचीत होने में युवग्राफ को उसकी कठिनाइयों का अंदाज हो गया। सड़क पार करते हुए, भीड़ में से गुजरते समय, युवग्राफ ने यूरा के लिए एक क्रियात्मक योजना प्रस्तुत की। यह उसी का प्रस्ताव था कि कुछ दिनों के लिए वह गुप्त रहकर एकान्त में रहे। आर्ट्स थियेटर के समीप उसने उसके लिए एक कमरे की व्यवस्था कर दी। एक अस्पताल में, जहां यूरा को अनुसंधान करने का अवसर काफी मिल सकता था, वह कोशिश कर रहा था कि उसे जगह मिल जाए। पैसे से ही नहीं, हर प्रकार से उसने उसकी मदद की। उसकी पारिवारिक दिक्कतों के निवारण के लिए भी वह प्रयत्न कर रहा था कि या तो वे यहां लौट आवें अथवा यूरा ही पैरिस चला जाएं।

उसकी शक्ति और प्रभाव अद्भुत और रहस्यमय था। उसकी सहायता ने यूरा में नये ज़ीवन का संचार कर दिया। अपने नये काम पर जाने के लिए जिवागो ने अगस्त के अन्तिम पक्ष में एक दिन गेझनी स्ट्रीट में बोटकिन होस्पीटल जाने के लिए एक ट्राम पकड़ी। लेकिन भाग्य ने साथ नहीं दिया। ट्राम बिल्कुल खटारा थी। उसकी मीटर खराब थी, लिहाजा हर कदम पर कुछ-न-कुछ खराबी उसे आगे बढ़ने से रोक देती। ट्राम चलाने वाला ड्राइवर अपने औजारों के साथ बाहर आता, चारों ओर से उसका निरीक्षण करता और फिर उसे ठक-ठक करके सुधारने में व्यस्त हो जाता। इस ट्राम के कारण यातायात ठप्प हो गया था और रास्ता अवरुद्ध। पीछे की वाहनों को कतारें मैनेजी के चौराहे से भी आगे तक चली गयी थीं। सुबह का समय था। गर्मी काफी थी। भीड़ के कारण ट्राम में दम लेने को भी हवा नहीं थी। एक ट्राम से ट्राम को पार करता हुआ काला बादल आसमान में ऊपर ही ऊपर मंडरा रहा था। तूफान के आसार नजर आ रहे थे। यूरा खिड़की से सटा हुआ चुपचाप अपने आप में खोया हुआ बैठा था। प्रत्येक व्यक्ति की ओर वह गहरी नजरों से देख रहा था।

एक वृद्ध महिला, बेंत का बना हुआ हैट और लायनिन के कपड़े पहने, ट्राम के चबूतरे की ओर जा रही थी। उसके हाथ में कागजों का एक बण्डल था। गर्मी के मारे वह उसी से हवा कर रही थी। बीच-बीच में पसीना पोंछने के लिए हल्के लेस का रूमाल निकाल कर भौंहों और मुंह पर थपथपा लिया करती। यूरा की नजरों से वह बार-बार ओझल हो जाती। फिर ट्राम के रुकने पर जब वह आगे बढ़ी तो जिवागो की दृष्टि उस पर पड़ी। उसे याद आई, उन स्कूली दिनों की बात, जब कि इस तरह के सवाल हल करना बच्चों को सिखाया जाता है कि यदि एक गाड़ी इस रफ्तार से इतनी देर चले तो इतने मील वह कितनी देर में तय करेगी ?

लेकिन लगा कि जीवन की रफ्तार में गणित के ये वायदे किसी काम नहीं आ सकते। कई लोगों की बात याद आई। समानान्तर चलने पर भी पता नहीं किन परिस्थितियों के कारण कुछ लोग पहले पहुंच गये, कुछ बाद में। कुछ पहुंच सके, कुछ बीच में ही रह गये।

बिजली चमकने लगी। बादलों की गर्जना सुनाई देने लगी। ट्राम बीसवीं बार रुक गयीं। वह फिर खराब हो गयी थी। बरसात की पहली बौछार से सड़क, फर्श तथा वह वृद्ध महिला भीग गयी। तेज हवा पेड़ों पर से गुजरी। पत्ते फड़फड़ाये। वृद्ध-महिला का टोप गिरने लगा उसने उसे संभाल लिया। यूरा को लगा कि बीमारी और कमजोरी के कारण वह मूर्च्छित हो जायेगा। उसने खिड़की खोलने की कोशिश की। लेकिन वह उसे हिला भी नहीं सका। लोग कह रहें थे अरे यह खिड़की कीलों से ठुकी हुई है। नहीं खुलेगी। लेकिन मूर्छा से बचने की कोशिश करता आ रहा वह कुछ भी सुन नहीं पा रहा था। वह निरन्तर कोशिश करता रहा, खिड़की को खोलने की।

उसे तीव्र पीड़ा का बोध हुआ। जैसे अंदर की कोई चीज टूट गयी हो। लगा कि जैसे अन्त करीब आ गया हो। ट्राम आगे बढ़ी। प्रेसन्या स्ट्रीट पर जाकर फिर रुक गई। अमानवीय शक्ति के साथ यूरा भीड़ को चीरता हुआ प्लेटफार्म पर आ गया। ताजी हवा से उसे कुछ होश आया। उसे लगा कि शायद वह अच्छा हो रहा है। भीड़ को चीरते हुए वह आगे बढ़ने लगा। लोगों की आवाजों और गालियों पर उसका ध्यान नहीं था। रुकी हुई ट्राम से उतरकर वह सड़क की ओर बढ़ा। एक कदम, दूसरा और तीसरा कदम. .और फिर गिर पड़ा। इसके बाद वह फिर उठ नहीं सका। ट्राम से कई लोग बाहर निकल आये। भीड़ एकत्रित हो गयी थी। तरह-तरह की बातें होने लगी। तुरन्त मालूम हो गया कि उसके हृदय की गति बंद हो गयी है। वह वृद्ध महिला पास आई, उसने लोगों की बातचीत सुनी, एक नजर मृतक पर डालकर, वह आगे बढ़ गई।

कुछ लोगों का मत था कि शव को ट्राम में रखकर अस्पताल ले जाया जाए तथा कुछ लोगों की राय थी कि पुलिस को तुरन्त इत्तला करके बुलाया जाए ! वह वृद्ध विदेशी महिला अधिक देर तक वहां नहीं रुकी। यह थी मेल्यूजेवो वाखी मेडमेजेल। अब वह काफी बूढ़ी हो गयी थी। पिछले बारह वर्षों से अपने स्वदेश जाने के हेतु वह अनुमति-पत्र-प्राप्ति के लिए सम्बन्धित अधिकारियों से खतोकिताबत करती रही। अब उसे स्वीकृति मिल

चुकी थी और पार-पत्र के लिए बह मास्को आई थी। इस समय वह अपने दूतावास की ओर इसी उद्देश्य से जा रही थी। उसके हाथ में सम्बन्धित कागजों का पुलन्दा डोरी से बंधा हुआ था। उसी से वह हवा कर रही थी। वह अनजान में ही पास से गुजर गई, बिना जाने कि उसी ने जिवागो में जीवन की अन्तिम झलक, कुल क्षणों के लिए सही पैदा कर दी थी।

28

खुले दरवाजे से रास्ता और कमरा स्पष्ट दिखाई दे रहा था। त्रिकोणकार में रखी हुई टेबल पर शव रखा हुआ था। यह वही टेबल था जिसे यूरा पहले लिखने का काम किया करता था। पाण्डुलिपियों को दराजों में रख दिया गया था और उनके ठीक ऊपर जिवागो की लाश पड़ी थी। तकियों से उसका सिर कुछ ऊपर उठा दिया गया था। सफेद पुष्प-गुच्छों से शव ढंका था। खिड़कियों से आने वाला प्रकाश फूलों के मध्य से गुजरकर शव के चेहरे और हाथों पर पड़ रहा था। पुष्प-गुच्छ की पत्तियों और छोटी टहनियों का प्रतिबिम्ब टेबल पर पड़ रहा था। मानो, उन्होंने अभी-अभी लहराना बंद कर दिया हो। अब तक मृतकों की व्यवस्थित दफन क्रिया की रीति वापस प्रचलित हो गई थी। बच्चों के भविष्य का ख्याल रखते हुए तथा मरीना की टेलिग्राफ आफिस की स्थिति को देखकर यह तय किया गया कि जिवागो की अन्तिम क्रिया नागरिक तरीके से ही हो। सम्बन्धित अधिकारियों को सूचित किया जा चुका था और अब उनके आदमियों के आने की प्रतीक्षा की जा रही थी।

बीच के समय में लगता कि जैसे कमरा खाली हो गया हो, मानो एक किरायेदार जा चुका हो और दूसरा किराएदार आने वाला हो। वहां की यह निःस्तब्ध शांति समवेदना प्रदर्शित करने वाले लोगों के आ जाने से भंग हो गई। इनकी संख्या बहुत अधिक नहीं थी। फिर भी इतने आदमियों के आने

की आशा भी नहीं की जाती थी। अधिकांश वे लोग थे जो कि जीवन के किसी-न-किसी दौरान में उसके सम्पर्क में आये थे और उसे जानते थे—जिन्हें कि बाद में वह भूल गया था। उसका साहित्यिक कृतित्व और वैज्ञानिक कार्य-कौशल उन अनेक आदमियों को भी खींच लाया, जिन्होंने उसे आज पहली और आखिरी बार देखा था।

29

किसी तरह का विशेष समारोह नहीं। निश्चल शांति। सिर्फ फूल ही मृत्यु के समय गीत गा रहे थे। जैसे खिलने और सुगन्धित होने से भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य उनके जिम्मे हो। सम्भवत: उन्हें भी लगा कि वे भी इस संसार से शीघ्र विदा होने वाले हैं, इसलिए उनकी सुगन्ध सारे वातावरण में व्याप्त हो गई। लगता है कि वे धार्मिक विधि सम्पादित कर रहे थे। वनस्पति जगत हमारे और मृत्यु-जगत के बीच का निकटतम पड़ोसी है। जीवन का रहस्य और नवीन स्वरूप प्राप्त करने की विधि के साक्षी हैं कब्रिस्तान के वृक्ष, जमीन की हरियाली और शव पर चढ़ाये जाने वाले पुष्प-दल। इसलिए मेरी मेगडोलेन ने ईसा मसीह को कब्र से उठने पर न पहचानने के कारण माली ही समझा था। यूरा का केमरगर स्ट्रीट वाला पता ही दर्ज किया हुआ था, इसलिए पहले शव यहीं लाया गया। इसके बाद उनके मित्रों को जिवागो की मृत्यु की सूचना मिली। उन्हें बड़ा धक्का लगा। चौड़े खुले दरवाजे से दुख और वेदना से चीत्कार करती अर्द्ध चेतनावस्था में मरीना शव के पास आकर पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

कमरा साफ नहीं था। शव-पेटी के लिए व्यवस्था की जा चुकी थी। मरीना रो रही थी। उसका कण्ठ अवरुद्ध था। विलाप करते-करते उसका हृदय विदीर्ण हो रहा था। जिस प्रकार गांव के लोग अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए किसी तरह की लाज नहीं करते। उसी प्रकार मरीना

सब के सामने रो रही थी। जब शव-पेटिका आ गई और शव को कमरे से हटाया जाने लगा तो मरीना उससे चिपट गई। बड़ी मुश्किल से उसे हटाया गया।

यह सब कुछ पहले दिन हुआ। आज दूसरा दिन है। दुख का वेगं कुछ कम हो गया है। लेकिन अभी तक उसे पूरा होश नहीं आया था। कल से वह यहीं बैठी है। एक मिनट के लिए भी वहां से नहीं हिली। गोर्डन और डुडरोव भी कम दुखी नहीं थे। पास ही बैठा मार्केल जोर-जोर से रोते हुए नाक के बहने वाले पानी को रूमाल से पोंछ लिया करता। इस सारे समुदाय में दो व्यक्ति ऐसे थे एक स्त्री और एक पुरुष—जो सबसे अलग चुपचाप खड़े थे। उन्होंने किसी तरह के निकट सम्बन्ध का दावा नहीं किया। लेकिन बिना किसी दावे के उनकी उपस्थिति यूरा पर उनके निकट अधिकार को स्पष्ट रूप से जाहिर कर रही थी। इन दोनों ने अन्तिम संस्कारों की व्यवस्था का प्रबन्ध-भार अपने ऊपर लिया था। उनका इस तरह चुपचाप रहना एक अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करता था। मानो वे अन्तिम संस्कारों से ही नहीं, उसकी मृत्यु से भी सम्बन्धित हों—इस रूप में नहीं कि मृत्यु का कारण हों—बल्कि मृत्यु की साक्षी ये ही हैं, इस रूप में। यूरा से इनके विशेष सम्बन्ध की बात कोई नहीं जानता था। लेकिन मन-ही-मन सबने मान लिया था कि मृत्यु के समय इन लोगों से जो सम्बन्ध स्थापित हुए थे, वे विवाद से परे हैं। उपस्थित कुछ लोग उन्हें जानते थे। कुछ लोग अनुमान लगा रहे थे। कुछ लोगों ने उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया।

जब भी वह किरगिज आंखों वाला आदमी इस स्त्री के साथ अंदर आता, सब अदब से उठकर खड़े हो जाते और उनके लिए रास्ता छोड़ देते, ताकि शव की अन्तिम क्रिया करने की व्यवस्था में कोई बाधा न पड़े। ऐसे ही एकान्त में बैठकर दोनों काम की बातें कर रहे थे।

—'आगे क्या हो रहा है युवग्राफ एण्ड्रेविच ?'

—'दफन रात को ही किया जा सकेगा। आध घंटे में डाक्टरों के संघ के लोग आयेंगे और शव को अपनी क्लब में ले जायेंगे। आम बैठक चार बजे होगी। उनके कोई कागजात ठीक नहीं हैं। श्रम-पुस्तिका काफी

पुरानी है। ट्रेड यूनियन का कार्ड था जरूर, लेकिन उसे बदलवाया नहीं गया है; न चन्दा ही दिया गया है। इन सबकी व्यवस्था करने में ही इतनी देर हुई है। अब हमें जल्द ही तैयार हो जाना चाहिये। तुम अकेली रहना जानती हो न ? मैं थोड़ी देर में वापस आता हूं। शायद टेलीफोन है...।'

बाहर यूरा के दोस्त, अस्पताल में काम करने वाले लोग, युवक, पुस्तक-विक्रेता आदि के साथ मरीना अपने बच्चों के लिए जमा रखी थी, युवग्राफ भी वहां चला आया। बाहर के कमरे में मरीना ठीक ऐसे बैठी थी, जिस प्रकार किसी कैदी से मिलने के लिए बाहर बैठा कोई इंतजार कर रहा हो। सामाने का रास्ता और हॉल खचाखच भर गया था। दरवाजा खोल दिया गया।

लोग बातें कर रहे थे। जैसे-जैसे वे दूर जाते, उनकी आवाज मंद होने लगती। जो वहां खड़े थे, उनकी फुसफुसाहट की आवाज भी मुश्किल से सुनाई देती। युवग्राफ टेलीफोन पर मृतक के सम्बन्ध में जानकारी और संस्कार के कार्यक्रमों के बारे में बातचीत कर रहा था।

—'दफन क्रिया के बाद तुम चली मत जाना, लारा। मुझे मालूम नहीं, तुम कहां रहती हो ? मुझ पर एक एहसान करना। कल या परसों, एक दिन बैठकर मैं अपने भाई के कागजात छांट लेना चाहता हूं। तुम उनके बारे में सबसे अधिक जानती हो। मुझे इसीलिए तुम्हारी मदद की जरूरत है। तुम अपने यहां आने के बारे में कुछ कह रही थीं, मैं समझ नहीं पाया। अभी सारी बातें समझाने के लिए कह भी नहीं रहा हूं। प्रार्थना इतनी ही है कि बिना अपना पता बताये, यहां से चली मत जाना।'

—'अब बताने को विशेष है ही क्या युवग्राफ ? मास्को स्टेशन पर अपना समान छोड़कर पुरानी सड़कों पर घूमने आई थी। कुछ सड़कों को पहचान सकी, कुछ इतनी बदल गई हैं कि उन्हें पहचाना भी नहीं जा सकता। जब मैं इस स्ट्रीट से गुजरी तो मुझे यह मकान याद आ गया जहाँ मेरा पाशा छात्र के रूप में रहता था। लोग कहते हैं कि उसे गोली मार दी गई। इसलिए मैं यहां चली आई कि शायद पुराने किरायेदार यहीं रहते हों। यहां मैंने तुम्हें पाया। दरवाजा खुला था। लोगों की भीड़ थी। कमरे में शव

पड़ा हुआ था।'

—'ठहरो लारा। तुमने पाशा—स्ट्रेलिनिकोव के बारे में जो कुछ कहा, उसके बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूं। गृह-युद्ध के समय मैं उससे एकाध बार मिला था।उस समय नहीं जानता था यह नाम मेरे पारिवारिक मामलों के लिए इतना महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। मैं कह रहा था, पाशा की मृत्यु के सम्बन्ध में—तुम्हारे कथन की बात। हो सकता है तुमने भूल से ही ऐसा कहा हो—कि वह मारा गया है। वास्तव में उसने खुदकशी कर ली थी। अपने आप गोली मार ली थी।

—'उनकी मृत्यु सम्बन्धी कथा का यह रूप भी मैंने सुना है। लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता। मेरा पाशा ऐसा आदमी नहीं था जो आत्महत्या कर ले।'

—'लेकिन यह सच है लारा कि जहां यूरा रहते थे उसी घर में उसने आत्महत्या की थी। उस समय तुम ब्लाडीवोस्टक चली गई थी। तुम्हारे जाने के तुरन्त बाद ही यह घटना घटित हुई। यूरा को लाश मिली। उसी ने उसे दफनाया।'

'क्या वास्तव में यही सच है कि उन्होंने खुद गोली मार ली—आत्महत्या कर ली ? लोगों ने जब मुझसे कहा, तो मुझे यकीन नहीं आया। और फिर उसी घर में ? मैं सारी बातें जानना चाहती हूं। क्या वे दोनों आपस में मिले थे ? क्या वे एक-दूसरे को पहचान गये ?'

—'यूरा ने मुझे बताया था कि उनकी आपस में काफी देर तक बातचीत होती रही।'

—'वास्तव में तुम सच कह रहे हो ? भगवान करे, यही सच हो! कैसा विचित्र समझौता ! मैं और भी बहुत कुछ पूछना चाहती हूं। मुझे इस बारे में कही हुई प्रत्येक बात बहुत प्रिय है। माफ करना युवग्राफ, मैं कुछ देर के लिए चुपचाप, एकान्त में रहकर सोचना चाहती हूं।'

—'अवश्य।'

—'हां, तुमने कहा था कि मैं यहां से चली न जाऊं। ठीक है, मैं नहीं जाऊंगी।जब तक जरूरी होगा, मैं तुम्हारे पास रहकर यूरा की पाण्डुलिपियों

को छांटने में तुम्हारी मदद करूंगी। मैं उनका एक-एक अक्षर अच्छी तरह से पहचान सकती हूं। उनके अक्षर का एक-एक मुड़ाव मेरी रग-रग में समाया हुआ है। मैं हृदय से सब कुछ जानती, महसूस करती हूं। इसे मैंने जीवन के रक्त से सींचा है। अच्छा मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम कि सही जानकारी किस-किस दफ्तर से हासिल की जा सकती है। एक बहुत ही दुखदायक भयंकर बात है। बात मैं बताऊंगा। यह है एक बच्चे के बारे में। लेकिन अन्तिम संस्कार से लौटने पर कहूंगी। मैं इसके लिए कितनी भटकती फिरी हूं ?'

ओह यह सब कितना दुखदायी, कितना भयंकर, कितना असह्य है।

—'अच्छी बात है, मैं दरवाजा खोल देता हूं कि लोग अंदर आ जाएं।'

—'तुम्हारी चिन्ताओं की तमाम बातों को सुन लेने के बाद भी मेरा यह निवेदन है कि तुम मेरी मदद करना। निराश मत होवो। दुर्भाग्य के समय आशा और कर्तव्य पालन ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात है। निराशा का मतलब है कर्तव्य की अवहेलना करना।'

लेकिन लारा कुछ भी नहीं सुन रही थी। न उसने खुले दरवाजे से लोगों को अंदर आते देखा। न उसे स्त्रियों का विलाप सुनाई दिया, न पुरुषों की खांसी, न व्यवस्था करने वालों की हलचल की ओर ही उसका ध्यान गया; न संवदेना प्रकट करने वाले लोगों की ओर ही उसने देखा। उसका हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था और सिर दर्द करने लगा था। आंखें बंद करके अपनी स्मृतियों और विचारों को दूर करते हुए वह जी-जान से कोशिश कर रही थी कि वह कहीं बेहोश न हो जाए। जैसे वह किसी युग व्यापी भविष्य के चिन्तन में डूब गई हो, जिसे प्रत्यक्ष रूप से वह इस जीवन में कभी नहीं देख सकेगी। ऐसा भविष्य जिसकी प्रतीक्षा करते-करते वह वृद्ध हो गई; ऐसा भविष्य जहां वह स्वयं वृद्ध होगी। कोई शेष नहीं रहा। एक सामने मरा पड़ा है। दूसरे ने आत्महत्या कर ली। जीवित बच रहा है वह, जिसे मर जाना चाहिये था। जिसकी उसने हत्या करने की कोशिश की थी। जिसने उसे अनजाने में ही पाप की जंजीरों से घेर दिया था। और वह प्रेत एशिया के अनजाने प्रदेशों में न जाने कहां भटक रहा है।...

असंबद्ध रूप से स्वतंत्रता के साथ उसने जो समय यूरा के साथ बिताया था—वह याद हो आया। अधीर होकर वह कुर्सी से उठ खड़ी हुई। उसके मन में जो कुछ गुजर रहा था, वह इतना अगम्य, अज्ञेय और दुर्बोध था कि उसे व्यक्त किया नहीं जा सकता। उसे लग रहा था कि वह विदा दे रही हो। चारों ओर की प्रस्तुत भीड़ की ओर उसने देखा।युवग्राफ आगे बढ़ा। पवित्र चिन्हों को तीन बार अंकित करके उसने उसके ठंडे ललाट और हाथों को चूमा।इसके बाद शव पर रखे हुए फूलों पर अपने समस्त अस्तित्व के साथ वह झुक गई। इतनी देर वह अपने आंसुओं को जब्त किये बैठी थी। लेकिन जब उसका हृदय फूट निकला। रोते-रोते हिचकियां बांध गयीं। आंसुओं से गाल, कपड़े और लाश भीगने लगी। उसने कुछ भी नहीं कहा। कुछ सोचा भी नहीं। कई बातें घटनाएं स्वच्छन्द बादलों की तरह अथवा यूरा के साथ किए गये मुक्त वार्तालाप की तरह उसके मस्तिष्क में घुमड़ रही थीं।

इसको उन्होंने हृदय से महसूस किया था। यह ज्ञान था जो सहज-प्रवृत्ति ये प्राप्त होता है। उस समय उसने मृत्यु के बारे में सोचा था कि वह आये और तमाम मजबूरियों का अंत हो जाय। लेकिन वह अभी तक जीवित हैं। यूरा को उसने आज ही नहीं, पहले भी कितनी ही बार खो दिया था। उनके प्रेम में किसी प्रकार की आवश्यकता की शर्त नहीं थी। वे इसलिए प्रेम करते थे कि उनका रोम-रोम यही चाहता था। ऊपर का आसमान और नीचे की धरती यही चाहती थी। उससे भी अधिक उनसे मिलने वाले अजनबी सडकें, कमरे की दीवारें उनके प्रेम को देखकर आनन्दित हो उठती थी। ऐसा था उनका प्रेम। सम्पूर्णता की यही अनुरूपता उनके जीवन का आधार थी।

30

उसका स्वर सरल हो गया। प्रचलित शब्दों की वाणी में उसने यूरा से विदा ली। उत्तेजना रहित नीरस शब्द मुंह से निकलते और नष्ट हो जाते। आंसुओं से भीगे हुए ये शब्द जैसे सिकुड़ गये और सड़क पर सूखी पत्तियों की तरह इधर-उधर उड़ने लगे।

मेरे विराट रूप, विदा। मेरे प्रिय विदा। मेरे प्राण, मेरे गौरव विदा। मेरी तीव्र प्रवाहयुक्ता पुण्यसलिला नदी विदा, तुम्हारी लहरों की किल्लोल में मैंने प्यार किया, तुम्हारे प्रवाह में मैंने प्रेमरस स्नान किया था—अलविदा ! याद है आपको—आपने मुझे उस बर्फीले दिन में विदा दी थी ? आपने कितना छल किया ? क्या मैं आपके बिना कहीं जा सकती थी ? कभी नहीं। लेकिन मुझे मालूम है, अपने कलेजे पर पत्थर रखकर मुझे मेरे भले के लिए रवाना कर दिया था।उसके बाद सभी कुछ गलत हो गया। सभी कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गया। मैं आखिर आपके बिना जाती कहां ? हे प्रभु, जी ही जानता है कि मुझ पर इसके बाद क्या गुजरी। लेकिन आपको तो नहीं मालूम। ओह, मैंने क्या कर डाला ? मुझसे कितना बड़ा अपराध हो गया। लेकिन वास्तव में निर्दोष हूं । तीन महीने मैं बीमार पड़ी रही।एक महीने से तो मुझे होश ही नहीं था। जिन्दगी जीने लायक नहीं रही। हृदय में शांति नहीं। मैं दुख और दया के लिए जीना नहीं चाहती। लेकिन सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात तो मैंने आपको बताई ही नहीं।

मेरी हिम्मत ही नहीं होती—कहने की। हर बार जब भी मैंने जीवन के इस भाग का रहस्य आपके सामने अनावृत करने का प्रयत्न किया है, मुझसे आगे कुछ कहा नहीं जाता। मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ओह यह कितना भयंकर है। मुझे अभी भी विश्वास नहीं है कि मेरे होशहवास कायम हैं। वह रोती रही। अचानक उसने सिर ऊपर उठाकर देखा कि कमरे में काफी लोग चले आये हैं। वह तिपाई से उठकर, शव को छोड़कर, दूर हो गई। हथेली से आंसू पोंछ लिए।

छः आदमी शव के पास आये। उन्होंने लाश उठाई; और बाहर चले गये। लारा काफी अर्से तक केमरगर स्ट्रीट में रही। यूरा के कागजातों की छानबीन उसकी मदद से शुरू हुई और बिना उसके समाप्त हो गई। बातचीत के दौरान में उसने युवग्राफ को एक महत्वपूर्ण बात बता दी।

एक दिन वह बाहर गई और वापस लौटकर नहीं आई। शायद उसे सड़क पर गिरफ्तार कर लिया गया हो। उन दिनों यह कोई अनहोनी बात नहीं थी। अथवा कहीं गायब हो गई हो। हो सकता है कि उसकी मृत्यु हो गई हो।